IIMA

विद्याविनियोगाद्विकास:

चौदहवाँ अंक फरवरी 2025

प्रतिबिंब

विद्याविनियोगाद्विकासः

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

वस्त्रापुर, अहमदाबाद - 380 015

दूरभाषः 91-79-7152 4691 फैक्स : 91-079-26300352, 26308345

ईमेल : agm-hindi@iima.ac.in वेबसाइट : www.iima.ac.in

© **प्रतिबिंब – चौदहवाँ अंक, फरवरी 2025**

संपादक

डॉ. मुकेश शर्मा

सहायक महाप्रबंधक-हिंदी

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

सहयोग

बिन्दु डोडिया

सहायक प्रबंधक - हिंदी

एवं

प्रकाशन विभाग

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

"प्रतिबिंब" में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक एवं संस्थान का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। - **संपादक**

संदेश

हमारे लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि 14 सितंबर 2024 को हमारी राजभाषा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में 75 वर्ष पूरे हुए हैं। इसी के उपलक्ष्य में हमारे देश में राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती मनाई गई है और राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए कई सफल प्रयास किए गए हैं। हमारी हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" के चौदहवें अंक का प्रकाशन भी इसी दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हमेशा से ही प्रतिबद्ध रहा है। हमारे संस्थान की स्थापना के समय से ही हमने राजभाषा हिंदी के महत्व को स्वीकार किया है और राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने के दिशा में अथक प्रयास किए हैं। भारत सरकार की राजभाषा नीति की अनुपालना हेतु हमारा संस्थान राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना के साथ कर रहा है और संस्थान के सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा को भी निखार रहा है।

मुझे बहुत खुशी हो रही है कि हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" के चौदहवें अंक का प्रकाशन हो रहा है। इस पत्रिका के इस अंक में भी इसके पिछले अंकों की तरह ही विभिन्न विविधतापूर्ण विषयों पर रोचक एवं ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान की गई है। मुझे विश्वास है कि इस गृह-पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका अदा करेगा।

हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" अपने चौदहवें पायदान पर पहुँच चुकी है जो इस पत्रिका की सफलता का सूचक है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" के प्रकाशन के माध्यम से राजभाषा हिंदी के संवर्धन एवं विकास में सहायता मिलेगी। अंत में, मैं इसके प्रकाशन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ और इस चौदहवें अंक की सफलता की कामना भी करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

प्रोफेसर भारत भास्कर
निदेशक

संदेश

हमारे संस्थान की स्थापना के समय से ही हमने राजभाषा हिंदी को अंगीकार किया है। हमारा उद्देश्य समाज में प्रगतिशील एवं प्रभावी पहचान बनाए रखने का रहा है, जिससे प्रबंध शिक्षा और उसके अंतर्निहित विषयों के अनुप्रयुक्त एवं संकल्पनात्मक अनुसंधानों को बल मिल सके और अपने अनुसंधानों के माध्यम से सृजित ज्ञान के प्रकाशन द्वारा समाज कल्याण में योगदान किया जा सके। हमारे प्रतीक चिह्न (लोगो) 'विद्या विनियोगाद्विकासः' ने हमारे संस्थान की स्थापना के समय से ही हमारा मार्गदर्शन किया है, जो हमें प्रबंधन शिक्षा में उत्कृष्टता तथा नेतृत्व के लिए प्रतिष्ठा विकसित करने में सक्षम बनाता है। इसी के परिणामस्वरूप आज हम प्रबंध शिक्षा के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर के शीर्षस्थ संस्थानों में शामिल हैं।

हमारे देश के बाहर हर भारतीय की पहचान हिंदी भाषी के रूप में ही की जाती है। सब यही मानते हैं कि अगर आप भारत से हैं तो आपको हिंदी अवश्य ही आती होगी और ज्यादातर यह सही भी है। इसका अर्थ यही है कि विदेश में हिंदी ही हमारे देश की पहचान है अर्थात् हिंदी भाषा ही विदेश में हमारे देश का प्रतिनिधित्व करती है। जिस प्रकार से विदेश में हिंदी का क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है वह हम सब भारतीयों के लिए अत्यंत गौरव की बात है।

प्रस्तुत अंक में संस्थान के सदस्यों की स्वरचित रचनाओं को ही विशेष रूप से स्थान दिया गया है। इस अंक में संस्थान की गतिविधियों को भी समाहित किया गया जो इसके प्रकाशन के उद्देश्य की सार्थकता को प्रकट करती हैं। इसके अनवरत प्रकाशन के लिए मैं संस्थान के सभी समुदाय सदस्यों को बधाई देता हूँ तथा इस पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

मुझे पूरा विश्वास है कि "प्रतिबिंब" का यह अंक भी पहले के सभी अंकों की तरह ही ज्यादा से ज्यादा पाठकों तक अपनी पहुँच अवश्य बढ़ाएगा।

शुभकामनाओं सहित।

प्रोफेसर अभिमान दास
प्रभारी प्रोफेसर (प्रशासन)

संदेश

हमारे संस्थान के अधिकांश सदस्य हिंदी समझते और बोलते हैं और साथ ही संस्थान के 80 प्रतिशत से अधिक कर्मचारियों/अधिकारियों ने हिंदी भाषा का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है। हमारे संस्थान ने यह योग्यता 10 जनवरी 2002 को ही प्राप्त कर ली थी। इस योग्यता के परिणामस्वरूप हमारे संस्थान को राजभाषा नियम 10 (4) के तहत 08 मई 2006 से राजपत्र में अधिसूचित किया गया है। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की दिशा में हमारा संस्थान सदैव तत्पर रहा है और आशा करता हूँ कि आगे भी पूरे उत्साह के साथ संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मार्गदर्शन में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए इसी तरह से कार्यरत रहेगा।

वर्ष 2012 से हमारे संस्थान में हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" का प्रकाशन शुरू हुआ है और अभी हम "प्रतिबिंब" का चौदहवाँ अंक प्रकाशित कर रहे हैं। इसके प्रकाशन से जुड़े संस्थान के उन सभी सदस्यों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयासों से हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" का प्रकाशन अनवरत रूप से जारी है और आशा करता हूँ कि आगे भी इसी प्रकार से जारी रहेगा।

इस पत्रिका का हर अंक सफलता की ऊंचाइयों को छूता आया है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसका यह अंक भी अन्य पिछले अंकों की तरह ही सफल रहेगा तथा हमें अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी को अपनाने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

मेरी कामना है कि हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में इसी प्रकार अग्रणी भूमिका निभाती रहेगी और इसके पाठकों की संख्या में लगातार वृद्धि होती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित।

जगदीश जोशी

कर्नल (डॉ.) जगदीश सी. जोशी
(सेवानिवृत्त)
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

संपादकीय

हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" का चौदहवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस पत्रिका के नामकरण के समय से ही हमारी यह सोच रही है कि यह गृह-पत्रिका हमारे संस्थान के सदस्यों के मनोभावों, उद्गारों एवं अभिव्यक्तियों को एक दर्पण की तरह से आप सभी के समक्ष प्रतिबिंबित करती रहेगी। आप सभी से प्राप्त प्रतिक्रियाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे इस प्रयास में हम काफी हद तक सफल भी रहे हैं। इस पत्रिका ने हमारे संस्थान के सदस्यों की रचनात्मकता को तो निखारा ही है साथ में संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन को भी एक नई ऊर्जा प्रदान की है। हमारी हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" राजभाषा कार्यान्वयन में एक सशक्त भूमिका निभाते हुए हमारे संस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को सहेज रही है।

भाषा के विषय में महात्मा गाँधी जी के विचार इस प्रकार से हैं - "माता का दूध पीने से लेकर ही संस्कार और मधुर शब्दों द्वारा जो शिक्षा मिलती है, उसके और पाठशाला की शिक्षा के बीच संगत होना चाहिए। परकीय भाषा से वह श्रृंखला टूट जाती है और उस शिक्षा से पुष्ट होकर हम मातृद्रोह करने लग जाते हैं"। गाँधी जी के इन विचारों का दृश्यावलोकन आज हम हमारे देश के उन नामी विश्वविद्यालयों में देख रहे हैं जो हमारे देश के पैसे से इन विश्वविद्यालयों में प्राप्त सभी सुविधाओं का लाभ लेकर भी देश के टुकड़े होने का नारा लगा रहे हैं और साथ में इस देशद्रोह को विचारों की आजादी का नाम दे रहे हैं। यह सब उनकी शिक्षा का माध्यम परकीय भाषा में होने का ही परिणाम है। क्योंकि इन्होंने अपनी शिक्षा स्वयं की भाषा में नहीं प्राप्त की है बल्कि दूसरे देश की भाषा में प्राप्त की है जिसके कारण ये मातृद्रोह पर उतर आए हैं। अगर इनकी शिक्षा देश की भाषा अर्थात् मातृभाषा में हुई होती तो इनकी सोच में ऐसे विचार नहीं आ सकते थे।

हम सब सबसे पहले एक भारतीय हैं, उसके बाद ही हम गुजराती, पंजाबी, मराठी, बंगाली, राजस्थानी, तमिल आदि हैं। हमें अपनी प्रांतीय भाषाओं से अवश्य ही प्यार होना चाहिए और अवश्य ही उन्हें आगे भी बढ़ाना चाहिए। लेकिन जब राष्ट्रीयता की बात आती है तो हमें अन्य विकसित देशों की तरह ही सिर्फ हमारी अपनी हिंदी भाषा को ही गौरव एवं सम्मान के साथ आगे बढ़ाना चाहिए। क्योंकि यही वह भाषा है जिसने हमें आजाद देश की खुली हवा में साँस लेने का अवसर प्रदान किया है। मेरा तो यही कहना है कि हम ज्यादा से ज्यादा राजभाषा हिंदी भाषा को अपनाएँ और राष्ट्रहित में हमारी राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने में सहयोग प्रदान करें। यह आपके संस्कारों को आगे बढ़ाने वाली भाषा है, आपकी अपनी भाषा है और आपके देश की भाषा है।

इस पत्रिका के पिछले अंकों के लिए प्राप्त अमूल्य सुझावों के अनुरूप हमने "प्रतिबिंब" के इस चौदहवें अंक को प्रकाशित करने का एक सार्थक प्रयास किया है। हमें आशा है कि आपको यह अंक भी अवश्य पसंद आएगा। कृपया हमें अपनी प्रतिक्रियाएँ / सुझाव भेजना ना भूलें, हमें आपकी प्रतिक्रियाओं / सुझावों की प्रतिक्षा रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

आपका अपना,

डॉ. मुकेश शर्मा
सहायक महाप्रबंधक - हिंदी

अनुक्रमणिका

- राजभाषा हिंदी की बोलियाँ — डॉ. मुकेश शर्मा 06
  चुनाव अपना अपना — जाह्नवी पटेल 10
  आशा — आकांक्षा सिंह 10
- तप-सेवा-सुमिरन — प्रोफेसर विशाल गुप्ता 11
  जीवन की राह — उमेश मेहता 12
  एक देश की धड़कन — निशांत जोशी 12
- संस्थान की राजभाषा गतिविधियाँ 13
- दूरदर्शी डॉ. विक्रम साराभाई: एक प्रेरणा स्रोत — श्रीमती मीना टेकवानी , ... 24
  भाई की विदाई — प्रह्लाद पटनी 28
- चौथाई घर — श्रीमती कुमुद वर्मा 29
  लाइब्रेरी — विजय कुमार 29
- करियर — प्रोफेसर प्रशांत दास 'साहिल' 30
- प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा का महत्त्व — डॉ. कृतिका टेकवानी 31
  मैं भारत कहलाता — चिंतन पटेल 32
- ए.आई. (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) और अनुवाद कार्य — बिन्दु डोडिया जोशी 33
  खूबसूरत — प्रतीक पटेल 39
- आरिगातो-जापान (यात्रा संस्मरण) — श्रीमती प्रिया यश प्रसाद 40
- कार्यस्थल पर महिलाओं में तनाव के कारण और निवारण — मृदुल जोशी 43
  उम्मीद का संदेश — श्रीमती कुमुद वर्मा 46
  बदलाव — निरज दवे 46
- जीना यहाँ, मरना यहाँ — श्री दामजीभाई सोलंकी 47
- वह राष्ट्र सशक्त है, जहाँ महिलाएँ सुरक्षित हैं — आशीष जी. देसाई 48
  आज के इस दौर में — निशांत जोशी 49
- यादें — हरीश वाघेला 50
- वायरल — श्रीमती प्रिया यश प्रसाद 53
- संस्थान में हरित पहल 55
- धर्म एवं राजनीति में सम्यक दर्शन कितना आवश्यक — रवि डी. पारेख 56
- भारत की वर्तमान अर्थव्यवस्था — प्रियंकेश दीक्षित 58
  वह दास्तानें फिर कभी — प्रोफेसर प्रशांत दास 'साहिल' 59
- अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस — प्रतीक पटेल 60
- माँ का अटूट प्रेम — प्रतिमा भारती 61
  जाने क्यों? — अभिषेक वर्मा 62
- भारत की विदेश नीति — शुभम सिवाच 63
  अहम् — प्रशान्त पुरोहित 64
- नेम प्लेट — श्रीमती सविता शर्मा 65
  मेहनत अज़ीज़तरीन ज़िंदगी बेहतरीन — अभिषेक कुमार मिश्र 66
- किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त हैं — अक्षिता वैंश 67
  अर्जी अभी बाकी है — प्रगति काछी 68
- महाकुंभ 2025 — शिल्पा नागरे 69

राजभाषा हिंदी की बोलियाँ

डॉ. मुकेश शर्मा
सहायक महाप्रबंधक - हिंदी

हमारा देश अनेक विविधताओं वाला देश है और इन अनेकों विविधताओं में से एक हमारे देश की भाषाएँ हैं जिन्होंने हमारी सांस्कृतिक धरोहर को संजोए रखा है। भारत में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं के संदर्भ में एक बहुत ही मशहूर कहावत है – "कोस कोस पर बदले पानी और चार कोस पर वाणी" अर्थात् हमारे देश में हर एक कोस की दूरी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और हर चार कोस पर बोली यानि वाणी बदल जाती है। भाषा और बोली में मुख्य अंतर संप्रेषणगत भिन्नता और समानता को लेकर होता है। एक भाषा और दूसरी भाषा के बीच संरचनागत अंतर इतना अधिक होता है कि उनके बोलने वाले एक-दूसरे को प्रायः नहीं समझ पाते किंतु एक भाषा के अंतर्गत जो संरचनागत भिन्नताएँ होती हैं, वे इतनी अधिक नहीं होती कि परस्पर संप्रेषण बिलकुल ही न हो सके। इस प्रकार शब्दावली एवं संरचनागत समानताओं के आधार पर अनेक बोलियों का एक संकुल (क्लस्टर) भाषा कहलाता है। प्रत्येक भाषा में उसकी किसी एक बोली से उसका एक मानक रूप विकसित हो जाता है जो साहित्य, प्रशासन, शिक्षा आदि में आम व्यवहार के रूप में अपना लिया जाता है।

हमारी राजभाषा हिंदी भी शब्दावली एवं संरचनागत समानताओं के आधार पर भारत की अन्य भाषओं से भिन्न एक स्वतंत्र भाषा है, किंतु यह हिंदी प्रदेशों की विविध बोलियों का एक संकुल भी है। पूरे भारत में हिंदी भाषा का क्षेत्र इतना व्यापक है कि इसकी पाँच उपभाषाएँ – पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, पहाड़ी, बिहारी और राजस्थानी हैं। इन उपभाषाओं की अनेकों बोलियाँ हैं जो हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने में सहायक हैं। हिंदी भाषा की इन बोलियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :-

1. खड़ीबोली

यह बोली दिल्ली के उत्तर-पूर्व से लेकर हिमालय के तराई वाले क्षेत्रों तक रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, साहरनपुर, देहरादून, अंबाला तथा जगाधरी क्षेत्र में बोली जाती है। ब्रज भाषा की तुलना में यह बोली खड़ी-खड़ी लगती है शायद इसी वजह से लल्लूजी लाल मिश्र ने इस बोली का नामकरण खड़ी बोली के नाम से किया था। हिंदी भाषा का मानक रूप प्रमुख रूप से खड़ी बोली से ही विकसित हुआ है इसलिए मानक हिंदी के आधुनिक साहित्य की पृष्ठभूमि में इस बोली ने ऐतिहासिक कार्य किया है।

2. ब्रजभाषा

यह बोली राजस्थान में भरतपुर, करौली, धौलपुर, मध्य प्रदेश में ग्वालियर तथा उत्तरप्रदेश में मथुरा, आगरा, अलीगढ़, बुलंदशहर, एटा, मैनपुरी, बदायूँ तथा बरेली क्षेत्र में बोली जाती है। मानक हिंदी को छोड़कर हिंदी में सबसे अधिक समृद्ध साहित्य ब्रज में ही उपलब्ध है। 15वीं से 18वीं शताब्दी तक न केवल ब्रज क्षेत्र में बल्कि पूरे उत्तर भारत में ब्रजभाषा साहित्य की रचना की गई। सूरदास, नंददास, कुंभनदास, मीरा, रहीम, रसखान, घनानंद, सेनापति, केशव, बिहारी, भूषण, भारतेंदु आदि ने उत्कृष्ट कोटि का साहित्य रचा है जिस पर हिंदी साहित्य आधारित है।

3. बाँगरू

इस बोली को हरियाणी या हरियाणवी भी कहते हैं। बाँगर (शुष्क, उच्च भूमि) भूभाग में बोली जाने के कारण इस बोली का नाम बाँगरू पड़ा। यह बोली दिल्ली, रोहतक, सोनीपत, करनाल, हिसार, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, भिवानी, जींद, कैथल सहित पूरे हरियाणा क्षेत्र में बोली जाती है। यह बोली खड़ी बोली का ही एक रूप है, जिसमें पंजाबी और राजस्थानी का मिश्रण है। इस बोली में लोक साहित्य की रचना बहुत हुई है।

4. बुंदेली

यह बोली बुंदेल भूभाग में बोली जाने के कारण बुंदेली या

बुंदेलखंडी के नाम से जानी जाती है। यह बोली शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है। इस बोली का क्षेत्र उत्तरप्रदेश के जालौन, हमीरपुर, झाँसी, बाँदा जिलों में तथा मध्यप्रदेश के टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, दमोह, सागर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, भिंड, मुरैना, दतिया ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, विदिशा तथा रायसेना जिलों में है। उच्चारण की दृष्टि से ब्रजभाषा और बुंदेली में बहुत कम अंतर है। इसमें शब्द के बीच में 'र' का लोप पाया जाता है, जैसे- साए (सारे), तुमाओ (तुम्हारा), गाई (गारी), भाई (भारी)। इस बोली में भी बहुत कुछ साहित्य लिखा गया है।

5. कन्नौजी

इस बोली के कन्नौज क्षेत्र में बोली जाने के कारण यह कन्नौजी के नाम से जानी जाती है। यह बोली उत्तरप्रदेश के कन्नौज, औरैया, कानपुर, मैनपुरी, इटावा, शाहजहाँपुर, हरदोई, पीलीभीत, फर्रुखाबाद जिलों में बोली जाती है अतः इस बोली का क्षेत्र अत्यंत सीमित है। पश्चिम में यह बोली ब्रज क्षेत्र की सीमाओं को स्पर्श करती है इसलिए ब्रज और कन्नौजी में भेद करना कठिन हो जाता है। वर्तमान में कन्नौज उत्तरप्रदेश का एक जिला है जिसका उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रंथों रामायण आदि में भी मिलता है। इस बोली में अलग से कोई साहित्य नहीं रचा गया है लेकिन इस क्षेत्र के विशिष्ट रचनाकारों में चिंतामणि, भूषण, मतिराम, नीलकंठ आदि प्रमुख हैं जिनकी ब्रजभाषा में रचित रचनाएँ अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

6. अवधी

इस बोली के अवध क्षेत्र में बोली जाने के कारण यह अवधी के नाम से जानी जाती है। यह बोली उत्तरप्रदेश के लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, बाराबंकी, गोंडा, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, फ़ैज़ाबाद, फ़तेहपुर, प्रयाग, मिर्जापुर, जौनपुर, लखीमपुर, खीरी जिलों में बोली जाती है। बिहार के मुसलमान भी अवधी बोलते हैं। जगनीक का आल्हा खंड तथा जायसी, कुतुबन, मंझन, तुलसीदास, अग्रदास, जानकीशरण, माधवानंद, रमई काका, बलभद्र प्रसाद दीक्षित, शिवसिंह सरोज आदि की साहित्यिक रचनाओं ने अवधी को समृद्ध किया है। यह बोली अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई पूर्वी उपभाषा वर्ग की सर्वाधिक प्रसिद्ध बोली है। पालि-प्राकृत काल में अयोध्या क्षेत्र कोसल नाम से विख्यात था। यहीं की बोली 'कोसली' मध्यकाल में अवधी के विकास का आधार बनी।

7. बघेली

यह बोली बघेलखंड क्षेत्र में बोली जाने के कारण बघेली के नाम से जानी जाती है। यह अवधी की ही एक उपबोली के रूप में हैं लेकिन लोकमत उसे स्वतंत्र बोली के रूप में मानता है। यह भी अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई है। यह बोली उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद एवं मिर्जापुर जिलों में मध्य प्रदेश के रीवा, शहडोल, सतना, सीधी जिलों में, जबलपुर और बाँदा जिलों के कुछ हिस्सों में तथा छत्तीसगढ़ के बिलासपुर एवं कोरिया जनपदों में बोली जाती है। इस बोली में लोक साहित्य मिलता है। इस क्षेत्र के लेखकों ने ब्रज अथवा मानक हिंदी में साहित्य की रचना की है। इसे "बघेलखंडी", "रिमही" और "रिवई" भी कहा जाता है।

8. छत्तीसगढ़ी

छत्तीसगढ़ जनपद में बोली जाने के कारण इस बोली का नाम छत्तीसगढ़ी पड़ा है। इसका विकास भी अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। यह बोली छत्तीसगढ़ प्रदेश के सरगुजा, रायगढ़, रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, बस्तर, राजनांद गाँव जिलों में बोली जाती है। छत्तीसगढ़ी बोली में भी लोक साहित्य ही उपलब्ध है। एक दूसरे के दिल को छू लेने वाली यह छत्तीसगढ़ी एक तरह से छत्तीसगढ़ राज्य की संपर्क भाषा है। वस्तुतः छत्तीसगढ़ राज्य के नामकरण के पीछे उसकी भाषिक विशेषता भी है।

9. मैथिली

यह बोली भारत के बिहार और झारखंड राज्यों और नेपाल के तराई क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा है। यह बिहार प्रदेश में गंगा के ऊपरी क्षेत्र में बोली जाती है जिसे मिथिला के नाम से जाना जाता है। इसका विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है। यह बिहार के दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, मुंगेर तथा भागलपुर जिलों में बोली जाती है। मैथिल कोकिला के नाम से विख्यात विद्यापति और गोविंददास इसके प्राचीन एवं प्रसिद्ध कवि रहे हैं। आधुनिक युग में इस बोली में बहुत ही कम साहित्य लिखा गया है लेकिन इसका लोक साहित्य काफी मात्रा में उपलब्ध है। मैथिली को हिंदी की उपभाषा बिहारी की बोली माना जाता है।

10. भोजपुरी

मुख्य रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिम बिहार तथा उत्तरी झारखण्ड के क्षेत्र में, और नेपाल के तराई वाले कुछ हिस्सों में बोली जाती है। भोजपुरी हिंदी की बिहारी उपभाषा की महत्वपूर्ण बोली है। राजा भोज के द्वारा बसाए गए भोजपुर नगर के नाम पर भोजपुरी का नामकरण हुआ। यह बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, बस्ती, आज़मगढ़, शाहाबाद, चम्पारन, सारन तथा छोटा नागपुर में बोली जाती है। इसमें लिखित साहित्य का अभाव है लेकिन लोक साहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। भोजपुरी जानने-समझने वालों का विस्तार विश्व के सभी महाद्वीपों पर है जिसका कारण ब्रिटिश राज के दौरान उत्तर भारत से अंग्रेज बहुत से मजदूरों को अपने साथ ले गए थे। जिनके वंशज अब जहाँ उनके पूर्वज गये थे वहीं बस गये हैं। इनमें गुयाना, सूरिनाम, ट्रिनिडाड, फीजी और टोबैगो आदि देश प्रमुख हैं।

11. मगही

मगही, मागधी का अपभ्रंश है अर्थात् मगही का अर्थ है मगध की बोली। मागधी उस प्राकृत भाषा का नाम है जो प्राचीन काल में मगध (दक्षिण बिहार) प्रदेश में प्रचलित थी। इस भाषा के उल्लेख भगवान महावीर और भगवान बुद्ध के काल से मिलते हैं। जैन आगमों के अनुसार तीर्थंकर महावीर जी का उपदेश इसी भाषा अथवा उसी के रूपांतर अर्धमागधी प्राकृत में होता था। पालि त्रिपिटक में भी भगवान बुद्ध के उपदेशों की भाषा को मागधी कहा गया है। वर्तमान में यह बोली पटना, गया, हजारीबाग जिलों में बोली जाती है। इस बोली में भी साहित्य का अभाव है।

12. पश्चिमी पहाड़ी

राजभाषा हिंदी की उपभाषा पहाड़ी की पश्चिमी बोलियों के समूह को पश्चिमी पहाड़ी बोली के नाम से जाना जाता है। पहाड़ी बोली भारतीय-आर्य परिवार से जुड़ी भाषाओं का एक समूह है, जो मुख्यत: हिमालय के निचले क्षेत्रों में बोली जाती हैं। यह बोली भद्रवाह, चंबा, मंडी, शिमला, चकराता, लाहुल-स्पिति, कुल्लू-मनाली में बोली जाती है। इसकी प्रमुख उपबोलियाँ जौनसारी, सिरमौरी, बघाटी, चमेआली, क्योंठली हैं। इनके अतिरिक्त सतलुज वर्ग की बोलियाँ, मंडी वर्ग की बोलियाँ, कुल्लू वर्ग की बोलियाँ तथा भद्रवाह वर्ग की बोलियाँ भी इनमें सम्मिलित हैं। इनकी लिपि पहले टाकरी थी लेकिन अब देवनागरी है। इनमें लोक साहित्य बहुतायत में उपलब्ध है।

13. गढ़वाली

भारत के गढ़वाल क्षेत्र को केदारखंड के नाम से जाना जाता है और इस केदारखंड क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली को ही गढ़वाली के नाम से जाना जाता है। यह उत्तरांचल के गढ़वाल, पौड़ी, टिहरी, चमोली, देहरादून, रुद्रप्रयाग तथा उत्तरकाशी जिलों में विशेष रूप से बोली जाती है। इसकी लिपि देवनागरी ही है। इस बोली में भी साहित्य का अभाव है लेकिन लोक साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है जिसमें रमोला उल्लेखनीय है।

14. कुमांऊँनी

उत्तरांचल प्रदेश के कुमायूँ क्षेत्र (कूर्मांचल) के नाम पर इस बोली का नाम पड़ा है। यह उत्तरांचल प्रदेश के अल्मोड़ा, नैनीताल, पिथौरागढ़ जिलों में बोली जाती है। कुमांऊँनी बोली एक अर्वचीन बोली है। लिपिबद्ध न हो सकने के कारण आज भी जस की तस आपसी वार्तालाप के माध्यम तक ही सीमित है। मध्य पीढ़ी के लोग कुमांऊँनी और हिंदी दोनों भाषाओं में संवाद करते हैं। कुमांऊँनी, देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। लिपिबद्ध न हो सकने के कारण कुमांऊँनी भाषा का कोई साहित्य उपलब्ध नहीं है लेकिन इसमें भरपूर लोक साहित्य उपलब्ध है।

15. मारवाड़ी

राजभाषा हिंदी की उपभाषा राजस्थानी की मारवाड़ी बोली का उल्लेख कुवलयमाला (778 ई.) में मरुभाषा के नाम से हुआ है। इस बोली क्षेत्र के अपने ऐसे ऐतिहासिक एवं भौगोलिक अनुभव रहे हैं कि इसने पिछले एक हजार वर्ष से भाषागत संरचना एवं साहित्यिक सरंचना दोनों ही दृष्टियों से अपनी पहचान स्थापित कर रखी है। इसका परिनिष्ठित रूप जोधपुर के आसपास का है। इस बोली का क्षेत्र राजस्थानी की अन्य बोलियों के क्षेत्रों से बड़ा है। मारवाड़ी की अनेक उपबोलियाँ भी हैं जैसे – थली, बटकी माहेश्वरी, ओसवाली, बीकानेरी, नागौरी आदि। मारवाड़ी में वीर, श्रृंगार, भक्ति, नीति के श्रेष्ठ साहित्य का भंडार उपलब्ध है। इसकी डिंगल शैली ने वीर रस एवं ध्वन्यात्मक प्रस्तुतियों की दृष्टि से अपना प्रतिमान स्थापित किया है। मारवाड़ी की लिपि महाजनी रही

है लेकिन अब यह देवनागरी लिपि में ही लिखी जा रही है।

16. मेवाड़ी

मेवाड़ क्षेत्र की बोली को मेवाड़ी करते हैं। यह बोली दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर, भीलवाड़ा, डूँगरपुर और चित्तौड़ जिलों में बोली जाती है। अनेक राजकीय व गैर-राजकीय शोध संस्थान यहाँ पर देखे जा सकते हैं। साथ ही साथ मेवाड़ी में अनेक कवि व लेखक और पर्याप्त मात्रा में साहित्य की उपलब्धता देखी जा सकती है। मेवाड़ी में लोक साहित्य का विपुल भंडार है। महाराणा कुंभा द्वारा रचित कुछ नाटक इसी बोली में हैं।

17. ढूँढ़ाड़ी

ढूँढ़ (टीला) शब्द से ढूँढ़ाड़ी शब्द बना है। जयपुर के पास ढूँढ़ भी हैं। ढूँढ़ाड़ी को जयपुरी भी कहते हैं। यह बोली पूर्वोत्तर राजस्थान के जयपुर, अजमेर, टोंक, दौसा जिलों में बोली जाती है। इसकी उपबोलियों में हाड़ौती, तोरावाटी, काठोड़ी, चौरासी, किशनगढ़ी, राजावाटी, अजमेरी, शाहपुरी, सिपाड़ी आदि हैं। ढूँढ़ाड़ी में दादू तथा अन्य संतों का काफी साहित्य मिलता है। इस बोली की मुख्य पहचान इसकी छै, छूँ, छा, छो, छी सहायक क्रियाएँ हैं। ढूँढ़ाड़ी बोली मध्यप्रदेश के कुछ जिलों में और महाराष्ट्र के छत्रपती संभाजीनगर, जालना, जलगांव की ढाणियों में भी मीणा जाति द्वारा बोली जाती है।

18. मेवाती

मेवाती हरियाणा एवं राजस्थान के मेवात क्षेत्र में बोली जाने वाली एक सामान्य साधारण बोली है। यह ब्रजभाषा की एक उपभाषा/बोली या उपबोली है, और इसकी सबसे सहायक बोली है। यह बोली पश्चिमी हिंदी एवं राजस्थानी के बीच में सेतु के रूप में कार्य कर रही है। राठी, महेड़ा, और कठेर इसकी उपबोलियाँ हैं अहीरवाटी बोली को भी मेवाती बोली ही माना जाता है। मेवाती बोली अलवर, भरतपुर के उत्तर-दक्षिण एवं गुड़गाँव के दक्षिण में बोली जाती है। मेवाती बोली में कर्मकारक में लू विभक्ति एवं भूतकाल में हा, हो, ही सहायक क्रिया का प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है।

19. हाड़ौती

भारत के इतिहास में हाड़ा राजपूतों के वर्चस्व का कारण कोटा-बूँदी-झालावाड़ जिलों के क्षेत्र को हाड़ौती कहते हैं। हाड़ौती और ढूँढ़ाड़ी में काफी समानता है लेकिन हाड़ौती पर मेवाड़ी और मालवी का भी प्रभाव है। वर्तमान में हाड़ौती कोटा, बूँदी (इंद्रगढ़ एवं नैनवा तहसीलों को छोड़कर) बारां (किशनगंज एवं शाहबाज तहसीलों के पूर्वी भाग के अलावा) तथा झालावाड़ के उत्तरी भाग की प्रमुख बोली है। कवि सूर्यमल्ल मिश्रण की रचनाएँ इसी बोली में हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि ढूँढ़ाड़ी और हाड़ौती एक ही बोली हैं लेकिन दोनों में भिन्नता होने के कारण हाड़ौती को अलग बोली माना जाना चाहिए।

20. वागड़ी

यह बोली राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र में डूँगरपुर और बाँसवाड़ा में बोली जाती है। इन दो जिलों के क्षेत्र को वागड़ कहते हैं इसलिए ही इस क्षेत्र की बोली वागड़ी कहलाई। यह भारत में भील जनजाति द्वारा बोली जाने वाली बोली है। यह बोली गुजराती के भी बहुत समीप है। वागड़ी में च और छ का उच्चारण स हो जाता है। स का उच्चारण ह ही किया जाता है।

21. मालवी

मालवी बोली भारत के मालवा क्षेत्र की बोली है जो कि राजस्थानी की उपबोली है। मालवा भारत भूमि के हृदय-स्थल के रूप में विख्यात है। मालवी बोली पर राजस्थानी भाषा का सर्वाधिक प्रभाव है। मध्यप्रदेश के इंदौर, भोपाल, भोजवाड़ा, रतलाम, झाबुआ, सीतामऊ और मेवाड़ के कुछ भाग में भी मालवी बोली जाती है। मालवी बोली की उपबोलियाँ – निमाड़ी, उमठवाड़ी, रतलामी, सौंधवाड़ी आदि हैं। साहित्यिक दृष्टि से इसका विशेष महत्व नहीं है।

हिंदी भाषा में ना केवल उपरोक्त बोलियाँ ही हैं बल्कि अनेकों उपबोलियाँ भी हैं जो हिंदी भाषा को संचित एवं संवर्धित करती हैं। इन बोलियों के बल पर ही राजभाषा हिंदी अत्यधिक समृद्ध एवं प्रभावशाली भाषा बनी है। हमारे देश के ही कुछ स्वार्थी लोगों के द्वारा हिंदी से इन बोलियों को अलग करके हिंदी को कमजोर करने की कोशिश की जा रही है। हम सभी जानते हैं कि मैथिली, डोगरी जैसी बोलियों को संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल कराने से उन्हे क्या लाभ मिला। संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित करा लेने के बावजूद उनका विकास अभी तक नहीं हो पाया है। इसी तरह की कुत्सित कोशिश राजस्थानी और भोजपुरी के

लिए भी निरंतर जारी है। इससे इन भाषाओं का तो विकास होगा या नहीं, हम कह नहीं सकते लेकिन ये अपना विकास अवश्य कर लेंगे। इनके लिए हिंदी का विकास कोई मायने रखता है, इन्हें तो बस अपना विकास करना है। जिस तरह से हिंदी का वर्चस्व पूरे विश्व में दिन दूना रात चौगुना फैल रहा है उसे ये अपने निजी स्वार्थ के कारण कमजोर कर रहे हैं। वे यह नहीं जानते हैं कि बोलियों को हिंदी से अलग करके वे अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। उन्हें राष्ट्रहित में एकता की शक्ति को समझने की जरूरत है, जब तक सभी बोलियाँ हिंदी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रहीं हैं तभी तक हिंदी आगे बढ़ रही है। अगर इस तरह से ये सभी बोलियाँ धीरे-धीरे राजभाषा हिंदी से अलग होती जाएँगी तो एक दिन हिंदी पूरी तरह से बिखर जाएगी। इससे ना तो इन बोलियों का ही विकास होगा और ना ही हिंदी अपने विकास पथ पर अग्रसर हो पाएगी। हम सब हिंदी प्रेमियों को ऐसे लोगों से सतर्क रहने की जरूरत है जो अपनी बोलियों को आगे बढ़ाने के नाम पर राजभाषा हिंदी को कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं और हिंदी के विकास में बाधक बन रहे हैं।

चुनाव अपना अपना

जाह्नवी पटेल
अनुसंधान सहायक

कोई चोट से मुरझा जाता है,
तो कोई खिल जाता है।

कोई धूप से तप जाता है,
तो कोई निखर जाता है।

कोई हार से रुक जाता है,
तो कोई सीख जाता है।

कोई युद्ध से डर जाता है,
तो कोई संघर्ष कर जाता है।

चुनाव अपना अपना है!!!

आशा

आकांक्षा सिंह
अकादमिक सहयोगी

अँधेरे में छुपी एक ज्योति,
सागर में डूबा एक मोती,
किसी के अधरों की एक मुस्कान,
बन जाती है आस जीवन की।

कठिन डगर है जीवन की,
हर कदम पे है परीक्षा,
जो हमेशा आपके साथ दे,
वो है आशा और शिक्षा।

सपनों की नींव पर खड़ी,
खूब जतन और मेहनत से आगे बढ़ी,
जीवन की नाव जब डगमगाए,
आशा उसे किनारे तक पहुँचाए।

खिलते फूलों में झलकती है,
बंजर ज़मीन पर उगती है,
हर पतझड़ के बाद बसंत के आने का एहसास,
आशा देती है मन को विश्वास।

बिखरे हुए जीवन को जो फिर से सजाए,
आशा ही है जो हार के बाद भी
जीत की नई राह बनाए।
दुःखों के बादल चाहे लाख हों लेकिन,
आशा की रौशनी से छटेंगे जरूर,
मरू भूमि में पुष्प के सामान,
जीवन में सफलता मिलेगी भरपूर।

तप-सेवा-सुमिरन

प्रोफेसर विशाल गुप्ता

भारत ने विश्व को उत्तम जीवन जीने के कई गूढ़ मंत्र दिए हैं। मनुष्य ज़िंदगी की ऊहा-पोह में अक्सर इतना फंस जाता है कि उसे सही व सुखी जीवन जीने का सही रास्ता नहीं पता चलता। 21वीं सदी जहाँ एक तरफ तकनीकी उपलब्धियों से सुसज्जित है, वहीं आज का मनुष्य अकेला व तनाव में जीता हुआ दिख रहा है। एक सर्वे के मुताबिक विश्व में लगभग 40 प्रतिशत लोग दिमागी परेशानियों (मेंटल हेल्थ) के शिकार हैं और वे तनाव में जी रहे हैं। आश्चर्य की बात है कि विश्व के विकसित देशों जैसे कि यूएस, यूके, ऑस्ट्रेलिया आदि में लोग मेंटल हेल्थ की समस्याओं से कम विकसित देशों की तुलना में ज्यादा दुःखी हैं।

भारतीय संस्कृति के कई ऐसे सिद्धांत हैं जो कि हमें एक सुखी, व्यवस्थित व सार्थक उद्देश्यपूर्ण जीवन की सीख देते हैं। आज मैं ऐसे एक सिद्धांत का वर्णन करूँगा जिसे भारतीय शास्त्र में 'तप-सेवा-सुमिरन' का नाम दिया गया है।

तप : ज़िंदगी को उत्तम बनाने का पहला मंत्र है परिश्रम व उत्तम मेहनत। महर्षि पतंजलि ने अपने अष्टांग योग में सबसे पहले 'यम' व 'नियम' की चर्चा की है। उनके विचार में मनुष्य को अपने जीवन को सफल बनाने के लिए 'यम' के पाँच बिन्दुओं पर अमल करना चाहिए जो हैं – अहिंसा, अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य (रिश्तों में सच्चाई), अपरिग्रह (ज्यादा संचय न करना) व सत्य। ये पाँच बिन्दु हमें दूसरों के प्रति अच्छे आचरण की सीख देते हैं। पतंजलि ने 'नियमों' में शौच (अच्छे विचार), संतोष, तप (परिश्रम), स्वाध्याय (अच्छा साहित्य पढ़ना) व ईश्वर प्राणिधान (ईश्वर का हर समय स्मरण करना) का वर्णन किया है।

मनुष्यों को सही व सुखी जीवन जीने के लिए इन 10 मूल्यों को अपने जीवन में उतारने की कोशिश करनी चाहिए। यही सही मायनों में हमारा 'तप' है।

सेवा : सुखी जीवन का दूसरा सिद्धांत 'सेवा' है। मनुष्य पूरे जीवन सुख व शांति की खोज में लगा रहता है परंतु वह यह भूल जाता है कि जब हम दूसरों के सुख व भले के बारे में सोचना शुरू कर देते हैं उसी वक्त हम अपने सुख की तैयारी भी कर देते हैं। 'सेवा' भारतीय दर्शन की पराकाष्ठा है। यह सिद्धांत हम दूसरों के प्रति रिश्तों में व अपने काम में भी उपयोग में ला सकते हैं। अगर हमें सुखी होना है, तो हमें दूसरों को सुखी बनाने की कोशिश करनी चाहिए। और अगर हमें अपने कार्य में उत्तीर्ण होना है तो हमें अपने कार्य को 'सेवा' के भाव से करना चाहिए।

जिस कार्य में सेवा का भाव होता है वहाँ मन-मुटाव, चोरी, गबन व निम्न गुणवत्ता जैसी चीज़ें (शिकायत) नहीं होती। 'सेवा' एक ऐसी सोच है जो हम कहीं भी, कभी भी और किसी के लिए भी अपने जीवन में प्रयोग में ला सकते हैं।

सुमिरन : इस दर्शन (सोच) का आखिरी स्तम्भ है 'सुमिरन' जो हमें हर दिन अपने विचारों व भावनाओं में सकारात्मकता लाने को प्रेरित करना है। 'सुमिरन' का अर्थ है कि हम हर दिन कुछ क्षण ईश्वर (उस परम सत्ता) के स्मरण में व्यतीत करें जो इस संसार को चला रहे हैं और अपने जीवन में उच्च आदर्शों को स्थापित करें।

'सुमिरन' हमें यह भी सीख देता है कि हम दूसरों के बारे में अच्छा सोचें, उनको अपने परिवार जन के ही तरह देखें और इस बात का स्मरण करें कि हम सब 'एक' हैं। आखिर में 'सुमिरन' इस बात की भी सीख देता है कि हम प्रतिदिन अपने 10-20 मिनट ध्यान में व्यतीत करें। हम 10-20 मिनट उत्तम विचार व ईश्वरीय सत्ता के बारे में सोचें और अपने जीवन को उत्तम बनाने के बारे में विचार करें।

भारतीय दर्शन में दिन के दो समयों को ब्रह्म मुहूर्त की संज्ञा दी गई है – सुबह जब रात दिन से मिलती है, और दूसरा

जब शाम को दिन रात से मिलता है। यदि हो सके तो इन दो समयों पर 10-20 मिनट अपने लिए निकालें और 'सुमिरन' में व्यतीत करें। 'तप-सेवा-सुमिरन' से हम अपने जीवन को आनंदमय व सार्थक बना सकते हैं। यह सिद्धांत हमें परिश्रम, दूसरों के लिए काम करना व हर दिन कुछ सकारात्मक सोचने को प्रेरित करता है। तप और सेवा से हम अच्छा काम करने की सीख पाते हैं और सुमिरन से आंतरिक शांति की। यह मंत्र एक शक्तिशाली सिद्धांत है जो हमें जीवन की कठिनाइयों, विफलताओं और दुःखों से पार पाने में सहायक सिद्ध होगा और एक सुखी जीवन की ओर अग्रसर करेगा।

जीवन की राह

उमेश मेहता
कार्यकारी सहायक

जीवन की राह में सब अकेले हैं, थकेले हैं।
राह अनेक हैं, जीवन एक है,
चलना बहुत है, दौड़ना भी है।
पर अंत के डर से, मरण के डर से,
सब अकेले हैं, थकेले हैं।।

पाना सब है, परंतु खोने से डर लगे,
जो है वो कम है, फिर भी जाने क्यों आँखें नम लगें।
यही सोच के मन से सब व्यक्ति अकेले हैं,
थकेले हैं।।

बचपन बीता, जवानी आईं,
जवानी बीती बुढ़ापा आया,
पकड़ी लाठी, ज्ञान की पाठी,
घर में बन गए अब्बू आपा।
पर बिन सहारे वृद्धावस्था में अकेले हैं, थकेले हैं।।

आँगन छूटा स्कूल की चाह में,
स्कूल छूटा कॉलेज की चाह में।
कॉलेज छूटा नौकरी की चाह में।
पर अब शादी की चाह में अकेले हैं, थकेले हैं।।

जीवन अकेला है माया जाल में,
आदमी चलता जा रहा वक्त के बाज़ार में।
पर इस वक्त के बाज़ार में मनुष्य अकेला है,
थकेला है।।

एक देश की धड़कन

निशांत जोशी
सहायक प्रबंधक

पूरब की धरती, जहाँ नदियाँ बहतीं,
अरबों सपने और हिम्मत कहतीं।
निशांत के शब्दों में यह बात,
भारत की अर्थव्यवस्था का अनोखा साथ।

खेतों से लेकर बाजारों की चाल,
भारतीय अर्थव्यवस्था की अद्भुत मिसाल।
पुराने बाजार, जहाँ कहानियाँ बसतीं,
मसालों की खुशबू से गलियाँ सजतीं।

किसान जोतें मिट्टी, सूरज की छांव,
उनकी मेहनत से जीवन के पांव।
तकनीकी विकास, डिजिटल दौड़,
नए सपनों की ओर खुला हर मोड़।

स्टार्टअप्स का साहस, उड़ानों के रंग,
नवाचारों से खुलते हर द्वार संग।
बाजार का नृत्य, संतुलन का खेल,
विकास और सेवा, हर दिशा में मेल।

फिर भी चुनौतियाँ, जैसे मानसून के बादल,
असमानता के साए, हर जगह हलचल।
नीतियाँ बनतीं, अंतर मिटाने को,
आशा के साथ, हर कदम उठाने को।

ओ भारत, तेरी कहानी अब भी अधूरी,
यात्रा है जारी, है नहीं कोई दूरी।
उतार-चढ़ाव में, तेरा जज्बा रहे,
दुनिया की धड़कन, अर्थव्यवस्था बने।

संस्थान की राजभाषा गतिविधियाँ

हमारा संस्थान भारत सरकार की राजभाषा नीतियों की अनुपालना सुनिश्चत करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप वर्ष भर विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करता रहता है। संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पिछले वर्ष के दौरान आयोजित की गई राजभाषा संबंधी प्रमुख गतिविधियाँ इस प्रकार हैं :-

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

हमारे संस्थान द्वारा 26 जून 2024 को रवि जे. मथाई सभागार में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अहमदाबाद की 83वीं छमाही बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अहमदाबाद के लगभग 130 सदस्य कार्यालयों ने भाग लिया। इस अवसर पर हमारे संस्थान के निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर भारत भास्कर ने राजभाषा कार्यान्वयन समिति अहमदाबाद के अध्यक्ष एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त गुजरात, अहमदाबाद श्री यशवंत यू. चव्हाण तथा अन्य गणमान्य सदस्यों का स्वागत किया। इस अवसर पर संस्थान के सहायक महाप्रबंधक – हिंदी, डॉ. मुकेश शर्मा ने पीपीटी के माध्यम से संस्थान की राजभाषा गतिविधियों से अवगत कराया। इस आयोजन के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति अहमदाबाद के अध्यक्ष एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त गुजरात, अहमदाबाद श्री यशवंत यू. चव्हाण ने राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों, विभागों एवं संस्थानों को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर हमारे संस्थान को भी वर्ष 2023-24 में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति अहमदाबाद के अध्यक्ष एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त गुजरात, अहमदाबाद श्री यशवंत यू. चव्हाण द्वारा राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। यह सम्मान हमारे संस्थान की तरफ से

संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर भारत भास्कर ने ग्रहण किया। इसके साथ ही संस्थान के सहायक महाप्रबंधक – हिंदी, डॉ. मुकेश शर्मा को भी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए स्मृति चिन्ह एवं प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया। इस बैठक में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अहमदाबाद के सदस्य सचिव श्री रामविलास सिंह राठौड द्वारा सभी विभागों, कार्यालयों एवं संस्थानों के राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित आँकड़ों की समीक्षा की गई और आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए गए।

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

संस्थान ने राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सरकारी निर्देशों और नियमों का पालन करते हुए 17 सितंबर से 01 अक्टूबर 2024 तक "हिंदी पखवाड़ा 2024" का आयोजन किया। चूंकि 14 एवं 15 सितंबर 2024 को शनिवार, रविवार का सप्ताहांत अवकाश था और 16 सितंबर को ईद का सार्वजनिक अवकाश था इसलिए 17 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस मनाया गया। हिंदी दिवस के आयोजन के साथ और हिंदी कविता प्रतियोगिता से हिंदी पखवाड़े की शुरूआत हुई। हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं (हिंदी कविता, हिंदी सामान्य ज्ञान, हिंदी शब्द ज्ञान, हिंदी निबंध, हिंदी अंताक्षरी, हिंदी सुलेख और हिंदी गीत गायन) आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में 500 से अधिक हिंदी भाषी और गैर-हिंदी भाषी स्टाफ सदस्यों और छात्रों ने भाग लिया है। 01 अक्टूबर 2024 को हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया, इन प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं को निदेशक प्रोफेसर भारत भास्कर द्वारा नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। उन्होंने हमारे संस्थान के सभी सदस्यों को अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित भी किया। ब्रिगेडियर दिनेश शर्मा, सलाहकार-प्रशासन भी इस अवसर पर उपस्थित रहे और उन्होंने हिंदी को बढ़ावा देने पर जोर दिया। 01 अक्टूबर 2024 को हिंदी पखवाड़ा-2024 के समापन समारोह से पहले, आईआईएमए समुदाय के स्कूली बच्चों को हिंदी कविता पढ़ने का अवसर दिया गया। 27 सितंबर, 2024 को हमारे विक्रम साराभाई पुस्तकालय में हिंदी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। इस समापन समारोह के दौरान माननीय गृह मंत्री और अन्य

गणमान्य व्यक्तियों से प्राप्त संदेशों को भी पढ़ा गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित सभी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों के विवरण निम्न प्रकार से हैं :-

17 सितंबर 2024 – हिंदी कविता-पाठ (स्वरचित) प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषी	
प्रथम	सुश्री शिवांगी भट्ट
द्वितीय	श्री चिंतन पटेल
तृतीय	श्री राजर्षि मुखर्जी
प्रोत्साहन	सुश्री अनेरी पढियार
हिंदीभाषी	
प्रथम	सुश्री सोनू सोलंकी
द्वितीय	सुश्री रुचि गहलावत
तृतीय	श्री हरीश प्रेमी
प्रोत्साहन	डॉ. कृतिका टेकवानी

18 सितंबर 2024 – ऑनलाइन हिंदी सामान्य-ज्ञान प्रतियोगिता

प्रथम	श्री शुभम सिवाच
द्वितीय	सुश्री मोनिका उमेश पटेल
तृतीय	श्री अतुल कुमार
प्रोत्साहन	श्री अंशुल मेहता

19 सितंबर 2024 – हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषी	
प्रथम	श्री चिंतन पटेल
द्वितीय	श्री निरज दवे
तृतीय	श्री प्रतीक पटेल
प्रोत्साहन	श्री विरल सोलंकी
हिंदीभाषी	
प्रथम	सुश्री मोनिका पटेल
द्वितीय	श्री विनय शर्मा
तृतीय	श्री अतुल कुमार
प्रोत्साहन	श्री शुभम सिवाच

20 सितंबर 2024 – हिंदी निबंध प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषी	
प्रथम	श्री रवि डी. पारेख
द्वितीय	श्री आशीष जी. देसाई
तृतीय	श्री रवि पाबारी
प्रोत्साहन	सुश्री पियाली चट्टोपाध्याय
हिंदीभाषी	
प्रथम	डॉ. कृतिका टेकवानी
द्वितीय	सुश्री प्रगति काछी
तृतीय	श्री हरीश बोपचे
प्रोत्साहन	सुश्री शिल्पा नागरे

23 सितंबर 2024 – हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता

प्रथम	सुश्री प्रियंका त्रिपाठी टीम सुश्री विधि कोटक श्री अक्षय महाडिक श्री विक्की मौर्य श्री रितेश घोलप सुश्री आशा देसाई
द्वितीय	सुश्री रोमिका ढींगरा टीम सुश्री शार्विन क्रिश्चियन श्री रवि पाबारी सुश्री सोनू सोलंकी सुश्री वरुणा जोशी श्री निशांत जोशी
तृतीय	श्री अभिषेक मौर्य टीम श्री अमित मकवाना सुश्री मोनिका पंचोली सुश्री भूमि पटेल श्री प्रतीक पटेल सुश्री अनेरी पढियार
प्रोत्साहन	सुश्री वैशाली जोशी टीम सुश्री मानसी पारेख सुश्री नेहा मेहता श्री नेल्सन क्रिश्चियन सुश्री अल्पा मोदी सुश्री विराज शाह

25 सितंबर 2024 – हिंदी सुलेख प्रतियोगिता

प्रथम	श्री सतीश वर्मा
द्वितीय	श्री महेश आर. देसाई
तृतीय	श्री विक्की आर. मौर्य
प्रोत्साहन	श्री राघव राम

26 सितंबर 2024 – हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता

प्रथम	श्री प्रद्युमनसिंह
द्वितीय	श्री एजाजुद्दीन शैख
तृतीय	सुश्री दिब्यांगना दत्ता
प्रोत्साहन	श्री आशुतोष देवा

26 सितंबर 2024 – हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करने और हिंदी में काम करने के प्रति उनकी झिझक को दूर करने के उद्देश्य से पिछले वर्ष संस्थान में चार कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। पिछले वर्ष के दौरान संस्थान में कार्यशालाओं का आयोजन क्रमशः 27 फरवरी 2024, 22 मई 2024, 25 सितंबर 2024 एवं 13 दिसंबर, 2024 को किया गया। इन कार्यशालाओं में 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संसदीय राजभाषा समिति का राजभाषाई निरीक्षण

हाल ही में 17 अक्टूबर 2024 को हमारे संस्थान का संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति द्वारा राजभाषाई निरीक्षण हुआ है। संस्थान की ओर से इस बैठक में निदेशक, प्रोफेसर भारत भास्कर, प्रभारी प्रोफसर (प्रशासन), प्रोफेसर अभिमान दास एवं सहायक महाप्रबंधक -हिंदी, डॉ. मुकेश शर्मा ने भाग लिया। संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति का यह दौरा 17 से 19 अक्टूबर 2024 के दौरान अहमदाबाद और इसके आस-पास स्थित केंद्र सरकार के 32 कार्यालयों के निरीक्षण के लिए था। इस निरीक्षण का समन्वयकर्ता कार्यालय सीआरपीएफ, 100 बटालियन, वस्त्राल, अहमदाबाद को बनाया गया था इसलिए संसदीय समिति के सभी सदस्यों के लिए सुविधाओं की व्यवस्था 100 बटालियन, अहमदाबाद की देखरेख में ही की गई थी। संसदीय राजभाषा समिति राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा (4) के तहत गठित एक प्रमुख समिति है। राजभाषा के क्षेत्र में यह सर्वोच्च अधिकार प्राप्त समिति है। यह समिति केंद्र सरकार के अधीन आने वाले (या सरकार द्वारा वित्तपोषित) सभी संस्थानों का समय-समय पर निरीक्षण करती है और राष्ट्रपति को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करती है। राष्ट्रपति इस रिपोर्ट को संसद के प्रत्येक सदन में रखवाते हैं और राज्य सरकारों को भिजवाते हैं। इसमें लोक सभा के 20 तथा राज्य सभा के 10 सदस्य होते हैं जिनका चुनाव एकल हस्तांतरणीय तरीके से किया जाता है। लोकसभा चुनावों के बाद प्रायः इस समिति का पुनर्गठन होता है। इस समिति में 10-10 सदस्यों वाली 3 उपसमितियाँ बनाई गई हैं, प्रत्येक उपसमिति का एक समन्वयक होता है। इस समिति के कार्यकलाप और गतिविधियाँ मुख्यतः राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 4 में दी गई हैं। समिति के अध्यक्ष का चुनाव समिति के सदस्यों द्वारा किया जाता है। इस समिति का मुख्य उद्देश्य सरकार के कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा करना है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें समय-समय पर आयोजित की जाती रही हैं। पिछले वर्ष के दौरान प्रत्येक तिमाही के अनुरूप चार बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न निर्णय लिए गए तथा इन निर्णयों के कार्यान्वयन की समीक्षा भी की गई। इन बैठकों के कार्यवृत्तों की प्रति शिक्षा मंत्रालय (राजभाषा विभाग) एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को भेजी गई।

संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद

वित्त वर्ष 2023-24 के संस्थान के 62वें वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी में प्रकाशन किया गया है। इस वित्त वर्ष का हिंदी वार्षिक प्रतिवेदन 220 से अधिक पृष्ठों में प्रकाशित हुआ है, जिसे भारत सरकार के दोनों सदनों – लोक सभा और राज्य सभा में प्रस्तुत किया जाता है। इस वर्ष के वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद कार्य निर्धारित समय सीमा में किया गया है और इसे निर्धारित समय पर प्रकाशित करते हुए शिक्षा मंत्रालय को भेजा गया है।

मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्र भाषा हो सकती है।

- बाल गंगाधर तिलक

दूरदर्शी डॉ. विक्रम साराभाई: एक प्रेरणा स्रोत

श्रीमती मीना टेकवानी ,
माताजी, डॉ. कृतिका टेकवानी

डॉ. विक्रम साराभाई का नाम भारतीय विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक के रूप में उन्हें व्यापक रूप से जाना जाता है। उनकी दृष्टि, निष्ठा और अथक परिश्रम के कारण भारत ने अंतरिक्ष अनुसंधान में अपनी पहचान बनाई है और विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना से लेकर समाज कल्याण के उद्देश्य से विभिन्न वैज्ञानिक परियोजनाओं को आगे बढ़ाने तक, उनका योगदान अविस्मरणीय है। इस लेख में उनके जीवन, कार्यों और सिद्धांतों का विस्तार से विश्लेषण किया गया है, जिसमें प्रेरणादायक श्लोकों के माध्यम से उनके विचारों को भी समझा गया है।

जीवन परिचय और प्रारंभिक शिक्षा

डॉ. विक्रम साराभाई का जन्म 12 अगस्त 1919 को गुजरात के अहमदाबाद शहर में एक ऐसे परिवार में हुआ, जो समाज के उच्च वर्ग से संबंधित था, लेकिन समाज सेवा और संस्कृति के प्रति उनके गहरे लगाव ने उन्हें बेहद विनम्र बना दिया। उनके पिता, अम्बालाल साराभाई, उस समय के प्रतिष्ठित उद्योगपति थे और व्यवसाय के क्षेत्र में उनकी अच्छी-खासी पहचान थी। अम्बालाल साराभाई की कारोबारी प्रतिष्ठा और समाज के प्रति उनकी संवेदनशीलता ने विक्रम के बाल्यकाल में गहरा असर डाला। वहीं, उनकी माता सरला साराभाई एक शिक्षित और जागरूक महिला थीं, जिनका समाज सेवा के प्रति अपार योगदान था। सरला साराभाई ने अपने बच्चों को केवल शिक्षा ही नहीं दी, बल्कि उन्हें मानवीय मूल्यों और संस्कारों का पाठ भी पढ़ाया, जिसका प्रभाव विक्रम के जीवन के हर पहलू में देखा जा सकता है।

विक्रम साराभाई का परिवार शिक्षा और संस्कृति में गहरी रुचि रखता था। उनका घर विचारों, सभ्याचार और विज्ञान के प्रति जिज्ञासा का केंद्र था। घर में नियमित रूप से उस समय के प्रसिद्ध विचारक, समाजसेवी, वैज्ञानिक और कलाकार आते-जाते रहते थे, जिनसे विक्रम को समाज और विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को समझने का अवसर मिलता था। यह वातावरण इतना समृद्ध और प्रेरणादायक था कि विक्रम के भीतर बचपन से ही ज्ञान के प्रति एक अटूट प्रेम विकसित हो गया। घर का माहौल उन्हें मानवता की सेवा के लिए प्रेरित करता था और यह उनके व्यक्तित्व का अहम हिस्सा बन गया। इस प्रेरक परिवेश ने उन्हें अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही यह समझने में मदद की कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसका असली उद्देश्य समाज के कल्याण में निहित है।

प्रारंभिक शिक्षा के दौरान विक्रम का रुझान हमेशा विज्ञान और गणित की ओर रहा। उनके शिक्षकों ने उनके भीतर की इस विशेष रुचि को पहचाना और उसे प्रोत्साहित किया। विज्ञान के प्रति उनकी जिज्ञासा ने उन्हें खोजी स्वभाव का बना दिया था; वे विज्ञान के सिद्धांतों को सिर्फ पढ़ना या समझना ही नहीं चाहते थे, बल्कि उन पर गहनता से विचार

करना और उनका अनुप्रयोग करना भी चाहते थे। विक्रम का यह स्वभाव जीवन के हर मोड़ पर उन्हें नई दिशाओं में ले गया, और इसी विशेषता ने उन्हें एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक और समाजसेवी के रूप में विकसित होने में सहायता की।

प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद विक्रम ने उच्च शिक्षा के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। कैम्ब्रिज का वातावरण उनकी शिक्षा के लिए अत्यधिक सहायक सिद्ध हुआ। वहाँ उन्होंने विज्ञान और गणित में गहन अध्ययन किया। इस विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान उनकी वैज्ञानिक समझ और भी परिपक्व हो गई, इससे और उनके विचार अधिक स्पष्ट और सुस्पष्ट हो गए। विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में उनकी रुचि ने उन्हें इन विषयों में गहराई तक उतरने का अवसर प्रदान किया। उन्होंने महसूस किया कि विज्ञान का असली उद्देश्य केवल अनुसंधान करना या प्रयोगशाला में बैठकर नई खोज करना नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से समाज के हर वर्ग तक कुछ बेहतर पहुँचाना होना चाहिए।

कैम्ब्रिज में अध्ययन करते समय विक्रम ने विज्ञान के अनुप्रयोग पर गहराई से चिंतन करना शुरू किया। वहाँ के प्रोफेसरों और सहपाठियों के साथ चर्चाओं में शामिल होकर उनके विचार और भी विकसित हुए। उन्होंने महसूस किया कि वैज्ञानिक ज्ञान केवल बौद्धिक संपत्ति नहीं है; इसका उपयोग समाज की सेवा और कल्याण के लिए भी होना चाहिए। इस सोच ने विक्रम साराभाई के जीवन में एक नया उद्देश्य स्थापित किया, जो आगे चलकर उनके कार्यों और शोध में स्पष्ट रूप से झलका। कैम्ब्रिज के दौरान ही उन्होंने विज्ञान को जनकल्याण के लिए उपयोग में लाने का संकल्प लिया। उनका मानना था कि विज्ञान और तकनीक का उपयोग करके समाज में व्याप्त असमानता को कम किया जा सकता है और लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है।

विक्रम साराभाई की इस विचारधारा ने उन्हें एक ऐसे वैज्ञानिक के रूप में ढाला, जो वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार को केवल एक मानसिक व्यायाम के रूप में ही नहीं देखते थे, बल्कि इसे समाज की उन्नति का एक माध्यम मानते थे। उन्होंने समझा कि विज्ञान को समाज के लाभ के लिए उपयोग में लाना ही विज्ञान का असली उद्देश्य है। उनकी इस सोच ने उन्हें एक समाज-सेवी वैज्ञानिक बना दिया और उन्होंने समाज की बेहतरी के लिए अपने ज्ञान का प्रयोग करने का निश्चय किया।

विक्रम साराभाई की इस सोच ने उन्हें भविष्य में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना की ओर प्रेरित किया। उन्होंने महसूस किया कि विज्ञान की प्रगति तभी सार्थक है जब उसका लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुँचे। इस दिशा में उनके द्वारा किए गए कार्यों ने विज्ञान और समाज के बीच एक पुल का निर्माण किया। समाज की सेवा के प्रति उनकी यह प्रतिबद्धता भविष्य में उनके हर कार्य में दिखाई दी, चाहे वह अंतरिक्ष अनुसंधान का क्षेत्र हो, प्रबंधन शिक्षा का क्षेत्र हो या डिज़ाइन के क्षेत्र में नवीनता की खोज।

विक्रम साराभाई का जीवन विज्ञान के प्रति उनके निष्ठा और समाज सेवा के प्रति उनके समर्पण का प्रतीक था। उनका प्रारंभिक जीवन और शिक्षा एक ऐसी नींव थी, जिसने उन्हें एक महान वैज्ञानिक और समाजसेवी के रूप में विकसित किया। कैम्ब्रिज में बिताए उनके वर्ष उनकी वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समाज सेवा की भावना को और भी सशक्त बनाने में सहायक सिद्ध हुए। कैम्ब्रिज से लौटने के बाद उन्होंने भारतीय समाज के लिए विज्ञान का प्रयोग करने के अपने संकल्प को पूरा करने की दिशा में कदम बढ़ाया और उनके इस संकल्प ने उन्हें एक ऐसे प्रेरणादायक व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया, जिसे न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया ने सराहा।

श्लोक:

"विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।"

(अर्थात् - विद्या विनम्रता देती है, विनम्रता से पात्रता आती है।)

डॉ. विक्रम साराभाई का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण योगदान भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना है। 1960 के दशक में, उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की नींव रखी और भारत को अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में एक नई पहचान दिलाई। उनका मानना था कि अंतरिक्ष विज्ञान का उपयोग केवल रक्षा या आर्थिक लाभ के लिए ही नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग की सेवा के लिए होना चाहिए। उनकी सोच थी कि अंतरिक्ष तकनीक का उपयोग ग्रामीण विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में किया जा सकता है, जिससे आम जनता का जीवन स्तर ऊँचा हो सके।

साराभाई की इस दूरदर्शिता के कारण भारत ने अपना पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' लॉन्च किया। उनके नेतृत्व में आरंभिक उपग्रह कार्यक्रम सफल रहे, और भारत ने अपने स्वयं के प्रक्षेपण यान विकसित किए, जिससे अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल हुई। उनका यह योगदान अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक नई क्रांति लाने वाला था और इसी ने इसरो को आज दुनिया के अग्रणी अंतरिक्ष संगठनों में स्थान दिलाया है।

श्लोक:

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

(भगवद्गीता)

(अर्थात् - कर्म करते चलो, फल की चिंता मत करो।)

डॉ. साराभाई के जीवन का यह श्लोक उनके काम के प्रति उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है। उन्होंने अपने प्रयासों को बिना फल की चिंता किए समर्पित किया, और विज्ञान के क्षेत्र में नित नए प्रयोग किए। उनके नेतृत्व में भारत ने अंतरिक्ष विज्ञान में जो उपलब्धियाँ प्राप्त कीं, वे आज भी प्रेरणा स्रोत हैं।

समाज कल्याण और साराभाई की दृष्टि

विक्रम साराभाई का मानना था कि विज्ञान का असली उद्देश्य केवल अनुसंधान और प्रयोग ही नहीं है; बल्कि यह समाज के उत्थान और मानवता की सेवा का एक साधन है। वे चाहते थे कि विज्ञान को एक साधन के रूप में अपनाया जाए जो आम जनता की समस्याओं को हल कर सके और उनकी जीवनशैली को बेहतर बना सके। साराभाई ने अंतरिक्ष विज्ञान का उपयोग करने की दिशा में कई कदम उठाए ताकि समाज के हर वर्ग तक इसका लाभ पहुँच सके। उनके प्रयासों से विज्ञान और तकनीकी को दूरदराज के क्षेत्रों में पहुँचाया गया, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य और संचार सेवाओं की पहुँच बेहतर हो सकी।

उनके समाज कल्याण के दृष्टिकोण के कारण कई नई वैज्ञानिक परियोजनाओं की शुरुआत हुई, जो ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के लिए बहुत लाभकारी साबित हुई। उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान को एक ऐसा साधन बनाने की कोशिश की, जो हर एक भारतीय के लिए उपयोगी साबित हो।

शिक्षा और विज्ञान में योगदान

विक्रम साराभाई का योगदान केवल अंतरिक्ष विज्ञान तक ही सीमित नहीं था; उन्होंने शिक्षा और प्रबंधन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किए। भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद (आईआईएम-ए) की स्थापना के पीछे उनका दृष्टिकोण था कि प्रबंधन शिक्षा को समाज की सेवा का माध्यम बनाया जाए। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अहमदाबाद टेक्सटाइल इंडस्ट्री रिसर्च एसोसिएशन (अटीरा) और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिज़ाइन (एनआईडी) की स्थापना की।

आईआईएम-ए की स्थापना का उद्देश्य केवल व्यवसाय शिक्षा देना ही नहीं था, बल्कि छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी का भाव उत्पन्न करना भी था। एनआईडी के माध्यम से, विक्रम साराभाई ने कला और डिजाइन के क्षेत्र में नए आयाम जोड़े। उनका इन सभी संस्थानों की स्थापना में शिक्षा और विज्ञान को समाज के कल्याण में उपयोग करने का दृष्टिकोण स्पष्ट झलकता है।

श्लोक:

"शिक्षया च यथा गच्छेत् पात्रत्वं प्राप्यते तथा।"

(अर्थात् - शिक्षा के माध्यम से पात्रता प्राप्त होती है।)

उनकी शिक्षण पद्धति का उद्देश्य था कि छात्रों में सेवा और समाज कल्याण की भावना उत्पन्न हो और वे अपनी शिक्षा का उपयोग समाज की बेहतरी के लिए करें।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो)

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना सन् 1969 में डॉ. विक्रम साराभाई के नेतृत्व में हुई। साराभाई की दूरदर्शिता और विज्ञान के प्रति उनके गहन समर्पण ने इसरो को एक ऐसे मुकाम पर पहुँचाया जहाँ से भारत ने अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त की। उनका मानना था कि अंतरिक्ष तकनीक का उपयोग केवल रक्षा के लिए ही नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग की सेवा में किया जाना चाहिए। इस सोच के तहत उन्होंने इसरो की स्थापना की, और इसे वैज्ञानिक, शैक्षणिक और सामाजिक उद्देश्यों के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया।

इसरो ने भारत को अंतरिक्ष में एक नई पहचान दी। सन् 1975 में भारत का पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' लॉन्च किया गया, जो इसरो की पहली बड़ी उपलब्धि थी। इसके बाद सन् 1980 में भारत ने अपना स्वदेशी रॉकेट एसएलवी-3 के माध्यम से 'रोहिणी' उपग्रह को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित किया। इसरो की कई परियोजनाओं जैसे चंद्रयान

और मंगलयान ने ना केवल भारत को वैश्विक अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी देशों की सूची में स्थान दिलाया, बल्कि यह भी सिद्ध कर दिया कि सीमित संसाधनों के बावजूद भारत अंतरिक्ष अनुसंधान में नई ऊँचाइयों को छू सकता है। इसरो का उद्देश्य मात्र तकनीकी सफलता नहीं था, बल्कि साराभाई की सोच के अनुसार, यह संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में देश को सशक्त बनाने के साथ-साथ समाज के हर हिस्से में तकनीकी लाभ पहुँचाना चाहता था।

भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद (आईआईएम-ए)

भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद (आईआईएम-ए) की स्थापना भी डॉ. विक्रम साराभाई की एक महान सोच का परिणाम थी। सन् 1961 में स्थापित इस संस्थान का उद्देश्य सिर्फ प्रबंधन शिक्षा प्रदान करना ही नहीं था, बल्कि इसमें साराभाई ने एक ऐसा दृष्टिकोण रखा जो समाज सेवा को भी समाहित करता था। उनका मानना था कि प्रबंधन शिक्षा केवल व्यवसाय की उन्नति के लिए ही नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह समाज के प्रति एक जिम्मेदारी का भाव भी पैदा करनी चाहिए। इस विचार के तहत उन्होंने आईआईएम-ए को एक ऐसा केंद्र बनाया जहाँ शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का भी समावेश हो।

आईआईएम-ए आज भारत के ही नहीं, बल्कि दुनिया के प्रमुख प्रबंधन संस्थानों में गिना जाता है। यहाँ से निकले विद्यार्थी आज विभिन्न क्षेत्रों में शीर्ष पदों पर हैं और समाज सेवा के क्षेत्र में भी सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं। इस संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता और इसमें सिखाई जाने वाली नेतृत्व की शिक्षा इसे विशेष बनाती है। डॉ. साराभाई का उद्देश्य था कि प्रबंधन शिक्षा के माध्यम से समाज को सशक्त और प्रगतिशील बनाया जा सके, और आईआईएम-ए ने इस उद्देश्य को पूरे विश्व में स्थापित किया।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिज़ाइन (एनआईडी)

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिज़ाइन (एनआईडी) का भी डॉ. साराभाई के दृष्टिकोण में विशेष महत्व था। सन् 1961 में अहमदाबाद में स्थापित यह संस्थान डिज़ाइन और कला के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान बन गया। साराभाई का मानना था कि डिज़ाइन केवल एक कला ही नहीं, बल्कि एक समाज की प्रगति का प्रतीक भी है। उन्होंने एनआईडी को एक ऐसा मंच बनाने का सपना देखा जहाँ कला, डिज़ाइन और रचनात्मकता का विकास हो सके और समाज के हर क्षेत्र में डिज़ाइन के महत्व को समझा जा सके।

एनआईडी का उद्देश्य डिजाइन शिक्षा में नवीनता और उन्नति को बढ़ावा देना था, और आज यह संस्थान भारत में डिज़ाइन शिक्षा का केंद्र बन गया है। यहाँ पढ़ने वाले छात्रों को कला के साथ-साथ समाज के लिए उपयोगी डिज़ाइन समाधान बनाने की प्रेरणा दी जाती है। इस संस्थान ने भारत में ना केवल डिज़ाइन शिक्षा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि डिज़ाइन समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप हो और इसका उपयोग समाज कल्याण में हो सके।

अहमदाबाद टेक्सटाइल इंडस्ट्री रिसर्च एसोसिएशन (अटीरा)

अहमदाबाद टेक्सटाइल इंडस्ट्री रिसर्च एसोसिएशन (अटीरा) का भी डॉ. विक्रम साराभाई के जीवन में विशेष स्थान था। उन्होंने महसूस किया कि भारत में कपड़ा उद्योग को उन्नत तकनीकी सहयोग की आवश्यकता है ताकि यह विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सके। इसी सोच के तहत उन्होंने अटीरा की स्थापना की, जो आज टेक्सटाइल और उद्योग से जुड़े अनुसंधान और विकास का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। अटीरा ने भारतीय कपड़ा उद्योग को नए उपकरण, प्रक्रियाओं और अनुसंधान के माध्यम से एक नई दिशा दी है।

अटीरा के माध्यम से कपड़ा उद्योग में उच्च गुणवत्ता के मानकों को स्थापित किया गया, और इसने कपड़ा उद्योग के उत्पादन में वृद्धि, गुणवत्ता सुधार और लागत कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साराभाई का उद्देश्य अटीरा के माध्यम से कपड़ा उद्योग को तकनीकी सहयोग प्रदान करना था ताकि यह उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। अटीरा आज भी भारतीय कपड़ा उद्योग में अनुसंधान, नवीनता और विकास के लिए एक अग्रणी संस्थान है।

समाज सेवा और ग्रामीण विकास में योगदान

डॉ. विक्रम साराभाई का मानना था कि विज्ञान और तकनीकी को केवल आर्थिक लाभ के लिए ही नहीं, बल्कि समाज कल्याण के लिए भी उपयोग में लाना चाहिए। उनके प्रयासों के कारण विज्ञान और तकनीकी के माध्यम से भारत के सुदूर

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच संभव हो सकी। उन्होंने ग्रामीण विकास और समाज सेवा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किए, जिससे समाज के विभिन्न वर्गों को बेहतर जीवन शैली प्राप्त हुई।

उनका यह विचार था कि विज्ञान का असली लाभ तभी संभव है जब इसे समाज के हर व्यक्ति तक पहुँचाया जाए। उनके प्रयासों से ग्रामीण भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ प्रभावी रूप से पहुँची, जो आज भी उनकी दूरदर्शिता का प्रतीक हैं।

निष्कर्ष

डॉ. विक्रम साराभाई का जीवन एक महान उद्देश्य की प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने विज्ञान, शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत है। उनका जीवन यह दर्शाता है कि जब हम सच्चाई, मेहनत और समर्पण के साथ कार्य करते हैं, तो कोई भी बाधा हमें सफल होने से नहीं रोक सकती। विज्ञान के क्षेत्र में उनकी दूरदर्शिता और समाज सेवा का उनका दृष्टिकोण आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा एक प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

श्लोक:

"सत्यमेव जयते नानृतं।"

(अर्थात् - केवल सत्य की ही जीत होती है।)

डॉ. विक्रम साराभाई का जीवन इस श्लोक के सार को दर्शाता है कि सत्य और निष्ठा के मार्ग पर चलते हुए सफलता अवश्य प्राप्त होती है। उनका योगदान भारतीय विज्ञान के क्षेत्र में अमूल्य है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा।

यह लेख डॉ. साराभाई के विज्ञान, शिक्षा, और समाज सेवा में योगदान को एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है। उनकी प्रेरक यात्रा बताती है कि किस तरह उन्होंने विज्ञान को मानवता की सेवा का साधन बनाते हुए समाज कल्याण को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया। उनके जीवन आदर्श हमेशा हमारे जीवन के लिए प्रेरणादायक रहेंगे और हमें प्रेरित करते रहेंगे।

भाई की विदाई

प्रह्लाद पटनी
सहायक प्रबंधक-सुविधा

तेरे बिना जीवन अब अधूरा-सा लगता है,
खुशियों का हर रंग अब सूना-सा लगता है।
तेरी हँसी की गूंजें, तेरी बातों का स्वर,
अब हर याद में बस, सिर्फ
एक सिसकती धड़कन भर।

तेरे जाने के बाद, हर सुबह का सूरज भी फीका,
तेरे बिना हर रंग, जैसे हो कोई नीला।
दिल की गहराई में, हर ख्वाब में तू ही तू,
अब हर रौशनी भी, बस तुझे ही ढूँढती रहूँ।

मुझे छोड़ा, इस खालीपन ने अकेला कर दिया,
तेरे बिना जीवन का हर पल, अधूरा कर दिया।
तेरे बिना सब कुछ अब खो-सा गया,
तेरे बिना मेरा दिल, बस टूट-सा गया।

तेरी यादें अब सिर्फ एक दर्द की निशानी,
तेरे बिना हर दिन, है जैसे एक तन्हाई।
हर आंसू, हर सिसकी, हर साँस में तेरा नाम,
तू हमेशा रहेगा मेरे दिल में, यही है
मेरा अंतिम प्रणाम।

तू चला गया, पर तेरी यादें हमेशा रहेंगी,
तेरे बिना भी, मेरी आत्मा तुझसे जुड़ी रहेगी।
भाई, तुझे न भूल पाने की ये पीड़ा सहूँगी,
तेरी यादों में जीते हुए, हमेशा तुझे याद करूँगी।

चौथाई घर

श्रीमती कुमुद वर्मा
पत्नी, प्रोफेसर संजय वर्मा

एक एकड़ में बना व्यास नदी से बस थोड़ी ही दूर है हमारा आशियाना है। तीन पीढ़ियों से हम उसी में रह रहे हैं। दादाजी ने अच्छी ज़मीन छांटकर उस पर घर बनवाया। दादी ने उसी घर में छोटा-सा किचन गार्डन भी बना रखा था। ज़रूरत की सब्ज़ियाँ जैसे हरी मिर्च, पुदीना, धनिया, आलू हम लोग वहीं उगा लिया करते थे क्योंकि खेतों में तो व्यापार वाली फ़सलें ही उगायी जाती थी। बहुत ही उपजाऊ भूमि थी हमारे खेत की भी।

दादा जी ने बहुत सोच समझकर सुविधाओं युक्त घर बनवाया । मँजों पर खिलखिलाते उस घर के लोगों की, आँगन की बहुत फ़ोटो देखी हैं मैंने।

पापा ने उसी आंगन में घुटने के बल चलते हुए .....

फिर ख़ानदानी पेशे को ही अपना लिया था। दादा बहुत ख़ुश रहते थे वहाँ।

वहाँ वातावरण ही ऐसा था। धीरे-धीरे घर को नए अंदाज़ में ढाला गया। सुविधा अनुसार आधुनिक चीज़ें भी वहाँ आ गईं। घर बहुत आरामदायक होने लगा था।

पापा ने अपनी मर्ज़ी से उसमें काम करवाया। मैं भी उसी आंगन में धीरे-धीरे खेलता हुआ बड़ा होने लगा। अब मेरी शादी की बातें होने लगी थीं तो मैंने 2019 में दादी से कहा कि इस घर को दोबारा बनवा लिया जाए।

पूरे घर को एक शानदार कोठी का रूप दिया गया। लाल रंग की पुताई ढलवाँ छत पर और सफ़ेद रंग की दीवारें बहुत सुंदर लग रही थीं। इतनी बड़ी ज़मीन पर बना हुआ हमारा घर एक महल जैसा लगता था।

इस घर में भी शहनाई बजी और अगली पीढ़ी के पैरों में घुंघरुओं की आवाज़ सुनाई देने लगी लेकिन यह क्या ?

2023 की बरसात, तीन पीढ़ियों के जज़्बातों पर खंजर घोंप गई। ब्यास नदी ने अपना तट फैलाना शुरू कर दिया और उसकी चपेट में आ गया हमारा घर। हमने उसे धीरे-धीरे झुकते और फिर बहते देखा।

हमारे किचन गार्डन वाली जगह को छोड़ दें तो पूरी कोठी ज़मींदोज़ हो गई और उस सुंदर से घर का बच गया किचन-गार्डन वाला चौथाई हिस्सा।

लाइब्रेरी

विजय कुमार
अनुसंधान सहयोगी

दिन भी लाइब्रेरी, रात भी लाइब्रेरी,
ख्वाबों की तलाश, हर बात भी लाइब्रेरी।
छात्रों के सपनों का बसेरा यहाँ है,
ज्ञान की रोशनी, मुलाक़ात भी लाइब्रेरी।
हर पन्ने पर बसी, कुछ नई सीख है,
अध्यापन की महक, सवालात भी लाइब्रेरी।
प्रोफेसरों की सोच, छात्रों की राहें,
राहों का सहारा, शुरुआत भी लाइब्रेरी।
भविष्य का सपना, समाधान की आस,
नए आविष्कारों की शुरुआत भी लाइब्रेरी।
जहाँ विचार पंख फैलाकर उड़ते हैं,
भविष्य की झलक, हर रात भी लाइब्रेरी।

करियर

प्रोफेसर प्रशांत दास 'साहिल'

नमित और सुमित; दोनों सगे भाई लेकिन चरित्र-चित्रण में चुंबक के दो ध्रुव। जितना आपसी लगाव उतना ही अलग स्वभाव।

दोनों ने आईआईटी से कंप्यूटर इंजीनियरिंग का ज्ञान लिया। नमित ने एथिकल कंप्यूटर हैकिंग मे करियर बनाया और अभी मल्टीनेशनल कंपनी में मैनेजर हैं। देश-विदेश जाना लगा रहता है। फेसबुक पर काफी सोशल हैं, खासकर साहित्यिक ग्रुप्स पर लेकिन असली सामाजिकता में फिसड्डी।

उधर सुमित ने वास्तविक सामाजिकता में तो ध्यान लगाया लेकिन अपनी छोटी-सी जिंदगी करियर बनाने में क्यों झोंक दे? साऊथ दिल्ली में चार मंजिली पुश्तैनी कोठी है जहाँ सिर्फ ये दो भाई रहते हैं। गाँव मे बटेदारी के खेत और गाजियाबाद में किराये पर लगे मकानों से आमदनी होती रहती है। कभी आमद में ऊँच-नीच हो जाए तो नमित भाई मदद कर ही देते हैं। नतीजतन, बंबईया भाषा में, सुमित भाई अक्सर "वेल्ले" से दिखते हैं। हालाँकि, पिछले कुछ महीनों से उन्होंनें ऑनलाईन कंसल्टैंट का कोई धंधा चालू किया है। मेधा की कोई कमी तो है नहीं, जनाब। इसलिये घर बैठे खूब कमाने भी लगे हैं।

लेकिन, नमित आजकल बड़े परेशान हैं। उनके फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, व्हाट्स-एप्प इत्यादि के सारे साहित्यिक ग्रुप्स मे न जाने क्यों एकाएक मेंबरशिप में इज़ाफा हो गया है। यूँ तो अच्छी बात होती लेकिन पहले जहाँ श्रृंगार रस से सनी रचनाओं पर चर्चाएँ होती थीं, अब वहाँ राजनैतिक विवादों का वर्चस्व बढ़ गया है। दरअसल, तीन खास लोगों के वैचारिक "पैशन" की वजह से ग्रुप्स में सनसनी-सी रहती है। ...ऐसा कह लीजिए कि इनमें से कोई भी दो एकसाथ ऑनलाईन आ जाएँ तो ग्रुप में आग लग जाए बस, आग। किसी को मुसलमान असुरक्षित दिखते हैं, तो किसी को हिंदू। किसी को देश के सारे नेता भ्रष्ट नजर आते हैं। ऊपर से, अपने-अपने तर्क मनवाने के लिये अधकचरे फॉरवार्डेड मैसेज का ऐसा प्रयोग करते हैं मानो प्राचीन धर्मग्रंथों से उद्धरित किये गये हों। यहाँ तक कि कभी-कभी गहमागहमी में गाली-गलौज पर भी उतर आते हैं। बाकी जनता दुखी हो गई है।

आज नमित से रहा न गया। सोचा कि इन तीनों महाशयों का एकाउंट ही हैक कर डालते हैं। कोडिंग में सुमित भाई से मदद मिल जाएगी। घंटों तक ब्रूट-फोर्स एल्गोरिध्म लगाते रहे।

एक-एक कर पता चला कि तीनों अकाउंट छद्म नामों से बने हैं। नमित का आक्रोश और बढ़ा। उन्होंने आईपी अड्रेस को ट्रैक करना शुरू किया।

वेट-अ-मिनट!
तीनों एक ही शहर से हैं...
कौन-सा शहर है? ...
दिल्ली?...
साऊथ दिल्ली??...
हमारी कोठी???...
और...तीनों अकाऊंट एक ही कंप्यूटर से?
हे भगवान्! तो ये है सुमित भाई का कंसल्टेंसी बिजनस!
दरअसल चुनाव जो आने वाले हैं!

प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा का महत्त्व

डॉ. कृतिका टेकवानी
अकादमिक सहयोगी

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी पृष्ठभूमि है जहाँ से व्यक्ति का विकास होता है। शिक्षा का अर्थ स्कूली शिक्षा तक ही सीमित नहीं है, यह हर स्तर पर व्यक्ति के विकास में शामिल हैं। एक व्यक्ति अपने परिवार से, मित्रों से, सहपाठियों से, सहकर्मियों से, सबसे शिक्षा ग्रहण कर सकता है। शिक्षा के कई स्तर हैं, जिसको प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्चतर शिक्षा के माध्यम से जाना जता है।

1. प्रारंभिक / प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा या प्रारम्भिक शिक्षा आमतौर पर औपचारिक शिक्षा का पहला चरण है, जो प्रीस्कूल / किंडरगार्टन के बाद और माध्यमिक विद्यालय से पहले आती है। प्राथमिक शिक्षा विकास का आधार बनती है। प्राथमिक विद्यालय में ही बच्चे बुनियादी कौशल सीखते हैं जो उन्हें जीवन, काम और सक्रिय नागरिकता के लिए तैयार करते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बच्चों और युवाओं को सशक्त बनाती है, उनके स्वास्थ्य और कल्याण की रक्षा करती है और गरीबी के चक्र को तोड़ती है। यह देशों को भी सशक्त बनाती है, जिससे आर्थिक समृद्धि और सामाजिक सामंजस्य स्थापित होता है।

2. प्राथमिक शिक्षा और मातृभाषा

भाषा ही वह माध्यम है जो एक व्यक्ति को दूसरे से जोड़ती है। एक विद्यार्थी के लिए प्राथमिक शिक्षा नींव होती है इसीलिए प्राथमिक शिक्षा में यह बहुत मायने रखती है। प्राथमिक शिक्षा से ही वह अपनी जड़ें मजबूत बना पाता है। उदाहरण के तौर पर भारत में कई ऐसे राज्य हैं जहाँ बच्चा (विद्यार्थी) अपनी संपूर्ण शिक्षा मातृभाषा में ही ग्रहण करता है। वह राज्य है – गुजरात, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडू आदि। इन राज्य सरकारों द्वारा अपनाया गया यह कदम हमें इस ओर इशारा करता है कि मातृभाषा की अत्यधिक महत्ता है।

प्राथमिक स्तर की शिक्षा से ही बच्चे के व्याकरण, सीखने के तरीके, बोलने का लहजा सभी सशक्त होते हैं। अगर बच्चे का अपना आधार या शिक्षा की नींव ही मजबूत नहीं होगी तो पूरा ढाँचा ही कमजोर रह जाता है। तात्पर्य यह है कि प्राथमिक शिक्षा जीवन का सबसे प्रमुख, आधारभूत अंग होती है। अगर यही शिक्षा विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में प्राप्त करता है तो इसकी नींव अधिक मजबूत होती है। कई राज्यों में मातृभाषा ही उनकी राज्यभाषा है और कई राज्यों में राज्यभाषा में ही शिक्षा का प्रचलन है। आजकल हम पश्चिमी सभ्यता की ओर अग्रसर हुए हैं, वैसे ही सबने वहाँ की शिक्षा नीति को अपनाया हुआ है। भारत में अब पढ़ाई का केवल एक माध्यम नहीं है, बल्कि कई माध्यम हो गए हैं, जिनमें आपस में ही प्रतिस्पर्धा हो रही है।

3. आवश्यकता एवं उद्देश्य

प्राथमिक शिक्षा को मातृभाषा में दिए जाने के निर्णय के पीछे सरकार का यह उद्देश्य था कि अधिक से अधिक छात्र भाषा के कारण स्कूल से नामांकन रद्द ना कराएँ बल्कि अपनी शिक्षा जारी रखें और शिक्षा का विकास संभव हो सके। शिक्षा का विकास से तात्पर्य है कि शिक्षा में गुणवत्ता को बढ़ावा मिले। भाषा सीखना केवल महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि भाषा को समझना तथा उसका उपयोग करते रहना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा का महत्त्व सभी विद्यार्थियों में बिना किसी धर्म, जाति, संप्रदाय के समन्वय से भी स्थापित होता है।

4. प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होने के परिणाम

भारत एक विकासशील राष्ट्र है और वैश्विक स्तर पर ज्ञान के स्रोत के रूप में जाना जाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। पिछले कुछ वर्षों से, भारत सरकार पारंपरिक शिक्षा मॉडल को आधुनिक रूप में बदलने के लिए काम कर रही है, जिसका

उद्देश्य सबसे बड़ा ज्ञान स्रोत बनना है। इसे संभव बनाने की प्रक्रिया में, शिक्षा में मातृभाषा के महत्व की खोज की गई है। इस खोज के कारण भारतीय स्कूली पाठ्यक्रम के तहत बुनियादी शिक्षा में मातृभाषा को शामिल किया गया है। इसने छात्रों के लिए नए दरवाजे खोले हैं और उन्हें अधिक प्रभावी ढंग से सीखने में सक्षम बनाया है। इसने पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों के बीच की खाई को पाटने में भी मदद की है।

5. उपसंहार

प्राथमिक शिक्षा का ज्ञान अपनी मातृभाषा में ही प्राप्त करने से हम सब कुछ आसानी से समझ पाएँगे और इसे संभालकर रख पाएँगे। छात्रों को अगर घर और विद्यालय में सिर्फ एक ही भाषा का माहौल मिले तो उसके अंदर समाजीकरण तथा संप्रेषण से संबंधित गतिविधियों के लिए आत्मविश्वास जागृत होता है। अगर किसी छात्र को भाषा ही समझ में नहीं आती है तो उसकी सीखने की गति मंद होती चली जाती है। शिक्षा का संपूर्ण ज्ञान केवल अपनी ही मातृभाषा मिलने से छात्रों का भविष्य और अधिक उज्ज्वल हो सकता है।

मैं भारत कहलाता

चिंतन पटेल
अकादमिक सहयोगी

विश्व के उत्तरी पूर्व में, सिंधु घाटी की सभ्यता से,
मानवता के सिद्धांतों पर, हिमालय की गोद में बसा,
एक महान देश, मैं भारत कहलाता।

वेदों के वरदान से, आर्यव्रत की भूमि पर,
गीता के जीवन सार से,
धर्म, कर्म और सत्य की राह दिखाता,
संस्कारों और परंपराओं से जग उजियाता,
भरत के नाम से, मैं भारत कहलाता।

सम्राट अशोक की चाणक्य नीति से,
शिवाजी के स्वराज घोष में,
प्रताप की वीरता से, झाँसी के रण तक,
वीरों के पराक्रम की गाथाओं से विख्यात,
मैं भारत कहलाता।

गाँधी, पटेल और सुभाष के संग संघर्ष की राह पर,
आंबेडकर और अहिंसा ने एकता को सूत्र में बांधा,
भगत और सुखदेव ने बलिदान का परचम लहराया,
अनगिनत सपूतों की आहुति से आज़ाद,
मैं भारत कहलाता।

सांस्कृतिक वैभव मेरी संपन्नता,
अद्भुत सार्थक मेरी विविधता,
सेवा, समर्पण और समभाव का संदेश फैलाता,
नारायणी-सी नारी को शक्ति स्वरूप पूजता,
जाति, भ्रांति के भ्रम से परे,
वसुधैव कुटुंबकम के आदर्श को संजोता,
मैं भारत कहलाता।

टाटा, बिड़ला ने व्यापार बढ़ाया,
साहित्य सागर रविंद्रनाथ ने गीतांजलि रचाया,
पहचान है हिंदी हमारी, मुंशी प्रेमचंद ने सिखाया,
रहीम के दोहों से कला की समृद्धि को
आत्मसात करता,
मैं भारत कहलाता।

विक्रम के विज्ञान से, किसान के अनुसंधान में,
श्वेत क्रांति का युग यह,
मैं चंद्रयान की सफलता को पाता,
नवाचार और विकास के निरंतर बढ़ते पथ पर,
गरीब उत्थान से विश्व कल्याण तक,
आधुनिक दौर में विवेकानंद के
जीवन चरित्र को चरितार्थ करता,
मैं भारत कहलाता।

अविरत आशाओं से भरा,
अविचल संभावनाओं से लबालब,
गौरवशाली इतिहास से सीख
नए समय में खुद को ढालता,
विश्वगुरु की फलक पर बैठा हर मन में बसता,
जांबाज़ जवानों के आगे नतमस्तक,
तीन रंगों से प्रकट होता,
देश एक महान, मैं भारत कहलाता,
मैं भारत कहलाता।

ए.आई. (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) और अनुवाद कार्य

बिन्दु डोडिया जोशी
सहायक प्रबंधक-हिंदी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) ने अनुवाद के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया है। एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना पहले बहुत श्रमसाध्य कार्य हुआ करता था, लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उदय के साथ, अनुवाद करना बहुत आसान और तेज हो गया है। इस लेख में, हम 15 विभिन्न उपकरणों का पता लगाएंगे जो भाषा अनुवाद को सुविधाजनक बनाने के लिए एआई का उपयोग करते हैं और चार तरीके जो इसे संभव बनाते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुवाद का परिचय

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुवाद, कंप्यूटर एल्गोरिदम और प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके पाठ, भाषण या छवियों को एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने की प्रक्रिया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) में तीव्र प्रगति के साथ, मशीनी अनुवाद अधिक सटीक, कुशल और व्यापक रूप से प्रयुक्त होने लगा है, जिससे लोगों के लिए सीमाओं और संस्कृतियों के पार संवाद और सहयोग करना काफी सरल बन गया है। आज, एआई अनुवाद का उपयोग विभिन्न उद्योगों में किया जाता है, जैसे ई-कॉमर्स, यात्रा, मनोरंजन और शिक्षा, ताकि व्यापक दर्शकों तक पहुँच बनाई जा सके और ग्राहकों को बहुभाषी सहायता उपलब्ध कराई जा सके।

पारंपरिक अनुवाद विधियां, जैसे कि मानव अनुवादकों द्वारा हस्तलिखित अनुवाद, जैसी प्रक्रिया समय मांग लेती थी और प्रायः अंतिम उत्पाद में त्रुटियां या विसंगतियां पैदा करती थीं। परंतु एआई अनुवाद के साथ, व्यवसाय समय और धन की बचत कर सकते हैं, साथ ही अपने अनुवाद की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं और त्रुटियों के जोखिम को कम कर सकते हैं। एआई अनुवाद एक तेज़ और अधिक लागत प्रभावी विकल्प प्रदान करता है, खासकर बड़े और दोहराव वाले कार्यों के लिए। एआई एल्गोरिदम को स्रोत भाषा का विश्लेषण करते हुए समझने तथा मशीन लर्निंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण तकनीकों की मदद से लक्षित भाषा में अनुवाद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुवाद के सामने मानव अनुवादक

एआई अनुवाद के अनेक लाभों के बावजूद, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि बेहतर अनुवाद के लिए यह एक आदर्श समाधान नहीं है। एआई एल्गोरिदम में अभी भी सीमाएं हैं और वे हमेशा मानव भाषा की सांस्कृतिक और भाषाई बारीकियों को समझने में अभी भी सक्षम नहीं हैं।

- एआई एल्गोरिदम मानव भाषा की सांस्कृतिक और भाषाई बारीकियों को समझने में सक्षम नहीं हैं, जिसके कारण गलत अनुवाद हो सकते हैं।
- आमतौर पर, एआई अनुवाद आधिकारिक या कानूनी दस्तावेजों के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं, जहां सटीकता सबसे महत्वपूर्ण होती है।
- प्रशिक्षण प्रक्रिया के दौरान उपयोग किए गए डेटासेट के आधार पर, एआई अनुवाद पूर्वाग्रह से प्रभावित हो सकते हैं।
- एआई अनुवादों में अक्सर रचनात्मकता और शैली का अभाव होता है जो अनुवादों को अधिक स्वाभाविक और आकर्षक बनाने के लिए आवश्यक है।
- एआई अनुवाद महंगा हो सकता है, जो प्रयुक्त उपकरणों और परियोजना के आकार और जटिलता पर निर्भर करता है।
- एआई अनुवाद में त्रुटियाँ होने की संभावना हो सकती है, विशेषकर यदि स्रोत पाठ लंबा और जटिल हो।

मशीन अनुवाद (एमटी)

यह स्रोत पाठ को स्वचालित रूप से लक्ष्य भाषा में परिवर्तित करने के लिए सॉफ्टवेयर टूल और एल्गोरिदम का उपयोग करता है।

मशीन अनुवाद के पक्ष और विपक्ष

हाल के वर्षों में मशीनी अनुवाद में काफी सुधार हुआ है, लेकिन अभी भी इसकी अपनी सीमाएं हैं और यह हमेशा सटीक नहीं होता, विशेष रूप से जटिल या तकनीकी पाठ के लिए। ऐसे मामलों में, मशीन और मानव अनुवाद के संयोजन का उपयोग करना, या अधिक सटीक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील अनुवाद के लिए मानव अनुवादकों पर निर्भर रहना उचित है। मशीनी अनुवाद का मुख्य लाभ इसकी गति और दक्षता है। यह बड़ी मात्रा में पाठ या भाषण का शीघ्रता से अनुवाद कर सकता है, जिससे यह सरल या दोहराए जाने वाले कार्यों के लिए आदर्श बन जाता है, जैसे उत्पाद विवरण या ग्राहक सेवा प्रतिक्रियाओं का अनुवाद करना।

मशीन लर्निंग आधारित अनुवाद

मशीन लर्निंग आधारित अनुवाद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अनुवाद की एक विधि है जो अनुवाद प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए एल्गोरिदम और मॉडल का उपयोग करती है। यह मशीन लर्निंग सिद्धांतों द्वारा संचालित प्रौद्योगिकी है, जहां कंप्यूटर स्पष्ट रूप से प्रोग्राम किए बिना डेटा से सीखते हैं।

मशीन लर्निंग आधारित अनुवाद कैसे काम करता है

मशीन लर्निंग एल्गोरिदम को विभिन्न भाषाओं में शब्दों और वाक्यांशों के बीच पैटर्न और संबंधों की पहचान करने के लिए समानांतर टेक्स्ट डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है। इस ज्ञान का उपयोग नए पाठ का अनुवाद करने के लिए किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप सटीकता और दक्षता में सुधार होता है। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम को व्यवसायों और उद्योगों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलित और परिष्कृत किया जा सकता है।

मशीन लर्निंग अनुवाद के पक्ष और विपक्ष:

यह एक बहुमुखी और शक्तिशाली उपकरण है, जिसमें समय के साथ अधिक परिष्कृत और सटीक बनने की क्षमता है।

हालाँकि, यह एक सतत प्रक्रिया है और एल्गोरिदम को बेहतर बनाने के लिए बड़ी मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है।

न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन (एनएमटी)

न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन (एनएमटी) एआई अनुवाद की एक विधि है जो पाठ और भाषण के अर्थ का अनुवाद करने के लिए गहन शिक्षण तकनीकों और तंत्रिका नेटवर्क का उपयोग करती है। पारंपरिक मशीन अनुवाद विधियों की तुलना में अधिक सटीक और प्राकृतिक-ध्वनि वाले अनुवाद प्रदान करने की अपनी क्षमता के कारण यह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और पाठ अनुवाद के संबंध में एनएलपी कैसे काम करता है ?

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) कृत्रिम बुद्धिमत्ता की एक शाखा है जो मानव भाषा को समझने, उसका विश्लेषण करने और उसे बनाने पर केंद्रित है। इसमें सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन, स्वचालित ग्राहक सेवा और पाठ अनुवाद (टेक्स्ट ट्रांसलेशन) सहित कई तरह के अनुप्रयोग हैं।

एनएलपी तकनीकों का उपयोग स्रोत पाठ का विश्लेषण करके और नकारात्मक, संयोजन और अन्य जटिल संरचनाओं जैसे महत्वपूर्ण अर्थ तत्वों की पहचान करके मशीन अनुवाद की सटीकता और प्रवाह को बेहतर बनाने के लिए किया जा सकता है। यह मशीन अनुवाद प्रणाली को अधिक सटीक और प्राकृतिक अनुवाद उत्पन्न करने की अनुमति देता है। जब अन्य एआई अनुवाद विधियों के साथ संयोजन में उपयोग किया जाता है, तो NLP और पाठ अनुवाद एक व्यापक और सटीक भाषा अनुवाद समाधान प्रदान कर सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुवाद उपकरण

एआई अनुवाद के लिए कई अलग-अलग सॉफ्टवेयर और उपकरण उपलब्ध हैं, जिनमें ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, डेस्कटॉप सॉफ्टवेयर और मोबाइल ऐप शामिल हैं। इनमें से कुछ समाधान मशीन अनुवाद का उपयोग करते हैं, जबकि अन्य मशीन और मानव अनुवाद के संयोजन का उपयोग करते हैं। कुछ उपकरणों में अनुवाद स्मृति जैसी विशेषताएं भी शामिल होती हैं, जो भविष्य में तेज और अधिक कुशल अनुवाद के लिए पिछले अनुवादों को सहेज लेती है, तथा शब्दावली प्रबंधन, जो एकाधिक अनुवादों में एकरूपता और सटीकता सुनिश्चित करने में मदद करता है।

एआई अनुवाद के लिए सॉफ्टवेयर या टूल चुनते समय, सटीकता, गति, लागत और आवश्यक समर्थन और अनुकूलन के स्तर जैसे कारकों पर विचार करना महत्वपूर्ण है।

अनुवाद के लिए आप जिन उपकरणों का उपयोग कर

सकते हैं उनमें से कुछ वर्णित विभिन्न विधियों का मिश्रण हैं; 1) गूगल अनुवाद, 2) डीपल, 3) माइक्रोसॉफ्ट अनुवादक, 4) ताया, 5) रिवर्सो, 6) मेमोक, 7) सिस्ट्रान, 8) स्मार्टलिंग, 9) क्राउडिन, 10) अमेज़न अनुवाद, 11) स्मार्टकैट, 12) आईट्रांसलेट, 13) एलेक्सा अनुवाद, 14) चैटजीपीटी, 15) एसईओ.एआई

1. गूगल अनुवाद

यह एक क्लाउड-आधारित समाधान है जो उच्च-गुणवत्ता वाले अनुवाद प्रदान करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक का उपयोग करता है, जिससे उपयोगकर्ता विभिन्न भाषाओं में प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं। चाहे आप भाषा समर्थन की आवश्यकता वाले व्यवसायी हों, या किसी नए देश की यात्रा करने वाले आकस्मिक उपयोगकर्ता हों, गूगल अनुवाद एक त्वरित और सुविधाजनक समाधान है।

गूगल अनुवाद की भाषा लाइब्रेरी में 100 से अधिक भाषाओं के लिए समर्थन शामिल है, जो इसे अत्यधिक बहुमुखी और उपयोगी उपकरण बनाता है।

2. डीपल

डीपल ट्रांसलेटर एक न्यूरल मशीन अनुवाद सेवा है जिसे अगस्त 2017 में लॉन्च किया गया था। अनुवाद प्रणाली को लिंगुई के भीतर विकसित किया गया था और शुरुआत में सात यूरोपीय भाषाओं के बीच अनुवाद की पेशकश की गई थी और तब से इसे 31 भाषाओं का समर्थन करने के लिए विस्तारित किया गया है।

यह कन्वोल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क (सीएनएन) के साथ एक स्वामित्व एल्गोरिथ्म का उपयोग करता है, जिसे लिंगुई डेटाबेस के साथ प्रशिक्षित किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप अन्य सेवाओं की तुलना में अनुवाद की ध्वनि अधिक प्राकृतिक होती है।

विशेषताएँ;

- 31 भाषाओं के बीच अनुवाद की सुविधा उपलब्ध है
- कन्वोल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क (सीएनएन) के साथ स्वामित्व एल्गोरिदम
- अन्य सेवाओं की तुलना में अधिक स्वाभाविक लगने वाले अनुवाद
- प्रति अनुवाद 5,000 वर्ण सीमा वाला निःशुल्क संस्करण
- एपीआई एक्सेस और सॉफ्टवेयर प्लग-इन के साथ सशुल्क सदस्यता
- ब्लाइंड टेस्ट और बीएलईयू स्कोर में प्रतिस्पर्धियों से आगे निकलने का दावा

3. माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर

इसका उपयोग व्यवसायों द्वारा अपनी पहुँच को वैश्विक बनाने और दुनिया भर के ग्राहकों से जुड़ने के लिए किया जा सकता है। यह टूल कस्टम ट्रांसलेटर का उपयोग करके अनुवाद को कस्टमाइज़ करने का विकल्प भी प्रदान करता है।

माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर के कुछ उपयोग मामलों में ग्राहक सहायता वर्कफ़्लो के साथ एकीकरण, लाइव और दूरस्थ संचार के लिए भाषण अनुवाद, वेबसाइटों का स्थानीयकरण और वैश्विक कार्यबल के बीच संचार में सुधार शामिल हैं। एचपी, एडॉब, लिंक्डइन, एत्सी और ट्विटर जैसी कंपनियाँ विभिन्न उद्देश्यों के लिए माइक्रोसॉफ्ट ट्राँसलेटर का उपयोग कर रही हैं।

विशेषताएँ: पाठ अनुवाद, दस्तावेज़ अनुवाद, वेबसाइटों का स्थानीयकरण, अनुप्रयोगों, वेबसाइटों और उपकरणों के लिए बहुभाषी समर्थन, रेस्ट एपीआई कॉल के माध्यम से अनुवाद, उन्नत न्यूरल मशीन अनुवाद का उपयोग, ग्राहक सहायता वर्कफ़्लो के साथ एकीकरण, लाइव और दूरस्थ संचार के लिए भाषण अनुवाद।

4. ताया

ताया अपने एआई-सहायता प्राप्त व्यावसायिक सामग्री स्थानीयकरण समाधान के साथ स्थानीयकरण के लिए एक आधुनिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह नए बाजारों में विस्तार करने के इच्छुक व्यवसायों के लिए एक व्यवसायी स्थानीयकरण उपकरण है।

ताया प्लेटफॉर्म एक स्व-अनुवाद सेवा से सुसज्जित है, जो आपको अपने दस्तावेजों को तेजी से अनुवाद करने में मदद करने के लिए एक अभिनव ऑनलाइन एआई अनुवाद उपकरण तक पहुंच प्रदान करता है। यह प्लेटफॉर्म 70 से अधिक फ़ाइल प्रारूपों और 97 भाषाओं का समर्थन करता है, तथा अनुवाद प्रक्रिया के दौरान प्रारूपण और डिज़ाइन को संरक्षित रखा जाता है।

5. रिवर्सो

रिवर्सो के साथ, आप कोई टेक्स्ट दर्ज कर सकते हैं या कोई फ़ाइल अपलोड कर सकते हैं और कुछ ही सेकंड में एक कुशल अनुवाद प्राप्त कर सकते हैं, जिसे आप एकीकृत समानार्थी शब्द और शब्दकोश टूल के साथ ठीक कर सकते हैं। यह प्लेटफ़ॉर्म वर्ड, पावरपॉइंट , पीडीएफ़ और अन्य जैसी फ़ाइलों के अधिकांश फ़ॉर्मेटिंग को सुरक्षित रख सकता है। रिवर्सो कॉर्पोरेट ट्रांसलेटर किसी भी डिवाइस पर ब्राउज़र के माध्यम से उपलब्ध है और जनरल इलेक्ट्रिक, लोरियल और एचएसबीसी जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा विश्वसनीय है।

विशेषताएँ:

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा संचालित वेब-आधारित समाधान
- पाठ या फ़ाइलों का त्वरित अनुवाद 26 भाषाओं में
- रिवर्सो समानार्थी शब्द और शब्दकोश टूल के साथ फाइन-ट्यूनिंग उपलब्ध है
- वर्ड, पावरपॉइंट , पीडीएफ और अन्य फ़ाइल स्वरूपों का समर्थन करता है
- ब्राउज़र के माध्यम से किसी भी डिवाइस पर उपलब्ध
- प्राकृतिक भाषा खोज इंजन का उपयोग करके वास्तविक जीवन के उदाहरणों के साथ प्रासंगिक अनुवाद
- एआई-आधारित शब्दकोष (रिवर्सो कॉन्टेक्स्ट) शब्दों और अभिव्यक्तियों का अनुवाद करने और सीखने के तरीके को पुनर्परिभाषित कर रहा है
- अरबी, जर्मन, स्पेनिश, फ्रेंच, हिब्रू, इतालवी, जापानी, डच, पोलिश, पुर्तगाली, रोमानियाई, रूसी, स्वीडिश, तुर्की, यूक्रेनी और चीनी सहित कई भाषाओं में उपलब्ध है
- शब्द, अभिव्यक्ति और वाक्यांश सूचकांक के साथ प्रासंगिक शब्दकोश
- व्याकरण जाँच अंग्रेजी, फ्रेंच और स्पेनिश में उपलब्ध है
- समानार्थी शब्द और संयुग्मन भी उपलब्ध हैं
- फिल्मों और टीवी श्रृंखलाओं के लिए उपशीर्षकों हेतु रिवर्सो कॉर्पोरेट

6. मेमोक

मेमोक एक एआई-सहायता प्राप्त अनुवाद उपकरण नहीं है, बल्कि एक शक्तिशाली वर्कफ़्लो अनुवाद प्रबंधन प्रणाली है जो उद्यमों, भाषा सेवा प्रदाताओं और अनुवादकों की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

इसे उद्यमों, भाषा सेवा प्रदाताओं और अनुवादकों की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया गया है, जिससे उन्हें आसानी से अपनी परियोजनाओं का समन्वयन और ट्रैकिंग करने में सहायता मिलती है।

यह लचीले वर्कफ़्लो प्रबंधन, स्वचालित गुणवत्ता जांच, उन्नत रिपोर्ट, अनुकूलनशीलता और कनेक्टिविटी जैसी सुविधाएँ प्रदान करता है।

7. सिस्ट्रान

सिस्ट्रान ट्रांसलेट प्रो एक मशीन अनुवाद उपकरण है जो विभिन्न उद्योगों, जैसे कानूनी, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, वित्त, व्यवसाय, प्रौद्योगिकी, आईटी, ऊर्जा, पेटेंट और सहयोग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशिष्ट डोमेन अनुवाद समाधान प्रदान करता है ।

मशीन अनुवाद के क्षेत्र में 55 से अधिक वर्षों के नवाचार के साथ, सिस्ट्रान विभिन्न क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सटीक भाषाई समाधान प्रदान करने में सक्षम है।

यह टूल दस्तावेज़ अनुवाद और एपीआई अनुवाद के साथ-साथ अनुवाद प्रक्रिया को सहज बनाने के लिए अन्य टूल के साथ एकीकरण भी प्रदान करता है। यह 55 उपलब्ध भाषाओं का समर्थन करता है, और इसमें असीमित पाठ अनुवाद और डोमेन-विशिष्ट अनुवाद जैसी कई विशेषताएं हैं।

8. स्मार्टलिंग

स्मार्टलिंग एक अनुवाद प्रबंधन प्लेटफॉर्म है जिसका उद्देश्य कंपनियों को बहुभाषी वेबसाइट, विपणन अभियान, वेब और मोबाइल उत्पाद और ग्राहक अनुभव बनाने में मदद करना है।

यह प्लेटफॉर्म क्लाउड-आधारित है, जिसमें एआई-संचालित सामग्री और वर्कफ़्लो प्रबंधन है और इसमें दृश्य संदर्भ, गुणवत्ता जांच, लचीले वर्कफ़्लो, वास्तविक समय रिपोर्टिंग और अन्य जैसी विशेषताएं हैं।

उपयोगकर्ता या तो अपने स्वयं के अनुवादकों के साथ अनुवाद कर सकते हैं या स्मार्टलिंग के इन-हाउस अनुवादकों का उपयोग कर सकते हैं, जिनके पास ब्रांड की स्टाइल गाइड और शब्दावली तक पूरी पहुँच है। प्लेटफ़ॉर्म मानव अनुवाद सेवाएँ या ब्रांड के लिए अनुकूलित तंत्रिका मशीन अनुवाद भी प्रदान करता है।

9. क्राउडिन

क्राउडिन एक क्लाउड-आधारित स्थानीयकरण उपकरण है जिसे तकनीकी कंपनियों के लिए उनकी बहुभाषी सामग्री को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

यह स्थानीयकरण के लिए एक एकल कंपनी-व्यापी समाधान प्रदान करता है जो प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करता है और टीम के सदस्यों और अनुवादकों के साथ वास्तविक समय के सहयोग की अनुमति देता है। स्वचालन के साथ, आपकी प्रगति कभी भी विलंबित अनुवाद के कारण विलंबित नहीं होगी।

10. अमेज़न अनुवाद

अमेज़न ट्रांसलेट अमेज़न वेब सर्विसेज़ द्वारा प्रदान की जाने वाली एक मशीन अनुवाद सेवा है।

यह उन डेवलपर्स के लिए डिज़ाइन किया गया है जिन्हें बहुभाषी वेबसाइटों और अनुप्रयोगों, उपयोगकर्ता-जनित सामग्री या वास्तविक समय संचार के लिए भाषाओं के बीच पाठ का अनुवाद करने की आवश्यकता होती है। यह सेवा सटीक और स्वाभाविक लगने वाले अनुवाद प्रदान करने के लिए गहन शिक्षण एल्गोरिदम का उपयोग करती है।

यह एक निःशुल्क स्तर प्रदान करता है जो आपको पहले अनुवाद अनुरोध के बाद पहले 12 महीनों के लिए प्रति माह 2 मिलियन अक्षरों तक का अनुवाद करने की अनुमति देता है।

11. स्मार्टकैट

स्मार्टकैट एक ऑल-इन-वन अनुवाद प्लेटफॉर्म है जो आपके व्यवसाय को बहुभाषी बनाने के लिए एआई और मानव सहयोग को जोड़ता है। यह प्लेटफॉर्म 80% सटीकता के साथ स्वचालित अनुवाद प्रदान करने के लिए एआई का उपयोग करता है, जो हर बार उपयोग करने पर अधिक सटीक हो जाता है।

इसमें एक भाषाविद् बाज़ार भी है जहाँ आप अनुवादकों को नियुक्त कर सकते हैं और एक यूआई है जो इसका उपयोग करना आसान बनाता है। स्मार्टकैट ने ग्रिऑनलाइन, टॉपकॉन और वेलकम पिकअप जैसी कंपनियों को उनकी अनुवाद उत्पादकता बढ़ाने और आसानी से बहुभाषी सामग्री वितरित करने में मदद की है।

12. आईट्रांसलेट

आईट्रांसलेट ऐप एक भाषा अनुवाद टूल है जो आपको 100 से अधिक भाषाओं में संवाद करने में मदद करता है। इसके एआई-संचालित लेखन सहायक, टाइपराइट के साथ, आप विभिन्न भाषाओं में पाठ लिख और अनुवाद कर सकते हैं। ऐप में एक टेक्स्ट मोड है जिसमें ऑटोकम्प्लीट और वैकल्पिक अनुवाद हैं, जिससे आप यथासंभव सटीक अनुवाद प्राप्त कर सकते हैं। वॉयस मोड आपको बोलना शुरू करने और ऐप को वास्तविक समय में आपकी आवाज़ का अनुवाद करने की अनुमति देता है।

इसके अलावा, अपने फोन के कैमरे से आप किसी भी टेक्स्ट का तुरंत अनुवाद कर सकते हैं। यह ऐप कई लोकप्रिय भाषाओं में ऑफ़लाइन भी उपलब्ध है, इसलिए आप इंटरनेट कनेक्शन न होने पर भी टेक्स्ट का अनुवाद कर सकते हैं। कीबोर्ड अनुवाद सुविधा आपको अपने पसंदीदा मैसेजिंग ऐप में तुरंत अनुवाद प्राप्त करने की सुविधा देती है, जिससे दुनिया भर में दोस्तों के साथ संपर्क में रहना आसान हो जाता है।

13. एलेक्सा अनुवाद

एलेक्सा ट्रांसलेशन्स एक कंपनी है जो कानूनी, वित्तीय और प्रतिभूति उद्योगों के लिए एआई-संचालित अनुवाद समाधान प्रदान करती है।

वे एक मशीन अनुवाद उपकरण प्रदान करते हैं जो विशेष रूप से कनाडाई कानूनी और वित्तीय बाजारों के लिए प्रशिक्षित है और गुणवत्ता और गति के साथ जटिल, उद्योग-विशिष्ट अनुवाद प्रदान करता है।

अपने सॉफ्टवेयर के अतिरिक्त, उनके पास प्रमाणित अनुवादकों की एक टीम भी है जो कानूनी राय, प्रमाणन और नोटरीकरण सहित कई प्रकार की सेवाएं प्रदान करती है।

उनके अनुवादकों को उद्योग में अनुभव है और अपनी गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कठोर चयन मानदंडों से

गुज़रना पड़ता है। कंपनी ग्राहक संतुष्टि को प्राथमिकता देती है और क्लाइंट अनुभव को बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयास करती है। वे सेवा और गुणवत्ता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए पहचाने जाते हैं और उन्हें कई पुरस्कार और प्रमाणपत्र मिले हैं।

एलेक्सा ट्रांसलेशन के पीछे की तकनीक को उपयोगकर्ता-अनुकूल होने के साथ-साथ जटिल, उद्योग-विशिष्ट अनुवादों को संभालने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

उनका अनुवाद उपकरण कनाडाई फ्रेंच, स्पेनिश, पुर्तगाली और सरलीकृत चीनी में प्रशिक्षित है, और उनके सर्वर कनाडा में होस्ट किए गए हैं। वे एंड-टू-एंड सेवाएं प्रदान करते हैं और लागत बचत, परियोजनाओं में स्थिरता और तेज़ टर्नअराउंड समय प्रदान करते हैं। कंपनी नवाचार को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित है और उद्योग की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने उत्पाद को लगातार अपडेट करती है।

14. चैटजीपीटी

चैटजीपीटी मुख्य रूप से एक अनुवाद उपकरण नहीं है, बल्कि अनुवाद कार्य एक अन्य तत्व मात्र है जिसके लिए लाखों उपयोगकर्ता इस प्लेटफॉर्म का उपयोग कर सकते हैं। यह ओपनएआई द्वारा विकसित एक शक्तिशाली भाषा मॉडल है जिसे विविध प्रकार के पाठों और भाषाओं पर प्रशिक्षित किया गया है।

एक भाषा में स्रोत पाठ प्रदान करके, चैटजीपीटी दूसरी भाषा में संगत अनुवाद उत्पन्न कर सकता है, जिससे यह भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करने और विभिन्न संस्कृतियों के बीच संचार को सुविधाजनक बनाने के लिए एक आदर्श उपकरण बन जाता है।

अनुवाद उपकरण के रूप में चैटजीपीटी का उपयोग करते समय विशेषताएँ:

- चैटजीपीटी कई भाषाओं का समर्थन करता है ; चैटजीपीटी एक बड़ा भाषा मॉडल है जिसे टेक्स्ट डेटा की विविध रेंज पर प्रशिक्षित किया गया है, जिससे यह कई भाषाओं में टेक्स्ट को समझने और उत्पन्न करने में सक्षम है। हमारे परीक्षण में यह 95 से अधिक भाषाओं का समर्थन करता है।
- न्यूरल मशीन अनुवाद: चैटजीपीटी एक भाषा से दूसरी भाषा में पाठ का अनुवाद करने के लिए नवीनतम न्यूरल मशीन अनुवाद तकनीक का उपयोग करता है, जो उच्च सटीकता और प्रवाह प्रदान करता है।
- वास्तविक समय अनुवाद: चैटजीपीटी वास्तविक समय में अनुवाद करने में सक्षम है, जिससे यह त्वरित और आसान अनुवाद के लिए एक तेज और सुविधाजनक उपकरण बन जाता है।
- उपयोगकर्ता के अनुकूल: चैटजीपीटी में एक सरल और सहज इंटरफ़ेस है जो तकनीकी और गैर-तकनीकी उपयोगकर्ताओं के लिए आसान बनाता है।
- यदि आपको सैकड़ों या हजारों सामग्री का अनुवाद करना है तो यह इष्टतम नहीं है, क्योंकि इसमें कोई एपीआई नहीं है

15. एसईओ.एआई

एसईओ.एआई एक एआई-संचालित सामग्री निर्माण उपकरण है जो विपणक और लेखकों को अधिक कुशलता से एसईओ-अनुकूल सामग्री बनाने में मदद करता है।

यह अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन और डेनिश सहित 50 से अधिक भाषाओं में काम करता है।

यह टूल समय लेने वाले और दोहराव वाले एसईओ कार्यों में सहायता के लिए एआई का उपयोग करता है, जैसे सामग्री लिखना, कीवर्ड पर शोध करना और प्रतिस्पर्धियों का विश्लेषण करना।

यह हेडलाइन, आउटलाइन और विषयों के लिए सुझाव प्रदान करता है जो रचनात्मक और खोज इंजन के लिए अनुकूलित दोनों हैं। एआई-जनरेटेड टेक्स्ट का उपयोग बुनियादी पैराग्राफ लिखने के लिए भी किया जा सकता है। यह टूल उपयोगकर्ताओं को उनकी सामग्री की गुणवत्ता को समझने और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करने के लिए एक वास्तविक समय एसईओ स्कोर भी प्रदान करता है।

एआई अनुवाद के लाभ

पारंपरिक अनुवाद की तुलना में एआई अनुवाद कई लाभ प्रदान करता है, जिसमें तेजी से काम पूरा करना, उच्च सटीकता और स्थिरता, तथा कम श्रम लागत शामिल है।

इसके अलावा, एआई अनुवाद को विभिन्न भाषाओं और संदर्भों में लागू किया जा सकता है, जिससे किसी भी पाठ को किसी भी भाषा में शीघ्रता और सटीकता से अनुवाद करना संभव हो जाता है।

एआई अनुवाद विशेष रूप से बड़ी मात्रा में पाठ को संभालने के लिए उपयुक्त है, क्योंकि यह प्रक्रिया काफी हद तक स्वचालित है और इसमें पारंपरिक अनुवाद विधियों की तरह विशेषज्ञता या मैनुअल हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं होती है।

स्वचालित अनुवाद की सीमाएँ

स्वचालित अनुवाद अक्सर पारंपरिक मानवीय अनुवाद की तुलना में कम सटीक हो सकता है, और जटिल या मुहावरेदार भाषा का अनुवाद करते समय बारीकियों का अभाव हो सकता है।

इसके अतिरिक्त, स्वचालित अनुवाद हमेशा मूल पाठ की सूक्ष्मता और सांस्कृतिक संदर्भ को पकड़ने में सक्षम नहीं हो सकता है, जिससे मशीन द्वारा अनुवादित आउटपुट को प्रकाशित करने या किसी औपचारिक सेटिंग में उपयोग करने से पहले उसकी समीक्षा और संपादन करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

1. पारंपरिक मानवीय अनुवाद की तुलना में कम सटीक
2. जटिल या मुहावरेदार भाषा का अनुवाद करते समय सूक्ष्मता का अभाव
3. मूल पाठ के संदर्भ और सांस्कृतिक तत्वों को शामिल नहीं किया जा सकता
4. मशीन-अनुवादित आउटपुट की समीक्षा और संपादन की आवश्यकता

मानव अनुवादकों का महत्व

एआई अनुवाद में प्रभावशाली प्रगति के बावजूद, मानव अनुवादक भाषा अनुवाद प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा बने हुए हैं। एआई अनुवाद अभी भी मानव-अनुवादित सामग्री के साथ आने वाली सटीकता, बारीकियों और सांस्कृतिक समझ को दोहराने में सक्षम नहीं है। कई मामलों में, एआई अनुवाद को जांचने, संपादित करने और अनुवाद की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए अभी भी मानवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।

इसके अलावा, एआई अनुवाद (कम से कम अभी तक) मानव अनुवादक के साथ आने वाली रचनात्मकता और संदर्भ की जगह नहीं ले सकता है। एक अच्छे अनुवाद के लिए सिर्फ सही शब्दों और वाक्यांशों से अधिक की आवश्यकता होती है, और मानव अनुवादकों को स्रोत पाठ के आशय, लहजे और सांस्कृतिक संदर्भ को समझने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इन कारणों से, यह विचार करना महत्वपूर्ण है कि उच्चतम गुणवत्ता वाले अनुवाद प्राप्त करने के लिए एआई अनुवाद और मानव अनुवादक एक साथ कैसे काम कर सकते हैं।

(संकलित)

खूबसूरत

प्रतीक पटेल
मल्टी टास्किंग स्टाफ

फिर साथ होगा ये शमा,
जुड जाएगी फिर रास्ता....
खाली किताबें, भर भी दो,
दिल की जुबान, तुम बोल दो...
खूबसूरत है, खुला आसमान,
हाँ खूबसूरत है, हर इक लम्हा...

खूबसूरत है मेरा ये जहाँ...

कल वक्त था, था खुशनुमा,
फिर छाएगा, वो खुशनुमा...
होगी वो बातें, वो मुलाकातें,
मिल जाएंगे यार, होगी फिर बहार..
खूबसूरत है, खुला आसमान,
हाँ खूबसूरत है, हर इक लम्हा..

खूबसूरत है मेरा ये जहाँ...

आरिगातो-जापान (यात्रा संस्मरण)

श्रीमती प्रिया यश प्रसाद
माँ, आर्यन प्रसाद पीजीपी-2020

"इस समय सुबह के पाँच बजकर बीस मिनट हुए हैं। हम दस मिनट में टोकियो के हनेडा एयरपोर्ट पर लैंड करने वाले हैं। कृपया अपनी सीट पर वापस आ जाएँ और कुर्सी की पेटी बाँध लें। धन्यवाद !!" ये सुनकर दिल ख़ुशी से उछलने लगा। बरसों का सपना सच होने जा रहा था। जापान की धरती पर कदम पड़ने वाले थे। कई विकसित देशों की खूबियों का आकलन करने के बाद जापान को सबसे बेहतर पाया इसलिए पहली विदेश यात्रा के लिए हमने इसे चुना। एयरपोर्ट पर उतरते ही इमिग्रेशन की प्रक्रिया पूरी करके जब हमने कॉफ़ी पी तो आठ घंटे हवाई जहाज के सफ़र की थकान जैसे गायब ही हो गई, शायद टोकियो पहुँचने की ख़ुशी के कारण !! एयरपोर्ट से ही मोबाइल के सिम, जापानी मुद्रा 'येन' और बुलेट ट्रेन की टिकट लेने के बाद हम आगे के सफ़र की ओर बढ़ चले। हमारी यात्रा का पहला पड़ाव 'ओसाका' शहर था। ओसाका में हमने "उमेदा स्काई बिल्डिंग" के चालीसवें माले से पूरा शहर देखा, नाम्बा में 'यासाका' मंदिर जो किसी ड्रेगन के मुखौटे की तरह लगता है, उसे देखा। 'योदोबाशी' जो जापान का सबसे बड़ा इलेक्ट्रोनिक्स बाज़ार है, उसके साथ 'ओसाका कैसल और 'दोतोनबोरी' में छोटी-छोटी गलियों में विभिन्न व्यंजनों का लुत्फ़ उठाया। हिरोशिमा की भव्यता देखी। हिरोशिमा के पास 'शन्तो धर्म' से जुड़ा द्वीप 'मियाजी मा' देखा जहाँ का तोरी गेट परमाणु हमले में भी मजबूती से खड़ा रहा। फुकुओका में बुद्ध प्रतिमा के साथ समुद्री जीवों का संग्रहालय देखा। टोकियो में "डिजिटल लैब" "टोकियों टावर" "ऐनिमे शहर" के नाम से प्रसिद्ध 'अकिहाबरा' के साथ विश्व रिकॉर्ड बनाने वाला शिबुया क्रासिंग (चौराहा) देखा जहाँ प्रतिदिन बीस से पच्चीस लाख लोग गुजरते हैं। शिबुया ट्रेन स्टेशन के बगल में सबसे वफादार कुत्ते "हाचिको' जिसने अपने मालिक के इंतजार में अपनी जान दे दी, उसकी कांस्य प्रतिमा भी देखी , जिसके साथ हर दिन सैकड़ों लोग अपनी तस्वीरें खिंचवाते हैं। 'फुजी' पर्वत देखा जो अपने सक्रिय ज्वालामुखी के कारण प्रसिद्ध है। साथ ही जापान की विश्व प्रसिद्ध "टी सेरेमनी" का आनंद लिया जिसमें पारंपरिक पौशाक में विशेष तरीके से ज़मीन पर बैठाकर चाय पिलाई जाती है। इसके साथ ही जापानी व्यंजनों का भरपूर स्वाद लिया।

अपनी जापान यात्रा में दो ख़ास जगह के बारे में

उमेदा स्काई बिल्डींग एस्केलेटर, ओसाका शहर

उमेदा स्काई बिल्डींग, ओसाका शहर

ओसाका शहर में रात्रि का नजारा

उमेदा बिल्डींग की छत से ओसाका शहर

विस्तार से बताना चाहूँगी। पहला है 'हिरोशिमा' शहर ! सभी जानते हैं कि 6 अगस्त 1945 के दिन अमेरिका द्वारा गिराए गए परमाणु बम ने इस शहर को तबाह कर दिया था। करीब डेढ़ लाख लोग इस बमबारी में मारे गए थे। पूरा शहर खंडहर में तब्दील हो गया था। बहुत से लोग बम से निकली रेडिओएक्टिव किरणों के कारण कई तरह की बीमारियों का शिकार हुए। इतिहास के काले पन्ने में दर्ज़ यह शहर बहुत ही कम समय में फिर से बसा वो भी पहले से दस गुणा बेहतर। हिरोशिमा शहर को जब अपनी आँखों से देखा तो विश्वास ही नहीं हुआ कि यह शहर कभी तबाह भी हुआ था। किसी भी विकसित देश से कम नहीं है यह शहर। हम वहाँ के 'पीस मेमोरियल पार्क' में बने "हिरोशिमा शांति स्मारक" और "परमाणु बम गुंबद" देखने गए। बमबारी में बर्बाद होने के बावजूद यह गुम्बद एक निशानी के तौर पर धरोहर की तरह रखा गया है ताकि आने वाली नस्लें सबक ले सकें। इस शांति स्मारक में एक छोटी-सी नदी भी है जिसके एक ओर वह गुम्बद है तो दूसरी ओर छोटी बच्ची "सदाको सासाकी" की प्रतिमा जो दिल को झझकोर देती है। जब हिरोशिमा पर बम बरसाया गया तब सदाको दो साल की थी। बमबारी के बाद सदाको को कोई ज़्यादा चोट नहीं लगी थी, लेकिन दस साल बाद उसे ल्यूकेमिया हो गया और अस्पताल में भर्ती कराया गया। वह जीना चाहती थी। उसके दोस्तों ने उससे कहा कि वह अपनी जीने की इच्छा को क्रेन (सारस) बनाकर पूरा कर सकती है। जापानी किंवदंती के अनुसार जापान का ये पवित्र पक्षी सौ साल तक जीवित रहता है इसलिए अगर कोई बीमार व्यक्ति 1000 ओरेगामी कागज़ को मोड़कर क्रेन बनाता है तो वह व्यक्ति जल्द ही ठीक हो जाता है। किंवदंती सुनने के बाद सदाको ने इस उम्मीद में एक हज़ार क्रेन बनाने का फैसला किया कि वह फिर से ठीक हो जाएगी। सदाको का परिवार और दोस्त भी अक्सर क्रेन बनाने में उसकी मदद करने के लिए अस्पताल आते थे। उन दर्द भरे समय में भी सदाको ने खुश और आशावान रहने की कोशिश की पर 25 अक्तूबर 1955 में बारह साल की उम्र में सदाको की मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय तक उसने 1300 क्रेनें बनाई थीं। सदाको की प्रतिमा के पास शो-रूम में हमने लाखों की संख्या में लोगों द्वारा बनाई गई कागज़ की क्रेन देखीं। यह पूरा पार्क बेहद ही खुबसूरत था जिसमें एक मशाल भी जल रही थी जो बमबारी में मारे गए लोगों को शांति प्रदान करने के लिए थी। कुछ कदम की दूरी पर म्यूजियम बना था। म्यूजियम की टिकट लेने के बाद जब हम अन्दर गए तो जैसे एक अलग ही दुनिया थी जिसमें उस भयावह समय की निशानियाँ कैद थीं। डिजिटल स्क्रीन पर दिखाया गया कि कैसे बम ने पूरे शहर को तबाह कर दिया। मारे गए लोगों के कपडे, बच्चों की स्कूल ड्रेस, टिफिन, किताबें, जूते, पेन, जली हुई लाशें आदि। तस्वीरों और चित्रकारी द्वारा उस समय को दर्शाया गया था। म्यूजियम से बाहर आते-आते हिरोशिमा के फिर से बसने की कहानी भी दिखाई गई। बाहरी गेट तक आने पर मुस्कुराती हुई तस्वीरें थीं फिर भी बाहर आकर सबकी आँखें नम थीं।

दूसरी जगह है- 'फुकुओका' जो एक पहाड़ी अंचल है, जिसके हरे-भरे पहाड़ और उनकी शांति मन को मोह लेते हैं। वहाँ हम ट्रेन से गए। स्टेशन के पास बने छोटे-से पुल से करीब एक किलोमीटर चढ़ाई के बाद हम पहुँचे पहाड़ों के बीच बसे 'सासागुरी' में स्थित 'नान्जो-इन' मंदिर, जहाँ है– महात्मा

गोजुनोतो याने पाँच मंजिला पैगोडा, क्योटो

टोकियो टावर, टोक्यो

डिजिटल टीम बोर्डरलेस, टोक्यो

मियाजीमा तोरी गेट (ईश्वर का द्वारा) जो बॉम्ब ब्लास्ट में नष्ट नहीं हुआ, हिरोशीमा

पीस मेमोरियल पार्क का विहंग दृश्य, हिरोशीमा

मियाजीमा मंदिर, हिरोशिमा

बुद्ध की दुनिया की सबसे बड़ी कांस्य प्रतिमा जो विश्राम की मुद्रा में है। ये प्रतिमा 41 मीटर लंबी और हल्के नीले रंग की है। इसके साथ ही बुद्ध जैसी ही कई सौ छोटी-छोटी प्रतिमाएँ भी हैं। बुद्ध की प्रतिमा एकदम जीवंत लगती है। वहाँ अन्य कई छोटे-छोटे मंदिर थे जिनकी प्रतिमाओं को ऊनी वस्त्र पहनाए गए थे। वापसी में जब उस छोटे-से पुल से गुज़रे तो पता चला की उसमें कुछ यंत्र लगे हैं जिन पर छोटी-सी छड़ी से स्पर्श करने पर संगीत गूँजता है। हमने भी उसे बजाकर आनंद लिया।

जापान की पंद्रह दिन की यात्रा में जो ख़ास बातें अनुभव की उनके आधार पर कह सकती हूँ कि- अक्सर कहा जाता है कि जापान बाकी दुनिया से पचास साल आगे चल रहा है, जो कि एकदम सच है। पूरा देश शीशे की तरह चमकता है। सड़कों पर कूड़ेदान नहीं होते फिर भी शहर साफ़-सुथरा है। जापानी लोगों की बात करूँ तो वे बहुत शिष्ट और शांतप्रिय होते हैं। लिफ्ट, बस, मेट्रो, ट्रेन दुकान आदि सब जगह शालीनता से पंक्ति में खड़े रहते हैं। लोग आपकी सहायता के लिए तत्पर रहते हैं। उनका सिर झुकाकर अभिवादन करना और होटल से लेकर मॉल, स्टेशन सब जगह आगंतुक को "आरिगातो" (धन्यवाद) कहना उनकी आदत में शामिल है। जापान के हर शहर में सार्वजानिक शौचालय आसानी से मिल जाते हैं जो बहुत ही साफ़-सुथरे होते हैं। जापान की सभी सड़कों पर दृष्टिहीन लोगों के चलने के लिए पीले रंग से रास्ता बना है जिस पर वे अपनी छड़ी के सहारे आसानी से चल सकते हैं साथ ही शौचालय और लिफ्ट आदि में दृष्टिहीन लोगों के लिए सभी निर्देश "ब्रेल लिपि" में लिखे रहते हैं। ट्रेफिक के नियमों का पालन पैदल चलने वालों के साथ-साथ वाहन चलाने वाले भी ईमानदारी और गंभीरता से करते हैं। गाड़ियों के हॉर्न नहीं बजते और न ही चालक जबदस्ती ओवरटेक करते हैं। चोरी-झपटमारी न के बराबर है। औरतों के लिए सुरक्षित देश है। मेट्रो, बस, ट्रेन में लोग एकदम शांत रहते हैं। हमने एक शब्द सबसे अधिक सुना, वह था- "आरिगातो-गोज़ाई-शिमास" अर्थात् "आपका हार्दिक धन्यवाद" ! कुल मिलाकर एक अनुशासित और "अतिथि देवो भव" को चरित्रार्थ करता हुआ देश है। एक सोच जो यहाँ के लोगों को दुनिया से अलग और बेहतर बनाती है, वह है- "समाज के विकास और भलाई के लिए यदि कुछ कष्ट भी उठाना पड़े तो हम उनकी बेहतरी के लिए कष्ट भी सहेंगे।" इसीलिए वहाँ लोग अपने घर के साथ-साथ पड़ोसी के घर के सामने भी सफाई रखते हैं। यदि भविष्य में मौका मिला तो फिर से उस 'उगते सूरज' वाले देश में यात्रा करना चाहूँगी !!!

सादाको सासाकी पेपर क्रेन बनाने वाली एटमिक हमले में बची हुई बच्ची की प्रतिमा, हिरोशीमा

हिरोशिमा बॉम्ब ब्लास्ट की रियल फोटो

हिरोशिमा एटमिक बॉम्ब डॉम

कार्यस्थल पर महिलाओं में तनाव के कारण और निवारण

मृदुल जोशी
पति, बिन्दु डोडिया

1. कार्य-जीवन संतुलन की कमी

महिलाएँ अक्सर कर्मचारी, देखभालकर्ता, और गृहिणी जैसी कई भूमिकाओं को निभाती हैं, जिसके कारण व्यक्तिगत और पेशेवर जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना मुश्किल हो जाता है। इन सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता की अपेक्षा महिलाओं पर अत्यधिक दबाव डालती है। *जर्नल ऑफ ऑक्युपेशनल हेल्थ साइकोलॉजी* (2018) में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, वे महिलाएं जो भूमिका संघर्ष का सामना करती हैं, उनमें थकावट और दीर्घकालिक तनाव की संभावना अधिक होती है। यह दीर्घकलिक तनाव कई मानसिक रोग का जनक भी हो सकता है और कई आधियों और व्याधियो की जड़ भी। कई संस्कृतियों में यह धारणा प्रबल है कि महिलाओं को अपने करियर के बजाय परिवार को प्राथमिकता देनी चाहिए, जिससे संतुलन स्थापित करना कठिन हो जाता है। सांस्कृतिक परिवेश और स्थानीय रीती और नीतियाँ महिलाओं के लिए उनकी शिक्षा को उपयोगी बनाने की अपेक्षा सामाजिक प्रवाह में ढलने को प्रोत्साहित करती है और यहाँ उनमें, उनके व्यक्तित्व की भूमिका की स्थापना को लेकर एक द्वंद्व जन्म लेता है।

2. लैंगिक भेदभाव

कार्यस्थल पर भेदभाव समान वेतन, पदोन्नति के अवसरों की कमी और प्रदर्शन मूल्यांकन में पक्षपात के रूप में प्रकट होता है। विशेष रूप से पुरुष-प्रधान उद्योगों में, महिलाओं को अक्सर उनकी योग्यता पर सवाल उठाने वाले रूढ़ियों का सामना करना पड़ता है। यथोचित योग्यता होने के बाद भी उन्हें पुरुष के समकक्ष मानदेय भी निर्देशित नहीं होता है। लैंगिक भेदभाव को मानसिक प्रबलता से प्रक्षेपित कर के महिलाओं को हतोत्साहित भी किया जाता है तथा उन्हें एक निश्चित सीमा में ही प्रगति के लिए बाधित किया जाता है। *हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू* (2021) द्वारा किए गए एक शोध में पाया गया कि जो महिलाएँ सूक्ष्म आक्रमणों या प्रणालीगत भेदभाव का सामना करती हैं, वे अक्सर उच्च स्तर पर चिंतित और नौकरी में असंतोष भावना से ग्रस्त पायी गयीं हैं। ग्लास सीलिंग प्रभाव महिलाओं के लिए निरंतर निराशा और हतोत्साहन का स्रोत है। ग्लास सीलिंग प्रभाव का अर्थ है कि वह अदृश्य बाधा जो कार्यस्थल पर महिलाओं और अल्पसंख्यकों को उनकी प्रतिभा दिखाने, अपने कार्य में उत्कृष्टता प्राप्त करने और कंपनी के उच्च पदों तक पहुँचने से रोकती है। इस अवधारणा को सबसे पहले **मैर्लिन लोडेन** ने परिभाषित किया था, और 1980 के दशक में यह विषय व्यापक रूप से चर्चित हो गया। हालांकि, दुर्भाग्य की बात है कि 21वीं सदी में भी यह समस्या हमारी कार्यसंस्कृति में बनी हुई है। 1980 के दशक में "ग्लास सीलिंग" शब्द को अक्सर "मॉमी ट्रैक" नामक वाक्यांश के साथ जोड़ा जाता था। उस समय, प्रजनन आयु की महिलाओं को पुरुष कर्मचारियों की तुलना में कम प्रेरित माना जाना आम बात थी। यह धारणा थी कि ऐसी महिलाएँ स्वास्थ्य कारणों से लंबी छुट्टियाँ लेती हैं और मातृत्व की जिम्मेदारियों के कारण अपने कार्य के प्रति कम समर्पित रहती हैं।

3. उत्पीड़न और कार्यस्थल पर धमकाना

यौन उत्पीड़न, सामान्य उत्पीड़न और कार्यस्थल पर धमकाने की घटनाएँ महिलाओं को असमान रूप से प्रभावित करती हैं। सहकर्मियों या वरिष्ठ अधिकारियों का अनुचित व्यवहार, भय-युक्त प्रभाव आदि जैसे व्यवहार महिलाओं के आत्मविश्वास को कमजोर करता है और कार्यस्थल पर एक शत्रुतापूर्ण वातावरण उत्पन्न करता है। *अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन* के अध्ययन से पता चला है कि उत्पीड़न न केवल मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि थकावट और अनिद्रा जैसे शारीरिक लक्षण भी उत्पन्न करता है। एक विषाक्त कार्य वातावरण नौकरी के

प्रदर्शन और करियर में प्रगति को गंभीर रूप से बाधित करता है। एक अन्य उल्लेखनीय अध्ययन, *जर्नल ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी* (2020) में प्रकाशित हुआ, जिसमें कार्यस्थल पर उत्पीड़न और उसके दीर्घकालिक प्रभावों पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस अध्ययन में पाया गया कि उत्पीड़न केवल मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करता, बल्कि दीर्घकालिक शारीरिक समस्याओं, जैसे उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली का कारण भी बनता है। इसके अतिरिक्त, *दी इंटरनेशनल जर्नल ऑफ वर्कप्लेस हेल्थ मैनेजमेंट* (2019) ने यह उजागर किया कि जिन कर्मचारियों को बार-बार उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, उनमें तनाव हार्मोन (कोर्टिसोल) का स्तर असामान्य रूप से बढ़ जाता है, जो न केवल उनके कार्य प्रदर्शन को कमजोर करता है, बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी अस्थिरता पैदा करता है।

शोध ने यह भी इंगित किया कि उत्पीड़न से पीड़ित कर्मचारी अक्सर नौकरी छोड़ने की योजना बनाते हैं, जिससे कंपनियों के लिए उच्च टर्नओवर दर और प्रतिभा की कमी जैसी समस्याएँ पैदा होती हैं। इस प्रकार, कार्यस्थल पर एक स्वस्थ और सम्मानजनक वातावरण बनाए रखना संगठनात्मक और व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर अत्यंत महत्वपूर्ण है।

4. लचीली कार्य नीतियों की कमी

जर्नल ऑफ वर्क एंड फैमिली (2018) के एक अध्ययन के अनुसार, ऐसी संरचनाएं महिलाओं के करियर में बाधा डालती हैं, जिससे वे नेतृत्व भूमिकाओं से बाहर हो जाती हैं। एक समावेशी कार्यस्थल के लिए आवश्यक है कि यह संरचनात्मक कमियों को पहचानकर लचीली और परिवार-अनुकूल नीतियों को अपनाए। लचीलापन की अनुपस्थिति प्रतिस्पर्धी प्राथमिकताओं को प्रबंधित करने में कठिनाई को बढ़ा देती है। *मैक्किंज़ी एंड कंपनी* (2022) की एक रिपोर्ट ने रेखांकित किया कि महिलाएँ कठोर कार्य संरचनाओं के कारण पुरुषों की तुलना में 1.5 गुना अधिक अपनी नौकरी छोड़ने पर विचार करती हैं।

5. सीमित समर्थन समूह

जर्नल ऑफ ऑर्गेनाइजेशनल बिहेवियर (2019) के एक अध्ययन के अनुसार, महिलाओं के लिए संरक्षकता की अनुपस्थिति उनके आत्मविश्वास और करियर प्रगति को प्रभावित करती है। इसके अलावा, नेतृत्व की भूमिकाओं में पुरुषों के प्रभुत्व के कारण, महिलाओं के लिए समान अनुभव साझा करने वाले प्रतिपालक अथवा एक विश्वसनीय सलाहकार ढूँढ़ना कठिन हो जाता है। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए संरक्षकता और समर्थन समूह के महत्व को समझते हुए संगठनों को संरक्षक कार्यक्रम और सहयोगी माहौल विकसित करने की आवश्यकता है। *अकादमी ऑफ मैनेजमेंट जर्नल (2017)* के शोध ने कार्यस्थल समर्थन समूह की कमी और महिलाओं के करियर विकास पर इसके प्रभाव को उजागर किया। अध्ययन में पाया गया कि महिलाओं को कार्यस्थल पर सहयोगी समूह की अनुपस्थिति के कारण निर्णय लेने, आत्मविश्वास बढ़ाने और तनाव का प्रबंधन करने में कठिनाई होती है।

महिलाओं के कार्यस्थल तनाव को दूर करने के लिए उपाय

1. कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देना

लचीले कार्य समय, टेली-कम्यूटिंग विकल्प, और भुगतान पारिवारिक अवकाश जैसी नीतियां कार्यस्थल पर महिलाओं के लिए समावेशिता और संतुलन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ऐसी नीतियां न केवल महिलाओं को अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाने में मदद करती हैं, बल्कि उनकी उत्पादकता और मनोबल को भी बढ़ाती हैं। इसके साथ ही, उपस्थिति के बजाय परिणामों को प्राथमिकता देने वाली कार्य संस्कृति विकसित करना आवश्यक है। *हावर्ड बिजनेस रिव्यू (2021)* के एक अध्ययन में यह पाया गया कि परिणाम-उन्मुख कार्य संस्कृति न केवल कर्मचारियों की सगाई को बढ़ाती है, बल्कि लचीलेपन के माध्यम से कार्यक्षेत्र की विविधता को भी प्रोत्साहित करती है। इन पहलों से न केवल महिला कर्मचारियों को सशक्त बनाया जा सकता है, बल्कि यह संगठन की समग्र सफलता में भी योगदान देता है।

सुझाव : नियोक्ताओं को कार्य-जीवन पहलों के प्रभाव का नियमित मूल्यांकन करना चाहिए और उन्हें कर्मचारियों की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार समायोजित करना चाहिए।

2. सुरक्षित और सम्मानजनक कार्यस्थल बनाएं

कर्मचारी बिना किसी डर के उत्पीड़न और धमकाने

की घटनाओं की रिपोर्ट कर सकें इस तरह की, शून्य-सहिष्णुता नीतियां लागू करनी चाहिए, जो यह सुनिश्चित करती हैं कि कोई भी प्रकार का उत्पीड़न या धमकाना सहन नहीं किया जाएगा। इस प्रकार की नीतियां कर्मचारी को यह विश्वास दिलाती हैं कि उनकी सुरक्षा और सम्मान की रक्षा की जाएगी।

साथ ही, सम्मानजनक कार्यस्थल व्यवहार पर नियमित प्रशिक्षण सत्र आयोजित करना महत्वपूर्ण है। इन सत्रों के माध्यम से कर्मचारियों को आपसी सम्मान, समावेशिता और व्यवहारिक मानकों के बारे में जागरूक किया जा सकता है। यह प्रशिक्षण कर्मचारियों को एक सकारात्मक और सहायक कार्य वातावरण बनाने के लिए प्रेरित करता है, जिससे कार्यस्थल पर उत्पीड़न और धमकाने की घटनाओं में कमी आती है।

सुझाव : मानव संसाधन विभाग को शिकायतों का शीघ्र और पारदर्शी तरीके से समाधान करने के लिए सक्रिय उपाय करने चाहिए।

3. लचीली और समावेशी कार्य नीतियां प्रदान करें

मातृत्व और पितृत्व अवकाश विकल्पों का विस्तार करना महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए महत्वपूर्ण है, ताकि कार्यस्थल पर बच्चों की देखभाल के दबाव को कम किया जा सके।

कार्यस्थल पर बच्चों की देखभाल की सुविधाएं या कामकाजी माता-पिता के लिए सब्सिडी प्रदान करने से कर्मचारियों के जीवन को और भी आसान बनाया जा सकता है। *ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट जर्नल* (2020) के एक अध्ययन में पाया गया कि बच्चों की देखभाल की सुविधाएं कर्मचारियों के कार्य-जीवन संतुलन को बेहतर बनाती हैं और उनकी उत्पादकता को बढ़ाती हैं। ऐसे प्रयास कार्यस्थल पर महिला कर्मचारियों को सशक्त बनाते हैं, साथ ही उन्हें अपनी परिवारिक और व्यवसायिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं।

सुझाव नीति निर्माता संगठनों को परिवार-अनुकूल प्रथाओं को लागू करने के लिए प्रोत्साहित करें।

4. यथार्थवादी कार्यभार को प्रोत्साहित करें

प्रबंधकों को प्राप्य लक्ष्यों को निर्धारित करने और कर्मचारियों को अधिक बोझ डालने से बचाने के लिए प्रशिक्षित करना अत्यंत आवश्यक है। जब लक्ष्य यथार्थवादी और प्राप्य होते हैं, तो कर्मचारी न केवल मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहते हैं, बल्कि वे अपने कार्य में अधिक समर्पित और उत्पादक भी रहते हैं। *जर्नल ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी* (2019) के एक अध्ययन में पाया गया कि जब प्रबंधक कर्मचारियों को अत्यधिक कार्यभार नहीं सौंपते, तो उनका प्रदर्शन बेहतर होता है और वे कम तनाव महसूस करते हैं।

सुझाव : कर्मचारियों को अनुचित अपेक्षाओं के बारे में चिंताओं को बिना प्रतिशोध के व्यक्त करने का अधिकार दिया जाना चाहिए।

5. स्वास्थ्य और सुरक्षा मानकों में सुधार करें

सुनिश्चित करना कि सभी कार्यस्थल बुनियादी स्वच्छता और स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, कर्मचारियों की भलाई और उत्पादकता के लिए आवश्यक है। स्वच्छ और सुरक्षित कार्य वातावरण कर्मचारियों को मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के जोखिमों से बचाता है, और यह कार्यक्षमता में सुधार करने में मदद करता है। *स्वास्थ्य और सुरक्षा अध्ययन* (2020) में यह पाया गया कि स्वस्थ कार्य वातावरण से कर्मचारियों का मनोबल बढ़ता है और वे अपने कार्य में अधिक समर्पित रहते हैं।

इसके अलावा, मानसिक स्वास्थ्य सहायता सहित व्यापक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करना कर्मचारियों की मानसिक स्थिति को सुधारने के लिए महत्वपूर्ण है। मानसिक स्वास्थ्य समर्थन जैसे काउंसलिंग, तनाव प्रबंधन, और मानसिक फिटनेस कार्यक्रमों की पेशकश से कर्मचारियों को पेशेवर और व्यक्तिगत चुनौतियों से निपटने में मदद मिलती है। *मेडिकल जर्नल ऑफ क्लिनिकल साइकोलॉजी* (2021) के अनुसार, मानसिक स्वास्थ्य सहायता से कर्मचारियों की संलिप्तता बढ़ती है और कार्यस्थल पर तनाव और अवसाद के मामलों में कमी आती है। यह एक समग्र और स्वस्थ कार्य वातावरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

सुझाव : संगठनों को विशेषज्ञों के साथ सहयोग करना चाहिए ताकि नीतियां डिजाइन की जा सकें जो कर्मचारी कल्याण को प्राथमिकता दें।

निष्कर्ष

कामकाजी महिलाओं में कार्यस्थल तनाव एक बहुआयामी समस्या है, जो प्रणालीगत, संगठनात्मक और व्यक्तिगत कारकों से प्रेरित है। इन चुनौतियों का समाधान एक व्यापक दृष्टिकोण की मांग करता है जिसमें नीतिगत सुधार, संगठनात्मक परिवर्तन, और सांस्कृतिक बदलाव शामिल हों। नियोक्ता, सरकारें, और कर्मचारी मिलकर ऐसे कार्यस्थल बनाने के लिए सहयोग करें जो समान, सहायक और समावेशी हों। परिवर्तन जागरूकता और वकालत से शुरू होता है। आइए हम सभी बाधाओं को समाप्त करने और कार्यस्थल पर महिलाओं की सफलता और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक रूप से काम करें।

उम्मीद का संदेश

श्रीमती कुमुद वर्मा
पत्नी, प्रोफेसर संजय वर्मा

जो बीत गई वह बात गई,
कष्ट की आखिरी रात गई,
कल के सुनहरे सपने देखो,
पिछला पकड़ो यह किसने कही?

जीवन में तुम नव जोश भरो,
अब आशा से कुछ कदम बढ़ो,
अंधेरा फिर घट जाएगा,
जो बीत गई सो बात गई।

जग में सुंदर किरणें आईं,
आशा का संदेशा लाईं,
रात छटी तुम भी जग जाओ,
साल की आखिरी रात गई।

चिड़िया उठकर चह-चहाई,
उठो-उठो प्रभात नई आई,
नई उम्मीदों से जागो तुम,
अब घनी अंधेरी रात गई।।

बदलाव

निरज दवे
सहायक प्रबंधक- लेखा

बदलाव संसार का नियम है और यह एक सत्य है,
बदलाव के साथ जीना यही इंसान का कर्त्तव्य है।
बदलते परिमाणों के साथ बदलना है,
यही तो इंसान का मूल चरित्र है।

बदलाव ऐसा हमारे जीवन मे भी आया,
नए स्थान पर जाकर कर्त्तव्य निभाना आया।
बदला कार्य एवं कार्य करने का तरीका,
बदली जगह और बदला हर एक सलीक़ा।

दिल में लिए नया जोश और नयी उमंगें,
कुछ कर दिखाने की मन में लिए तरंगे।
निकले सालों पुरानी जगह छोड़ कर,
पुराने रिश्तों से जुदाई की चादर ओढ़ कर।

आये नयी जगह पर करने अच्छे काम,
बनाने नए रिश्ते जो न रह जाएँ आम।
हूँ तो इंसान ही कैसे छूटे पीछा पुरानी यादों से,
जो वापस आ जाती हैं दिल के खिड़की दरवाज़े से।

बदलाव का नियम लागू पुराने रिश्तों पर भी होता,
बस यही बदलाव दिल को अच्छा
महसूस नहीं होता।
जिन्हे हम अपना मानते और परिवार से लगते थे,
आज वही हमें एक अजनबी की तरह तकते हैं।

जब कभी जाते हैं पुरानी जगह पर
समझ कर अपना घर,
चेहरे ऐसे होते हैं जैसे अनचाहा मेहमान
आ पड़ा हो सर।

ना पहले-सा इस्तेकबाल है ना ही चेहरों पे निखार है,
अपने ही घरोंदे में एक अजनबी होने का एहसास है।
खैर जो भी हुआ अच्छा ही है जो हमसे पीछा छूटा,
वो नक़ली हँसी दिखाने का उनका भरम भी टूटा।

हमारे दिल में कोई गिला या शिकवा नहीं,
हमने दिल से आज भी उन्हें निकाला नहीं।
हम तो अभी भी उन्हीं प्यारी यादों में जीते हैं
आज भी हम उन्हीं को अपना मानते हैं।

बदलाव ही जीवन है इस सत्य को मैंने जाना,
पर रिश्तों में बदलाव हो ये मेरे दिल ने नहीं माना।

जीना यहाँ, मरना यहाँ

श्री दामजीभाई सोलंकी
पिता जी, नीलम वाढेर

"जीना यहाँ, मरना यहाँ, उसके सिवा जाना कहाँ" यह जीना-मरना क्या है? यहाँ कौन जीता है? हर कोई एक जिंदा लाश की तरह जी रहा है। क्या उसे ही जीना कहते हैं? हर किसी की ज़िंदगी चिंता की आग में जलती लाश की तरह दिखती है। खामोश दिखती है। कोई इस पर बोल नहीं पाता। किसी से कह नहीं पाता। सब इसी रूढ़ प्रारूप से जी रहे हैं। सब बोझ से दबे हुए हैं। कोई चिल्लाना चाहे तो चिल्ला भी नहीं पाता।

तो, ऐसी ज़िंदगी बनाई किसने? हमें जीने के लिए क्या चाहिए? सिर्फ तीन चीजें – रोटी, कपड़ा और मकान। मगर ये सब चीज़ें हर किसी के पास होते हुए भी वे जी नहीं पाते, क्यों? क्योंकि उसमें भी हमें कमी दिखती है, संतोष नहीं होता। रहते-रहते मकान भी छोटा दिखता है। पौष्टिक आहार में स्वाद नहीं मिलता। अच्छे कपड़ों में अच्छे दिखने की कमी महसूस होती रहती है। यही लालसा उन्हें मार देती है। जीने के लिए हमें रोटी, कपड़ा और मकान की ज़रूरत पड़ती है मगर इन तीनों चीज़ों के लिए हमें धरती से प्रत्येक संसाधनों की ज़रूरत पड़ती है। चाहे उपर हो या धरती के भीतर में, हमें एक वातावरण की ज़रूरत पड़ती है। इन चीज़ों को लाने-बनाने में हर एक इंसान की ज़रूरत पड़ती है। इन चीज़ों में भी इंसान अपनी लालसा वृत्ति में रत रहकर हर चीज़ का दाम बढ़ाते रहता है और महँगाई की मार देकर भी खुद का कल्याण चाहता है। दूसरों के जीने को दूभर बनाकर भी राजी रहता है।

अच्छा जीवन जीने के लिए शुद्ध जलवायु का होना जरूरी है। पानी के लिए बारिश चाहिए और बारिश के लिए उचित तापमान चाहिए। याने निश्चित ऋतुचक्र के आधार पर सब सही ढंग से रहता है। परंतु, क्या आज ऋतुचक्र सच में सही ढंग से चलता है क्या? नहीं, ऐसा अब रहा नहीं। क्योंकि कुदरत के आगे भी इंसान की लालसा खड़ी है। इसी लालसा ने सारे पर्यावरण को दूषित कर रखा है। ऋतुचक्र उलट-सुलट हो रखे हैं। पर्याप्त जीवन यापन के लिए जो चीज़ें हमें ऋतु अनुकूलता से मिलनी चाहिए, जितनी मात्रा में मिलनी चाहिए, वे आज मिल नहीं पाती। इस कमी की वजह से आज हम असाध्य बीमारियों से संघर्षरत हैं। तो क्या ऐसा जीना सच में जीना है?

धरती की हुकुमत हमेशा कुदरत के हाथों में होती है। पर येन केन प्रकारेण इसे इंसानों ने अपने हाथों में थामे रखा है। धरती को बटाऊ कर दिया है। अलग-अलग देश बना लिए हैं और उन पर अपना आधिपत्य जमा रखा है। धरती के टुकड़ों के रूप में एक-एक देश की हुकुमत इंसान के हाथों में है। और ये इंसान लालसा से भरा रहता है। इसी लालसा की वजह से अपने-अपने देश की समृद्धि के लिए इंसानों के बीच होड़ लगी पड़ी है। सबको अपने देश का विस्तार बढ़ाने के लिए दूसरे छोटे-छोटे देशों की जमीनों को कब्जियाते हैं। भूगर्भ में रहे संसाधनों का बेतरतीब उपयोग करते हैं। खून-खराबा करने के साथ विनाशक आचरण से पृथ्वी को जोखिम में डाल रखा है।

हम यहाँ जीने के लिए आए हैं। हमें अच्छे-से जीना पड़ेगा। जीने के लिए हमें लालसा छोड़नी पड़ेगी। संतोष से जीना पड़ेगा। यही जीवन का ध्येय रखना होगा।

हिंदी हमारे देश और भाषा की
प्रभावशाली विरासत है।

- मखनलाल चतुर्वेदी

वह राष्ट्र सशक्त है, जहाँ महिलाएँ सुरक्षित हैं

आशीष जी. देसाई
मल्टी टास्किंग स्टाफ

"नारी तू नारायणी" जब बात भारत देश में नारी सम्मान की आती है तो कहना पड़ेगा कि हमारे देश में वेदों, पुराणों के युग से नारी सम्मान की अनोखी विरासत है। सिंधु एवं हडप्पा के अवशेष नगरों में मातृसत्ता के सबूत मिले हैं जो हमारे देश की अमूल्य संस्कृति का दर्शन कराते हैं। हाल ही में कुछेक घटनाएँ सामने आई हैं जो नारी सुरक्षा के सामने सवाल खड़े करती हैं। कुछ दिनों पहले कोलकाता में डॉक्टर के साथ हुआ बलात्कार हमारे लिए लज्जाजनक घटना है। 2012 में हुई दिल्ली की निर्भया हत्याकांड की हमें फिर से याद दिलाती है। देश में कड़ी न्यायसंहिता, कानून व्यवस्था की कमी के कारण आज पूरे देश में प्रति दिन पाँच मामले महिलाओं से बलात्कार, एसिड अटैक, ऑनरकिलिंग, भ्रूण-हत्या के होते हैं।

हमारे देश में महिला को देवी स्वरूप माना जाता है परंतु ऐसी घटनाएँ हमारा मस्तक शर्म से झुका देती हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि हमारे देश में महिलाओं से अवहेलना युक्त व्यवहार किया जाता है और असुरक्षित माहौल बनाए रखा है। और तो और, ऐसे मामलों में देश में कानून व्यवस्था का लचीलापन न्याय देने में समय लगा देता है। हम बात करते हैं इक्कीसवीं सदी के रूझानों की और समाज में महिलाओं के सम्मान की नीलामी के बाद भी न्याय समय पर नहीं होता, यह हमारे लिए काफी शर्मनाक है।

भारत में जनसंख्या के हिस्से में महिलाएँ लगभग 49 प्रतिशत है। चाणक्य ने कहा है कि जिस राष्ट्र में महिला असुरक्षित हों, उस राष्ट्र की प्रगति कभी नहीं हो सकती। राष्ट्र का निर्माण महिलाओं के योगदान से पूर्ण होता है। राजनीति, धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से महिलाओं को अवसर दिए जाते हैं तो देश का विकास नई ऊँचाइयों को छूता है। देश में समाज के एक हिस्से में मानसिकता हो गई है कि महिला से ज्यादा पुरुष बलवान है और वह ज्यादा काम कर सकता है। यह भी कि स्त्री के मासिक चक्र और शारीरिक तकलीफों के रहते हमारा समाज आज भी न्यून मानसिकता रखता है, जिस पर हमें समाज को जागरूक बनाना चाहिए। स्त्री-पुरुष के बीच के यह वैचारिक असमानता जब तक दूर नहीं कर पाएँगे तब तक हमारा देश एक विकसित राष्ट्र नहीं बन पाएगा।

हमारी न्याय व्यवस्था को अधिक कठोर बनाने की जरूरत है। महिला विरोधी अपराधों के लिए फ़ास्ट ट्रेक अदालती कार्रवाइयाँ होनी चाहिए। देश के सरकारी या निजी कार्यालयों में महिलाओं को कौन से समय पर जाना चाहिए यह सोचने के बजाय महिला सुरक्षित किस प्रकार से हो सकती है इस पर सोचना चाहिए। अब तो पीढ़ियाँ बोलिवुड मूवीज़ को देखकर वैसा ही सोचने लगी हैं। फ़िल्मों में नायिकाओं को वस्तु की तरह प्रदर्शित किया जाता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव समाज पर देखने मिलता है और समाज की धारणाएँ ऐसी हो जाती हैं।

भारतीय संस्कृति के दर्शन में हमें महिलाओं की सम्मानजनक स्थिति देखने को मिलती है, परंतु वर्तमान समय में यह विषय विचारणीय बन गया है कि क्या सच में ऐसा ही है। पश्चिम को देखें तो हम पाते हैं कि महिलाएँ कई क्षेत्रों में बराबर की भूमिका निभाती हैं और उनके राष्ट्र के निर्माण में उनका महती योगदान है। जबकि भारत में हम गौर करें तो ध्यान में आता है कि आज भी कन्याओं के जन्म पर समाज का एक बड़ा हिस्सा नाखुश होता है, और कन्या भ्रूण-हत्याओं का सिलसिला जारी रहता है। यह हमारे 21वीं सदी के समाज के लिए वाकई शर्म की बात है। समाचारों में अनुभव होता है कि कामकाजी स्थल पर भी महिलाओं को असुरक्षा का एहसास होता है। सरकार को अभी बहुत कुछ करना बाकी है। महिलाओं पर अधिकतम ध्यान दिया जाएगा तो ही 2047 में भारत विकसित राष्ट्र बनने के काबिल रह

सकता है। मोमबत्तियाँ जलाने से या दिन भर धरने पर बैठने से हमें न्याय नहीं मिलेगा। इसके लिए हमें कन्याओं को झाँसी की रानी, अहिल्याबाई जैसी तालीम देनी पड़ेगी। स्त्री-पुरुष की असमानता को कम करना होगा।

हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी नारी सुरक्षा और राष्ट्र निर्माण पर जोर देते हैं और क्षेत्रों के निर्माण में महिलाओं को प्रोत्साहन पर बढ़ावा देते हैं। भारत में महिलाओं की सुरक्षा से संबंधित कुछ कानून बनाए गए हैं, वे इस प्रकार से हैं –

निर्भया मोबाइल सुविधा – इस सुविधा के तहत किसी भी अनहोनी या शोषण के बारे में पुलिस से तुरंत सहायता के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

निर्भया फंड – इसके तहत ऐसा सॉफ्टवेयर तैयार किया गया है जिससे बस या टैक्सी से यात्रा कर रही महिलाओं को खतरे का एहसास होने पर वे एक बटन दबाकर सहायता माँग सकती हैं। हाल में, यह सुविधा कुछ राज्यों में ही है।

112 तथा 1029 हेल्प लाइन सुविधाएँ – इन सुविधाओं के तहत फोन करके सहायता माँगी जा सकती है। हाल में, यह सुविधा एक-दो राज्यों तक सीमित है।

बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ योजना – महिलाओं को विशेष लाभ देने के लिए भारत सरकार ने उन्हें मुफ़्त में शिक्षा देने का ऐलान कर यह संदेश दिया है कि महिलाएँ हमारे समाज का पहिया हैं, उन्हें सुरक्षित रखना ज़रूरी है। आने वाले समय में महिलाएँ अधिक सुरक्षित और सशक्त होकर राष्ट्र योगदान में अपनी भागीदारी निभाएगी।

महिला पुलिस शाखा – महिला पुलिस शाखा महिलाओं के ख़िलाफ़ होने वाले अपराधों से निपटने के लिए बनाई गई है। इसके अलावा इस शाखा के कार्यों में महिलाओं के ख़िलाफ़ होने वाले अपराधों की जाँच करना, दहेज और घरेलू हिंसा से जुड़ी शिकायतों पर कार्रवाई करना, गुमशुदा महिलाओं और बच्चों का पता लगाना, यौन शोषण को रोकने के लिए सार्वजनिक स्थलों पर नियमित दौरा करना, अपराध के बाद पीड़ित महिलाओं और उनके परिवारों को सलाह देना, महिलाओं को संविधान और अंतरराष्ट्रीय संधियों के बारे में जानकारी देना आदि शामिल हैं।

वह राष्ट्र सशक्त है, जहाँ महिलाएँ सुरक्षित हैं। विश्व में विभिन्न प्रकार की रिपोर्ट जारी की जाती हैं। उनमें से एक रिपोर्ट महिला सुरक्षा के बारे में जारी की जाती है। इस वर्ष की रिपोर्ट में डेनमार्क देश को महिलाओं के लिए सर्वाधिक सुरक्षित देश माना गया है। दूसरे तथा तीसरे स्थान पर फ़िनलैंड तथा स्विडन क्रमशः थे। इसमें भारत की स्थिति खराब रही। एनसीआरबी 2022 (राष्ट्रीय अपराध अभिलेख कार्यालय) रिपोर्ट के अनुसार भारत में हर सात मिनट पर महिलाओं पर अत्याचार के केस दर्ज किए जाते हैं।

यह देखा गया है कि विकसित और शिक्षित समाज में महिला सुरक्षा का स्तर अधिक है। महिला सुरक्षा का विषय किसी एक व्यक्ति का नहीं है, अपितु संपूर्ण समाज का है। आइए, हम सब साथ मिलकर देश के निर्माण में हमारा योगदान दें और नारी सुरक्षा बनाए रखें, क्योंकि नारी सम्मान ही देश का सशक्त निर्माण है।

आज के इस दौर में

निशांत जोशी
सहायक प्रबंधक

आज के इस दौर में;
बेटा भी माँगे बाप से हक अपना,
आज के इस दौर में;
फूल भी खिलकर भूल गया महकना,
आज के इस दौर में;
राजनीति के खेल से सब सीखना;
आज के इस दौर में;
गरीबों के पेट पर अमीरी की रोटी सेकना;
आज के इस दौर में;
सच्चे दौस्त भूलकर मोबाइल
को ही दोस्त मानना;
आज के इस दौर में;
अरे "निशांत" तू भी भूल गया हँसना ?
आज के इस दौर में।

यादें

हरीश वाघेला
कार्यकारी, भंडार एवं क्रय विभाग

दो दिन पहले पुरानी कंपनी जहाँ मैं पहले काम करता था, वहाँ मैंने फोन किया। काफी दिनों बाद पुराने स्टाफ से बातें हईं। सभी लोगों से पुरानी यादें ताजा हुईं। सबके हाल-चाल पूछे। बात करके अच्छा लगा।

उनसे मैंने पूछा, "घनश्यामभाई नौकरी पर आते हैं?"

सामने से जवाब मिला, "छह महीने पहले ही उनका देहांत हो गया।"

बड़े दुख और आश्चर्य के साथ मैं बोला, "ओह, क्या बात कर रहे हो।"

"हाँ, साहब छह महीने से बीमार थे। आंत में उनको कैंसर हो गया था। पेट में गांठ थी। काफी दवा करवाई पर वे ठीक नहीं हो पाए।"

"मुझे तो पता ही नहीं था। अभी आपने बताया तब मालूम पड़ा। भगवान उनकी आत्मा को शांति दे। मैंने फोन पर कुछ और बातें करके फोन रख दिया।"

पर घनश्याम भाई के देहांत की बात सुनकर मैं दुःखी हो गया। मेरा मन और मस्तिक उनके बारे में सोच रहा था और घनश्यामभाई का चेहरा मेरी आँखों के सामने आ रहा था। बात है गुजरात के अग्रणी दैनिक न्यूज़ पेपर के कार्यालय की। वहाँ मैंने कुछ साल पहले ही स्टोर का कार्यभार संभाला करता था। मैं हर रोज देखता था कि हमारे स्टोर डिपार्टमेंट के सामने ही एक बड़ा वॉश एरिया हुआ करता था। सारी रात जितना भी पेपर प्रिंट होता था और उन मशीनों में चिपकी हुई इंक को वहाँ सुबह साफ किया जाता था। उसके बाद मशीन के पार्ट्स को मशीन से निकाला जाता था और फिर वहीं पर फिट किया जाता था, ताकि दूसरे दिन पेपर की प्रिंटिंग में कोई दिक्कत ना हो।

यह एक दैनिक प्रक्रिया के तहत होता रहता था और इस काम के लिए कर्मचारी भी रखे हुए थे। कभी कोई कारीगर छुट्टी पर रहता तो उसकी जगह दूसरे आदमी को वह काम करना पड़ता था। मशीनरी, इंक की प्लेटें और मशीन के दूसरे पार्ट्स को भी अच्छी तरह से साफ किया जाता था। मैं हर रोज यह देखता रहता था। उसमें एक कारीगर थे घनश्याम भाई। जब भी मैं उनको देखता तब मन में एक विचार आता था कि इतनी बड़ी उम्र में क्यों इनको ये काम करना पड़ता होगा? घर पर रहकर आराम क्यों नहीं करते? ठीक से चल भी नहीं पाते थे। अगर उनकी जगह किसी युवा लड़के को काम पर रखते तो जल्दी से काम भी हो जाता और नौजवान को रोजगार भी मिलता।

घनश्यामभाई करीब 72 साल के थे और उनका शरीर थोड़ा भारी था। आँख पर मोटे कांचवाली काली फ्रेमवाले चश्मे होते थे। माथे पर बड़ी-सी टाल थी। उसमें थोड़े सफेद बाल होते थे। बैठते थे तो जल्दी से खड़े भी नहीं हो सकते थे। बिलकुल धीरे-धीरे चलते थे। सारा दिन धीरे-धीरे से उनसे जितना संभव हो उतना काम करते थे।

कंपनी के कारीगरों की ड्रेस का रंग नीला और मोटे कपड़े का रहता था। सभी कर्मचारी कंपनी में आकर वह ड्रेस पहन लेते थे और जाने के समय बदल करके जाते थे। एक बार मुझे याद है कि घनश्यामभाई मेरी ऑफिस में आए। किसी ने उन्हें बताया था कि कोई नए सा'ब स्टोर में आए हैं। तो वे मुझे मिलने के लिए केबिन में आए।

केबिन का दरवाजा खटखटाते हुए बोले, "मैं अंदर आ सकता हूँ?"

मैंने बोला, "हाँ, आइए।"

उन्होंने अपना परिचय देते हुए कहा, "घनश्याम भाई नाम है मेरा, सामने प्रिंटिंग डिपार्टमेंट में काम करता हूँ साहब।"

मैं उनके सामने देखकर शांति से उनकी बात सुन रहा

था। "साहब, 55 साल हो गए है, इस कंपनी में काम करते हुए। बहुत छोटा था तबसे यहाँ काम कर रहा हूँ। पिछले साल सेठ (एमडी सर) ने मुझे बुलाकर मेरा सम्मान किया था। मैंने सेठ के दादा के साथ भी काम किया है। उनके पापा के साथ और अभी उनके साथ (एमडी सर) काम कर रहा हूँ। इस तरह मैंने उनकी तीनों पीढ़ियों के साथ काम किया है। पूरी जिंदगी निकल गई यहाँ काम करते-करते। बहुत मेहनत की है सारी जिंदगी।"

घनश्याम भाई उत्साह से बातें कर रहे थे। मैं उनको सुन रहा था। तभी उन्होंने बोला, "साहब, मुझे हस्तरेखा देखना भी आता है। मैं किसी का भी हाथ देखकर उसके भविष्य के बारे मैं बता सकता हूं।" मैंने बोला, "अच्छा।"

वैसे तो मुझे इस विषय में बहुत रुचि नहीं है। इसलिए मैंने उस बारे में कुछ जवाब नहीं दिया। इतने में उन्होंने बोला कि "मैं आपका हाथ देख सकता हूँ?" मैं उनको ना नहीं कर सका। उन्होंने मेरे हाथ की हस्तरेखा को बड़े ध्यान से देखा कुछ गिनती करके मुझे कहा,

"आपकी राशि के हिसाब से आनेवाला समय आपके लिए अच्छा रहेगा और उसके बाद दूसरी भी उन्होंने कुछ बात कही। पर मैं कभी किसी ज्योतिष से मिला नहीं था और मैं उसमें मानता भी नहीं था इसलिए मैंने उनकी बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। पर मुझे ये सब बताकर वे खुश लग रहे थे। वहीं मेरे टेलीफोन की घंटी बजी एमडी सर के निजी सहायक का फोन था। उन्होंने कहा कि एमडी सर बुला रहे हैं। घनश्यामभाई केबिन में थे। मैंने उनको बोला "चलिए, मुझे सर से मिलने जाना है, फिर मिलते हैं। वह सिर हिला कर केबिन के बाहर गए। और मैं भी मेरे काम के लिए निकल गया। यह हमारी पहली मुलाकात थी।

उसके बाद कंपनी में कभी-कभी रास्ते में मिलते तो कैसे हो कहकर एक दूसरे की खबर पूछ लेते थे। मैं सुबह कंपनी में आता था तो घर से लंच बॉक्स लेकर आता था। मैं रोज करीब 1:00 बजे कंपनी की कैंटीन में खाना खाने जाता था। कभी काम की वजह से खाने के लिए लेट भी होता था और कभी काम की वजह से टिफिन आधा वापस भी जाता था।

एक बार मैं कैंटीन में खाना खा रहा था। तब मैंने घनश्याम भाई को दूर के टेबल पर बैठे कुछ खाते हुए देखा। मैंने बड़ी ध्यान से देखा तो उनके पास में नमकीन का एक पैकेट था और साथ में चाय थी। मैं मेरा लंच खत्म करके निकल गया। दूसरे दिन करीब उसी समय उसी जगह घनश्याम भाई खाना खा रहे थे। मैं उनके सामने वाले टेबल पर जहाँ जगह थी वहाँ बैठ गया। मेरा लंच बॉक्स खोला। मैंने घनश्याम भाई के सामने देखा तो आज भी वही चाय और नमकीन खा रहे थे।

मैंने पूछा, "आप नाश्ता ही करते हैं दोपहर को। मैंने कल भी आपको चाय और नाश्ता करते हुए देखा था। वे गहरी आह भरकर बोले, "दोहपर को को मैं नाश्ता ही करता हूँ और रात को शांति से पेटभर के खा लेता हूँ।"

थोड़ी आगे बातें हुई तो पता चला। उन्होंने बताया, "मैं अकेला रहता हूँ। सुबह जल्दी निकलना होता है। इसलिए सुबह खाना बनाने का टाइम नहीं मिलता। शाम को छह बजे घर जाकर आराम से खाना बनाकर खा लेता हूँ। मैं सोचने लगा कि इतनी उम्र और पूरा दिन काम करना और बाद में थके हुए शरीर से खाना बनाना आदमी को कैसे सुकून मिले!

इतने में वे बोल पड़े, "मेरी पत्नी 10 साल पहले गुजर गई। मेरा एक लड़का है पर वह मेरे साथ नहीं रहता। मैं अकेला रहता हूँ और मुझ अकेले को खाने को कितना चाहिए!"

मैंने बोला, "यहीं पर कैंटीन में फुल डिश खा लेते तो?" आप इतना सारा काम करते हो तो ढंग का खाना भी तो चाहिए ना। इस तरह जंक फूड पैक खाने से थोड़ी न पेट भरता है?"

"आपकी बात सही है पर कैंटीन वाला 60 ₹ लेता है। वह मुझे महंगा पड़ेगा। वैसे भी मेरा वेतन ज्यादा नहीं है। यूँ तो मुझसे अच्छी तरह से काम भी नहीं हो रहा है और उम्र भी तो हो गई है। सेठ कभी भी नौकरी पर ना आने का बोल दे तो क्या करूँगा! थोड़ी बचत होगी तो मुझे बाद में काम में आयेगी।" यह सुनकर मुझे उनके प्रति अनुकंपा हो आई। आदमी अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में भी सुकून से जी नहीं सकता। जीवन की यही तो बात निराली है कि कहीं कोई पैसे के लिए तरसता है। कहीं कोई अपनों के लिए तरसता है। या कोई किसी दूसरी चीज के लिए। पर जीवन में सब कुछ मिलता कहाँ है?

सोचते हुए मैंने अपना लंच बॉक्स खोला। मेरा भोजन उनको बाँटने को आग्रह करने लगा। वे मना करते रहे थे पर मैंने बहुत आग्रहपूर्वक उन्हें खिलाया। दूसरे दिन कैंटिन से

मंगा कर उनको खाना दिया। उन्होंने तृप्त होते हुए खाया। मैंने भी साथ में भोजन लिया। उनको देखकर मुझे भी काफी संतोष हुआ। खाना पूरा हुआ और घनश्याम भाई खड़े होकर बोले, "धन्यवाद, साहब!"

मैंने बोला , "अरे नहीं नहीं। इसमें क्या धन्यवाद! मुझे भी अच्छा लगा आपको खिलाते हुए!"

ऐसे ही हर रोज मैं और घनश्याम भाई कैंटीन में साथ में ही आते और मैं मेरा आधा खाना उनको दे देता। वैसे ही धर्मपत्नी घर से लंचबॉक्स में ज्यादा ही खाना भरती थी तो दोनों लोगों के लिए खाना हो जाता था। इस तरह धीरे-धीरे उनके प्रति मेरी भावना बढ़ती गई। वे नित्य उनकी बातें मुझे सुनाते रहते थे।

"सा'ब, मेरे लड़के ने मुझे दगा दिया। मुझे झाँसा देकर मेरा मकान बेच दिया। जो पैसा आया उससे उसने नया फ्लेट खरीद लिया और वहाँ रहने चला गया। मुझे कहा कि आप अपने हिसाब से रहो।"

अब इस उम्र में कहाँ जाऊँ! फिर भी मैंने भाड़े का मकान लिया और यहाँ आकर काम करता हूँ!"

उनकी बातों में बेबसी, मजबूरी दिख रही थी। आगे बोले, "कभी उससे मिलने जाता हूँ तो लड़का और उसकी बहू मेरे साथ झगड़ा करते हैं। अब वहाँ जाना भी बंद कर दिया है। मैं मेरे जितना कमाता हूँ और गुजारा करता हूँ।" घनश्याम भाई अपने जीवन की बातें मुझे बताते थे। मुझे इन बुजुर्ग आदमी की मदद करने की ज्यादा इच्छा होने लगी थी।

इस तरह 5-6 महीने बीत गए। फिर मुझे अन्य जगह अच्छी नौकरी की पेशकश मिलते ही मैंने वहाँ से नौकरी बदल दी। वहाँ नौकरी के आखिरी दिन पर मैं सभी से मिला। खासकर, घनश्याम भाई से मिलने गया। बाद में फिर घनश्याम भाई से मिलूँ भी या ना भी मिल पाऊँ। मैंने उनसे कहा, "चलिए घनश्याम भाई, अब तो पता नहीं कब मिल पाएँगे? आज यहाँ इस नौकरी का अंतिम दिन है।"

घनश्याम भाई आश्चर्यचकित हो गए, "क्या बात कर रहे हो।"

मैंने बोला, "दूसरी जगह नौकरी मिल गई है। वहाँ जा रहा हूँ।" उनके चेहरे पर सुख और दुःख दोनों भाव छा रहे थे। उन्होंने बोला, "आपको सदा याद करूँगा।" मैं भी बोला, "मैं भी आपको नहीं भूलूँगा।" जाते-जाते मैंने बोला, "आप अपने लड़के के साथ रहने चले जाना और नौकरी छोड़कर अपना ख्याल रखना।" उनको मिलकर फिर वहाँ से मैं निकल गया, हमेशा के लिए।

उसके बाद करीब एक-डेढ़ साल बीत गया। एक दिन शिवरात्रि के त्यौहार पर शिवालय में दर्शन करके मैं बाहर आ रहा था। तभी बाहर लगी भीड़ व कतार में से एक बुजुर्ग ने आवाज़ लगाई।

"साहब, कैसे हो? "

मैंने मुड़कर देखा तो वे घनश्याम भाई थे। मुझे देखकर वे अत्यंत भाव-विभोर हो गए और हर्ष से प्रफुल्लित हो रहे थे।

मैंने बोला, "आप ठीक हैं ना, घनश्याम भाई!?"

"हाँ, साहब, मैं ठीक हूँ। आप कैसे हो?"

मैंने बोला कि सब अच्छा है।

घनश्याम भाई बोले, "साहब, आज भोलेशंकर का दर्शन करने आया हूँ। भगवान ने सब अच्छा कर दिया साहब। मैं अभी मेरे लड़के के यहाँ रह रहा हूँ और वह अच्छी तरह से मेरी देखभाल करता है। 3 महीने पहले ही नौकरी छोड़ दी है। अभी घर पर आराम करता हूँ। लड़के के बच्चों के साथ मजे करता हूँ। भगवान ने अभी मुझे सुकून की जिंदगी दी है।"

मैं उनकी बात सुनकर खुश हुआ। करीब 5 मिनट की बातचीत के बाद हम दोनों अलग हुए।

आज कुछ काम से पुराने कार्यालय में फोन किया था तब बातों-बातों में मालूम पड़ा कि घनश्याम भाई इस दुनिया में नहीं रहे। मैं उनके विचार में खोया हुआ था तभी पत्नी नीला की आवाज आई। "चलिए, खाने के लिए दो बार आवाज़ दी फिर भी कोई जवाब नहीं दे रहे हो। आज रविवार है फिर भी मुझे आराम के सिवा काम ज्यादा है जल्दी आइए।"

"हाँ, अभी आता हूँ" कहकर मैं खाने के लिए मेज की ओर जाने लगा।

कभी-कभी घनश्याम भाई खूब याद आ जाते हैं। यह रचना सत्य घटना पर आधारित है।

वायरल

श्रीमती प्रिया यश प्रसाद
माँ, आर्यन प्रसाद पीजीपी-2020

“काव्या, चलो खाना खाने आ जाओ”

"बस पाँच मिनट"- काव्या ने जवाब दिया !

"आधे घंटे से तुम्हारे पाँच मिनट सुन रही हूँ, जल्दी से आ जाओ फिर मुझे किचन भी समेटना है", काव्या की माँ विभा ने कहा !

“लो आ गई”- कहकर काव्या डाइनिंग टेबल पर बैठ गई। खाना खाते हुए पूरा समय वह अपने मोबाइल में ही बिजी रही। उसके पापा सुमित ने कई बार टोका लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। खाना खाकर वह सीधा अपने कमरे में चली गई।

अगली सुबह स्कूल के लिए तैयार होते समय भी वह बार-बार फ़ोन देख रही थी। थोड़ी देर बाद वह ख़ुशी-से चहकते हुए बोली- "मम्मी, मेरी कल की वीडियो पर हज़ार लाइक्स हो गए। मम्मी प्लीज, आप अपनी फ्रेंड्स को बोलो ना मुझे फॉलो करने को, देखो अभी मेरे बस तीन हज़ार फोलोवर्स हैं। बस किसी तरह एक वीडियो वायरल हो जाए बस फिर देखना मम्मी, मैं भी सोशल मीडिया ‘इन्फ्लुएंसर’ कहलाऊँगी।"

सुमित- "काव्या छोड़ो ये पागलपन और अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो, बारहवीं अच्छे नंबर से पास कर ली तो ही टॉप के कॉलेज में एडमिशन मिलेगा।"

विभा- "हाँ काव्या, पापा ठीक कह रहे हैं !"

काव्या- "अरे! मम्मी-पापा आजकल तो छोटे-छोटे बच्चे सोशल मीडिया पर वीडियो बना कर वायरल हो रहे हैं। मुझे भी वायरल तो होने दो फिर देखना तुम्हारी बेटी कैसे लाखों रुपये कमाएगी।"

सुमित- "ओफ्फो, चलो, स्कूल बस आ गई।"

काव्या- "ओके, बाय-बाय मम्मी-पापा !"

काव्या, सुमित और विभा की इकलौती बेटी है। दसवीं में 96 प्रतिशत नंबर लाने पर उसके मम्मी-पापा ने काव्या के माँगने पर उसे स्मार्ट फोन खरीदकर दिया, ये सोचकर कि कोचिंग जाएगी, बाहर रहेगी तो संपर्क करने में आसानी होगी, साथ ही स्कूल के प्रोजेक्ट और होमवर्क में भी सहायता मिल जाएगी, लेकिन ग्यारहवीं पास करते ही सबकी देखा-देखी उसे भी सोशल मीडिया का चस्का लग गया और अब उसका अधिकतर समय फोन में वीडियो देखने या खुद की वीडियो बनाने में बीतने लगा। शुरू-शुरू में जब उसके सब्सक्राइबर नहीं बढ़ रहे थे तो वो परेशान रहती। खाना-पीना भी छोड़ देती। फिर जैसे ही कुछ सौ लोग उसे फॉलो करने लगे तो वो सामान्य हो गई लेकिन फिर लाइक, कमेन्ट और व्यूज को लेकर परेशान रहने लगी। स्कूल की पेरेंट्स मीटिंग और कोचिंग के टीचर्स ने भी कहा कि उसका ध्यान पढ़ाई से हट रहा है तो विभा और सुमित ने उससे फोन वापस ले लिया। फोन न मिलने पर वह डिप्रेशन में चली गई।

आखिर बेटी को डिप्रेशन से बचाने के लिए उन्होंने फोन वापस कर दिया। उसका डिप्रेशन तो ख़त्म हो गया पर सोशल मीडिया का एडिक्शन (नशा) हो गया। अब कुछ महीने से उसे वायरल होने की सनक सवार हो गई। चार महीने ही बचे थे बोर्ड के पेपर के लिए लेकिन काव्या

को पेपर से ज्यादा चिंता वीडियो वायरल न होने की रहती थी। उसने डांस, गाना, हँसी-मजाक, मिमिक्री, आदि सब तरह की वीडियो बनाई लेकिन वायरल नहीं हुई।

एक दिन विभा ने घबराते हुए अपने पति सुमित को फोन किया-

"हेलो, सुमित !"

"हाँ, बोलो विभा..."

"सुमित, दो मिनट पहले काव्या की क्लास टीचर का फोन आया और उन्होंने कहा कि जल्दी से स्कूल आओ"

सुमित- "काव्या ठीक तो है न ?"

विभा- "हाँ वो ठीक है ...!!! टीचर ने कहा एक जरुरी बात करनी है इसलिए पैरेंट के आने पर ही काव्या को घर भेजेंगे !"

सुमित- "ओह्ह ! एक काम करो, तुम अभी निकलो मैं भी जल्दी से आता हूँ !"

विभा- "ठीक है, जल्दी आना, मुझे घबराहट हो रही है !"

सुमित- "टेंशन मत लो, पढाई-लिखाई की बात होगी ! तुम निकलो अब .."

विभा ने पर्स और मोबाइल लिया और दस-पंद्रह मिनट में स्कूल पहुँच गई।

रिसेप्शन से परमिशन लेकर वह प्रिंसिपल के रूम में दाखिल हुई जहाँ काव्या और उसकी क्लास टीचर भी मौजूद थे। विभा द्वारा अभिवादन करने के बाद प्रिंसिपल ने आदर सहित विभा को सामने की कुर्सी पर बैठने के लिए कहा। कुर्सी पर बैठते हुए विभा ने एक सरसरी निगाह काव्या पर डाली जो सिर झुकाए बैठी हुई थी। विभा के बैठने के बाद प्रिंसिपल ने कहा- "विभा जी, आपकी बेटी आज मोबाइल के साथ पकड़ी गई। क्लास में छुप-छुपकर ये वीडियो बना रही थी। आपको तो पता ही है कि स्कूल में मोबाइल लाना नियमों के खिलाफ है फिर भी आपने इसे स्कूल लाने दिया, आखिर क्यों ?" ये सुनकर विभा चौंक गई क्योंकि उसे नहीं पता था कि काव्या मोबाइल लेकर गई थी। उसने काव्या की ओर गुस्से से देखा। काव्या ने प्रिंसिपल की तरफ़ देखते हुए धीरे से "सॉरी" कहा तभी प्रिंसिपल रूम में काव्या के पापा भी आ गए और सब सुनकर उन्होंने भी सॉरी कहा। प्रिंसिपल ने कहा- "काव्या सोशल मीडिया पर बहुत एक्टिव है। चार महीने में बोर्ड के पेपर हैं। आप लोगों ने ध्यान नहीं दिया तो रिजल्ट ख़राब होने से अच्छी जगह एडमिशन नहीं मिलेगा।" माता-पिता दोनों ने काव्या को समझाने का वादा किया और काव्या द्वारा लिखे माफीनामे पर साइन करके काव्या को लेकर घर की तरफ़ निकल पड़े। रास्ते में तीनों ने कोई बातचीत नहीं की।

घर पहुँचकर दोनों ने काव्या को बहुत समझाया तो काव्या ने सॉरी बोलकर वादा किया कि वह अब से स्कूल में फोन नहीं ले जाएगी।

करीब दस दिन बीतने के बाद सुमित के ऑफिस में उसका सहकर्मी भागते हुए आया और फोन में कुछ दिखाते हुए बोला- "ये तुम्हारी बेटी काव्या है न?"

सुमित ने वीडियो में देखा कि काव्या अपने अपार्टमेंट की छत जो दसवीं मंजिल पर है वहाँ खड़ी होकर लाइव स्ट्रीम में डांस कर रही है। सुमित को बहुत गुस्सा आया और उसने विभा को फोन करके उसे छत पर जाने के लिए कहा। विभा दौड़ते हुए छत पर गई पर उसे काव्या नहीं दिखी। नीचे सड़क पर शोर सुनकर विभा ने किनारे की दीवार से नीचे झाँका तो उसके हाथ-पैर ठंडे हो गए और बेहोशी जैसी हालत हो गई। काव्या नीचे गिरी हुई थी और उसके सिर से खून बह रहा था। थोड़ी देर बाद पुलिस और एम्बुलेंस काव्या को लेकर हॉस्पिटल पहुँचे। दो दिन हो गए आईसीयू में !! बैड पर लेटी काव्या की धड़कने चल रही थीं लेकिन होश नहीं आ रहा था। डॉक्टर का कहना था कि जल्दी होश नहीं आया तो काव्या "कोमा" में जा सकती है।

आईसीयू के बाहर काव्या के मम्मी-पापा को पुलिस ने उसकी वो आखिरी लाइव वीडियो दिखाई जिसमें दिख रहा था कि काव्या ने मजाक-मजाक में कहा कि अगर इस लाइव पर उसे दस लाख व्यूज नहीं मिले तो वह छत से कूद जाएगी। सनसनी और व्यूज बढ़ाने के लिए वह छत के किनारे बनी दीवार पर चढ़ गई। उसने सोचा कि कुछ देर में वह उतर जाएगी लेकिन उसका संतुलन बिगड़ा और वह नीचे आ गिरी। वीडियो देखकर सुमित और विभा फूट-फूटकर रोने लगे।

हॉस्पिटल में लगे टीवी स्क्रीन पर काव्या के वीडियो के "वायरल" होने की खबर चल रही थी!!

संस्थान में हरित पहल

वृक्षारोपण गतिविधि

परिसर में विभिन्न स्थानों पर लगभग 300 नए पौधे लगाए गए हैं। मुख्य परिसर में परियोजना स्थलों से 73 पूर्ण विकसित पेड़ों को वैज्ञानिक स्थानांतरण विधियों का उपयोग करके परिसर के अन्य क्षेत्रों में प्रत्यारोपित किया गया, जिससे बुनियादी ढांचे के विस्तार के लिए पेड़ों की कटाई से बचा जा सके।

वर्षा जल संचयन एवं जल पुनर्भरण प्रणाली

आईआईएम अहमदाबाद ने परिसर में वर्षा जल संचयन (भूजल पुनर्भरण) प्रणाली को बहुत अच्छी तरह से डिजाइन और स्थापित किया है। इसका एक हिस्सा 50 लाख लीटर की सबसे बड़ी भूजल पुनर्भरण प्रणाली है जिसे मास्टर आर्किटेक्ट श्री लुइस काहन ने 1970 के दशक में बनाया था। इसके बाद, 8 और रिचार्ज सिस्टम डिजाइन तथा स्थापित किए गए और मूल सिस्टम में शामिल किए गए। संस्थान हर साल मानसून से पहले इन सभी जल रिचार्जिंग सिस्टम का रखरखाव करता है। हमारे संस्थान के नवनिर्मित भवनों (छात्रावास 28 से 43) में फ्लशिंग के लिए अपशिष्ट जल का उपयोग करने हेतु ट्रिपल लाइन पाइपलाइन की व्यवस्था की गई है।

सीवेज उपचार संयंत्र

हमारे संस्थान के नए परिसर में बनने वाले छात्रावास-41 के बेसमेंट में 200 केएलडी क्षमता का सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) बनाया जा रहा है। मुख्य परिसर के परिधीय क्षेत्रों में एसटीपी की स्थापना की उपयुक्तता का पता लगाने के लिए एक सर्वेक्षण किया गया है। जल निकासी पाइपलाइनों के मौजूदा नेटवर्क को बाधित किए बिना विभिन्न जल निकासी आउटलेट पर विभिन्न क्षमताओं के एसटीपी स्थापित करने पर विचार किया जा रहा है। उपचारित पानी का उपयोग परिसर में बगीचों की सिंचाई के लिए किया जाएगा।

जैविक अपशिष्ट खाद

परिसर में ऑर्गेनिक वेस्ट कंपोस्टर (ओडब्ल्यूसी) मशीन, वर्मी-कल्चर पिट, बायो-गैस इकाइयाँ स्थापित की गई हैं जो दोनों परिसरों में उत्पन्न होने वाले जैविक कचरे का उपचार/विघटन करती हैं। इन इकाइयों से निकलने वाला विघटित उत्पाद खाद के रूप में काम करता है जिसका उपयोग परिसर के उद्यान क्षेत्रों में खाद डालने के लिए किया जाता है।

सौर ऊर्जा परियोजना

अक्षय ऊर्जा का दोहन करने के उद्देश्य से, संस्थान ने जहाँ भी संभव हो, छत पर सौर ऊर्जा संयंत्र लगाने का निर्णय लिया है। नए परिसर की अधिकांश इमारतों की छतों पर 531 केडब्ल्यूपी क्षमता का रूफटॉप सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है । मुख्य परिसर में लाइब्रेरी भवन की छत पर 20 केडब्ल्यूपी क्षमता का रूफटॉप सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है।

अन्य पहलें

लॉन के लिए पानी के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए स्प्रिंकलर और ड्रिप सिंचाई पद्धति का उपयोग किया जाता है। पूरे परिसर में एलईडी लैंप और मोशन-एक्टिवेटेड लाइट जैसे ऊर्जा बचत उपकरण लगाए गए हैं। जहाँ भी संभव हो, पारंपरिक एसी को वीआरएफ सिस्टम या नवीनतम उच्च रेटिंग वाले एसी से बदल दिया गया है। सभी गेस्ट हाउस और एमएसएच को ऊर्जा बचत वाली वाशिंग मशीन और रेफ्रिजरेटर प्रदान किए गए हैं।

धर्म एवं राजनीति में सम्यक दर्शन कितना आवश्यक

रवि डी. पारेख
अकादमिक सहयोगी

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च |
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी ||

भगवद् गीता

सम्यक दर्शन की आवश्यकता आज के समय में कितनी आवश्यक है? मुख्यतः धर्म एवं राजनीति के रूप में, जहाँ बड़े पैमाने पर बहुजन समाज पर तथा प्रमुखतः वर्तमान और भविष्य की नींव रखने और मजबूती प्रदान करने में बड़ा योगदान करते हैं वहाँ जरूर आवश्यक है। धर्म और राजनीति हमारे समाज का अभिन्न अंग है। जहाँ धर्म हमारे विचार एवं आचरण निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है वहीं राजनीति उन विचारधाराओं को समाज में कुछ बुनियादी परिवर्तन लाने में सहायक होते हैं। इससे यह आकलन लगाया जा सकता है कि किसी समाज या वहाँ के नागरिकों के विकास के लिए सम्यक दर्शन की क्या महत्ता है।

श्रीमद भगवद् गीता के बारहवें अध्याय में श्री कृष्ण जी एक दीर्घ दृष्टि और समाज को सही दिशा देने हेतु एक सम्यक दर्शन प्रदान करके यह बताते हैं कि – अद्वेष्टा सर्वभूतानाम अर्थात् सर्व भूतों (प्राणियों) के प्रति केवल प्रेम रखना ही काफी नहीं, अपितु उनके प्रति किसी भी प्रकार के द्वेष को ना लाया जाए। यही एक मनुष्य के लिए सम्यक दर्शन की भावना का बड़ा उदाहरण है, क्योंकि द्वेष आने से नुकसान होता है –

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।

जब हम इतिहास में दृष्टिपात करते हैं तो पता चलता है कि मौर्य शासन काल में धर्म और राजनीति में एक सम्यक दर्शन सम्राट अशोक द्वारा लाया गया था, जिससे उस समय की अधिकांश प्रजा पर, उनके सामाजिक जीवन पर, अर्थशास्त्र पर, मनोविज्ञान एवं धर्माचरण पर भी यह प्रभाव देखने को मिलता है। उसके बाद मध्यकालीन गुजरात राज्य शासन में भी ऐसे प्रभावी राजा आए जिनकी वजह से उस समय का सामाजिक जीवन, राज्य व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था, भौतिक सुख-समृद्धि उच्चतर स्तर पर थे। धर्म हमारी पद्धतियाँ, विचारधारा, आचरण, धारणाएँ इत्यादि को निर्मित करने के साथ-साथ प्रभावित भी करता है। फिर भी, धर्म का एक संकुचित पहलू भी है, जिसे अक्सर लोग स्वयं या किसी एक गुट के फायदे के लिए गलत तरीके से प्रचारित-प्रसारित करते हैं। परंतु सम्यक दर्शन ही है जो हमें धर्म के माध्यम से सही दिशा प्रदान करता है। जीवन के हर मोड़ पर दुविधाएँ, मुश्किलें आती हैं। ऐसी स्थिति में धर्म अक्सर लोगों का मार्गदर्शन करता है। धार्मिक पुस्तकें नीति, अर्थशास्त्र, बलिदान, ज्ञान जैसी महत्त्वपूर्ण बातों को बेहद सरलता एवं सहजता से कहानियों, कथाओं के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया जाता है। धर्म स्वयं में बहुत ही उत्तम है, लेकिन भूलकर भी गलत तरीके से प्रदर्शन या प्रसारण समाज के लिए हानिकारक साबित हो सकता है।

धर्म एवं राजनीति सामाजिक जीवन के ऐसे आईने हैं जिनमें सामाजिक एवं पारिवारिक भावनाएँ, समाज के विभिन्न समुदायों का आपसी ताल्लुकात, ऐक्यभाव महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। सोलंकी काल में धर्म (हेमचंद्राचार्य) तथा राजनीति में सम्यक दर्शन के प्रभाव से गुजरात में सुवर्ण युग का प्रारंभ हुआ था। प्रजा में ऐक्य, सुख रूप रहने की भावना, राजा में प्रजा के हित का ध्यान तथा कार्य प्रणाली के आधार पर रहे वर्ण व्यवस्था को सही रूप में लाने का कार्य सबसे ज्यादा धर्म और राजनीति कर सकते हैं। जहाँ सोलंकी युग में समान न्यायतंत्र, प्रजा में राजनीति पर विश्वास, भयमुक्त जीवन, मूलभूत अधिकार, सामाजिक जीवन में भेदभाव न्यूनतम, शिक्षण सर्वजन सुखाय की भावना, आदि सभी बातों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक था।

1947 के बाद जब भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई तब भारतीय संविधान में धर्म तथा राजनीति में सम्यक दर्शन लाने हेतु भारतीय संविधान को मजबूत बनाने के लिए बड़ा प्रशंसनीय कार्य किया है। निम्नलिखित संक्षिप्त में भारतवासियों के प्रति संविधान के मूल रूप को देखना कितना सुख रूप और गौरवशाली लगता है –

भारतीय संविधान – धर्म तथा राजनीति के कुछ सारांश

	भाग	अनुच्छेद
1)	1 से 5	भारत के बारे में
2)	6 से 11	सीमा तथा आमुख
3)	12 से 35	मूलभूत अधिकार
4)	36 से 50	मार्गदर्शक सिद्धांत
5)	51 ए	मूलभूत कर्त्तव्य
6)	52 से 151	गण राज्य – केंद्र सरकार
7)	152 से 237	राज्य सरकार
8)	238	रद्द किया गया
9)	239 से 242	न्यायतंत्र
10)	243 से 243जेड	पालिका सेवा
11)	245 से 263	वित्तीय
12)	264 से 300ए	विशेष प्रभार
13)	301 से 307	वाणिज्यिक सेवाएँ
14)	308 से 314	राज्य-केंद्र के संबंध
15)	315 से 329	चुनाव
16)	330 से 342ए	जातिगत आरक्षण
17)	343 से 351	भाषाएँ
18)	352 से 360	महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद
19)	361 से 367	केंद्र के अधिकार
20)	368	विशेष अधिकार - राष्ट्रपति
21)	369-392	विशिष्ट अधिकार
22)	393-395	प्रकीर्ण

उपरोक्त बातों से स्पष्ट है कि सम्यक दर्शन के कारण ...

* न्यायतंत्र * शिक्षण	श्रेष्ठ नागरिक श्रेष्ठ परिवार	धर्म के सम्यक दर्शन का ज्यादा प्रभाव
* समान हक *भेदभाव शून्यता	श्रेष्ट समाज श्रेष्ठ देश	राजनीति के सम्यक दर्शन का ज्यादा प्रभाव

*मनुष्य के कर्त्तव्य

रामराज्य की बात करते समय यह बात स्पष्ट है कि ... (रामरक्षा स्तोत्रम्)

रामा राजमणी सदा विजयते, राम रमेशं भजे – ब्रह्म समाज में सदा विजय की भावना रखी जाती है।

रामे भीरुता निशा चरचम् रामाय तस्मै नमः – प्रजा में भय का माहौल ना हो।

रामा नास्ति परायण परतरम रामोस्यादास्योस्महम् – प्रजा कार्यशील रहे और समाज की प्रगति के लिए प्रतिबद्ध रहे।

रामेचीतलता भयतुमे रामाय तस्मै नमः – धनवान लोग खुद को समाज के दास बनाए, ना कि शोषणकार बनें।

ऐसे समाज में सदा रामराज्य आ सकता है।

हमारी संस्कृति पर और संस्कार में धर्म और राजनीति के बारे में यह बात स्पष्ट है कि – (लक्ष्मीसुक्तम)

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यांहिरण्यंप्रभूतंगावोदास्योऽश्वान्विन्देयंपूरुषानहम्॥

अंत में, हमारा भारत वर्ष फिर से धर्म एवं राजनीति के सम्यक दर्शन से विश्वगुरु बने यही प्रार्थना के साथ –

सोच को बदलो,
सितारे बदल जाएँगे।
नजरों को बदलो,
नजारे बदल जाएँगे।
रास्ते बदलने की ज़रूरत नहीं,
दिशा को बदलें
किनारे बदल जाएँगे।

दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ, पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत ना हो, ये मैं सह नहीं सकता।

- आचार्य विनोबा भावे

भारत की वर्तमान अर्थव्यवस्था

प्रियंकेश दीक्षित
अकदामिक सहयोगी

भारत धीरे-धीरे जगद्गुरु के रूप में प्रसिद्ध हो रहा है। निरंतर नए आयामों से अपनी वर्तमान अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में लगा हुआ है। वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की पाँच सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और इसका लक्ष्य अगले कुछ वर्षों में विश्व की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनना है।

हमारी जनसंख्या 1.42 बिलियन है और 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनना हमारा लक्ष्य है। वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में भारतीय अर्थव्यवस्था को एक सशक्त एवं सुदृढ़ अर्थव्यवस्था बनाना है, जिसके लिए मोदी 3.0 में 100 दिनों के अंदर कई बड़े बदलाव किए गए हैं। जैसे –

- नए ऊर्जा स्रोतो पर ध्यान केंद्रित करना।
- नए बंदरगाहों का निर्माण करना।
- भारतीय सैन्य शक्ति को बढ़ावा देने हेतु, स्वदेशी तकनीक से निर्मित लड़ाकू विमानों को तैयार करने पर जोर देना।
- वन्दे भारत ट्रेनों से भारत की रेल व्यवस्था को गति प्रदान करना।
- ग्रीन हाइड्रोजन के एक नए ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोग हेतु ग्रीन हाइड्रोजन प्लांटों का निर्माण करना।
- पेंशन स्कीम को सुचारु रूप से चलाने पर बल देना।
- निर्माण क्षेत्र में कई बड़े रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण करना।
- दुनिया के सबसे बड़े हवाई अड्डे झेवर एयरपोर्ट का निर्माण कराना।
- शहरों में मेट्रो रेल को गति प्रदान करना।
- भारत की विदेश नीति को मजबूत करना ताकि युद्ध में सम्मिलित देशों जैसे, रूस और युक्रेन के मध्य शान्ति एवं संधि वार्ता का प्रस्ताव रखा जा सके।

उपरोक्त सभी लक्ष्य कार्य भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करते हैं। इसके अतिरिक्त कई अन्य क्षेत्रों पर भी भारत जोर दे रहा है। जैसे कि –

- **सेमी कंडक्टर निर्माण** – भारत में वर्तमान में बहुत कम कंपनियाँ सेमी कंडक्टर बनाती हैं। आने वाले समय में भारत विश्व में सबसे बड़ा सेमी कंडक्टर निर्माता बनना चाहता है।
- **रेल विभाग** – भारतीय रेल हर दिन नए आयामों को छू रही है, जिसमें वन्दे भारत ट्रेन, मेट्रो ट्रेन, बुलेट ट्रेन, आरआरटीएस सिस्टम, डेडिकेटेड फ्रीट कोरिडोर जैसे कई बड़े परिवर्तन शामिल हैं।
- **सैन्य विभाग** – वर्तमान में भारत के सभी पड़ौसी देशों में युद्ध जैसे हालात बने हुए हैं। इस दिशा में भारत अपने सैन्य विभाग को नए उपकरणों जैसे- राफेल विमान, आधुनिक बंदूकें, ड्रोन्स, पनडुब्बियाँ इत्यादि से सुसज्जित कर रहा है।
- **निर्माण विभाग** – भारत अपने अवसंरचना क्षेत्र को विश्व स्तरीय बनाने के लिए नए हाई वे, भारत माला जैसी कई बड़ी राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजनाओं पर काम कर रहा है।
- **जनकल्याणकारी योजनाएँ** – भारत ने कई जनकल्याणकारी योजनाओं का शुभारंभ देश की जनता के लिए किया है जैसे - किसान पेंशन योजना, आयुष्मान कार्ड, प्रधानमंत्री मुफ्त बिजली योजना आदि।

- **अंतरिक्ष विभाग** – विगत कुछ वर्षों में भारत के अंतरिक्ष विभाग ने कई नए मिशन प्रारंभ किए और उनमें हमें बड़ी सफलताएँ प्राप्त हुई हैं जैसे - चंद्रयान का सफलतापूर्वक चाँद पर उतरना। इस प्रगति को देखते हुए कई देशों ने अपने सेटेलाइटों को भारत से प्रक्षेपित किया है। इससे अंतरिक्ष विभाग के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को गति मिली है।
- **ऊर्जा क्षेत्र** – भारत के कई शहर बढ़ती जनसंख्या और प्रदूषण से प्रभावित हैं। प्रदूषण की समस्या के निवारण तथा बढ़ती जनसंख्या के लिए बढ़ती ऊर्जा खपत जैसी समस्या के समाधान हेतु भारत का ऊर्जा क्षेत्र निरंतर परंपरागत ऊर्जा स्रोतों को छोड़कर नए स्रोतों जैसे - सौर ऊर्जा, बायो-ईंधन, ग्रीन हाइड्रोजन पर कार्य कर रहा है, जिससे ऊर्जा खपत के नियंत्रण के साथ-साथ कार्बन उत्सर्जन की भी समस्या कम हो रही है।

उपसंहार : भारत अपनी कूटनीति और व्यवहार के कारण आज हर देश से अच्छे संबंधों को कायम रखने को तत्पर है। इसी वजह से आज हर देश भारत से जुड़कर नए-नए निवेश कर रहा है। जैसे - भारत का यूपीआई सिस्टम, संयुक्त अरब अमीरात, फ्रांस, जर्मनी जैसे देशों ने किया है। भारत के ब्रह्मोस मिसाइल को भी कई देशों ने खरीदा है। भारत निरंतर अपनी रेल, अफ्रीकी देशों में सप्लाई कर रहा है। ये सारे कदम दर्शाते हैं कि भारत एक सशक्त अर्थव्यवस्था बन रहा है। विश्व बैंक के अनुसार वर्ष 2025 तक जब सभी बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ 2 - 5 प्रतिशत के बीच वृद्धि करेंगी, तभी भारत 7 - 8 प्रतिशत के बीच वृद्धि करेगा और वर्ष 2030 तक भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व ने बदला है,
रेल, स्पेस और निर्माण की गति अवस्था।
हमारे देश के लिए मोदी जी का संकल्प है कि,
विश्व गुरू बने तथा तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था।।

वह दास्तानें फिर कभी

प्रोफेसर प्रशांत दास
'साहिल'

वह दास्तानें फिर कभी,
अपनी जुबानी फिर कभी,
ये फलक है रंगीं सी हुई
अब आसमानी फिर कभी।

ये महफ़िलों की है गली,
यहाँ सुबह क्या औ' शाम क्या,
ख़्वाबों में जीने वालों की,
असली कहानी फिर कभी।

जल-जल के दहके जाए जो,
सीना मेरा ये कलम मेरी,
मर-मर के बीते जाते पल,
अब जिंदगानी फिर कभी।

दर्दों में जीने का हुनर सीखा
किये बरसों से हम,
बरपे कहर अब हर पहर,
हो मेहरबानी फिर कभी।

हैं दाग़-ए-दिल के निशां छिपे,
पर्दों में यूँ ही रह गए,
हर चीज़ का होता ज़िकर,
उनकी निशानी फिर कभी।

पलकों छलकता जाम यूँ,
आँखों से बहती है नदी,
हर पल अंधेरा ही रहे,
सुबह सुहानी फिर कभी।

बातें पुरानी फिर कभी,
और ये जवानी फिर कभी,
'साहिल' मिले तो यूँ करें,
हर पल रूमानी फिर कभी।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

प्रतीक पटेल
मल्टी टास्किंग स्टाफ

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का उद्देश्य महिलाओं को समाज में बराबरी का हक दिलाना था। साथ ही, किसी भी क्षेत्र में महिलाओं के साथ हो रहे भेदभाव मिटाने के मकसद से भी इस दिवस को मनाया जाता है। इस दिन महिलाओं के अधिकारों की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित करने और उन्हें जागरूक करने के उद्देश्य से कई कार्यक्रमों और अभियानों का आयोजन किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस प्रति वर्ष 8 मार्च को मनाया जाता है। सर्वप्रथम इस दिवस को मनाने की शुरूआत वर्ष 1857 में 8 मार्च को की गई थी। न्यूयॉर्क शहर में पंद्रह हज़ार महिला कपड़ा श्रमिकों ने अनुचित कार्य स्थितियों और महिलाओं के असमान अधिकारों के विरोध में मार्च निकाला था। यह कामकाजी महिलाओं द्वारा की गई पहली संगठित हड़तालों में से एक थी, जिसके दौरान उन्होंने कम कार्य दिवस और उचित वेतन की माँग की थी। 8 मार्च, 1908 को भी, सुई के व्यापार में महिला श्रमिकों ने बाल श्रम और स्वेटशॉप कार्य स्थितियों का विरोध करने और महिलाओं के मताधिकार की माँग करने के लिए न्यूयॉर्क शहर के लोअर ईस्ट साइड में मार्च किया था। उसके बाद से वर्ष 1910 से शुरू होकर, 8 मार्च को हर साल अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। शैक्षिक पाठ्यक्रम में महिलाओं के इतिहास को जोड़ने के लिए 1978 में महिला इतिहास सप्ताह की स्थापना की गई थी। 1987 में, राष्ट्रीय महिला इतिहास परियोजना ने महिलाओं के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक योगदान के उत्सव के रूप में पूरे मार्च को शामिल करने के लिए कांग्रेस से सफलतापूर्वक याचिका दायर की। संयुक्त राष्ट्र ने 1977 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को आधिकारिक तौर पर मान्यता दी और 1975 से इसे 8 मार्च को मनाया जाने लगा। इस दिन प्रगति पर चिंतन करने, परिवर्तन का आह्वान करने और अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा में महिलाओं के योगदान का जश्न मनाने पर जोर दिया जाता है।

इस दिन को मनाने का विचार क्लेरा जेटकिन नाम की एक महिला को आया था। उन्होंने इस विचार को वर्ष 1910 में कोपनहेगन में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय कामकाजी महिला सम्मेलन में दिया था। उस समय इस सम्मेलन में 17 देशों की 100 महिला प्रतिनिधि हिस्सा ले रही थीं और सबने क्लेरा के इस सुझाव का स्वागत किया था। इसके बाद अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पहली बार 1911 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड में मनाया गया था। इसका शताब्दी समारोह वर्ष 2011 में मनाया गया था।

सर्वप्रथम जब 8 मार्च को महिला दिवस मनाने की शुरूआत की गई थी, तब इस आयोजन को एक थीम दी गई थी। वह थीम थी, सेलीब्रेटिंग द पास्ट, प्लानिंग फ़ॉर द फ़्यूचर (अतीत का जश्न, भविष्य की योजना) । इसी को देखते हुए प्रति वर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को एक थीम के साथ मनाया जाता है। यह थीम संदर्भ समय की स्थिति पर आधारित होती है। इसी क्रम में वर्ष 2023 के अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की थीम एम्ब्रेस इक्विटी अर्थात लैंगिक समानता पर रखी गई थी।

उपसंहार – अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस हमें यह बताता है कि मानव को बिना किसी भेदभाव के महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि महिलाओं से ही सृष्टि का श्रृंगार होता है। इस दिन हम समझ सकते हैं कि, समाज को सभ्य बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि हमारी नारी सशक्त हों। समाज को समृद्धि की ओर ले जाने में महिलाओं का मुख्य योगदान होता है और यह किसी को भी नहीं भूलना चाहिए।

माँ का अटूट प्रेम

प्रतिमा भारती
पूर्वछात्रा, पीजीपी-एफ़एबीएम (2014-16)

यह एक माँ और उसके बच्चे के अद्भुत और अनमोल रिश्ते की अनुभव यात्रा है, जो गर्भ से लेकर वयस्क होने तक के हर चरण में एक नया मोड लेता है, लेकिन माँ का प्रेम हमेशा स्थिर और अडिग रहता है। यह अनुभव यात्रा एक माँ के असीमित प्रेम, उसकी देखभाल, और उसके बच्चे के साथ साझा किए गए इस अद्वितीय बंधन की है, जो हर पहलू में बदलता है, लेकिन अपने मूल रूप में हमेशा सशक्त और अविचलित रहता है। माँ के इस निश्चल और असीमित प्रेम की शुरुआत गर्भ से ही शुरू हो जाती है।

एक छोटे से गाँव में, एक परिवार अपने पहले बच्चे के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था। दीपशिखा, जो गर्भवती थी, इस नए अनुभव को लेकर बहुत उत्साहित थी। यह एक ऐसी अनुभूति है, जिसे शब्दों में व्यक्त करना बहुत ही मुश्किल होता है। पहली बार गर्भवती होने पर हर माँ के मन में खुशी, उत्साह, आशंका, और कभी-कभी भय जैसे मिश्रित एहसास होते हैं। सबसे पहले, गर्भावस्था का पता चलने पर जो सबसे गहरी भावना एक माँ के लिए होती है, वह है खुशी और उत्साह लेकिन सबसे प्रमुख भावना होती है माँ बनने का गर्व और असीमित प्रेम।

यह एक नए जीवन के आगमन की उम्मीद होती है, और यह एहसास माँ को एक नई जिम्मेदारी के साथ जोड़ता है। यह वह क्षण होता है, जब उसे पता चलता है कि वह न केवल एक नए जीवन को आकार देने जा रही है, बल्कि वह किसी और के अस्तित्व का भी हिस्सा बन रही है। गर्भ में पल रहे बच्चे की धड़कन को महसूस करना, उसके छोटे-छोटे अंगों के हिलने-डुलने का एहसास करना.... यह सब एक अद्भुत अनुभव होता है।

इसके साथ ही, माँ के मन में खुशियों के साथ-साथ चिंता और जिम्मेदारी का भी अहसास होता है। क्या वह अपने बच्चे के लिए अच्छा कर पाएगी? क्या उसकी सेहत ठीक रहेगी? क्या वह माँ बनने के लिए तैयार है? इन सवालों से वह घिरी होती है, क्योंकि गर्भवती होने के साथ ही माँ के भीतर एक नई दुनिया बसने लगती है। वह बच्चे की सेहत, भविष्य और उसकी परवरिश को लेकर बहुत अधिक सोचने लगती है। इसके अलावा, शारीरिक और मानसिक बदलाव भी माँ को महसूस होते हैं। गर्भावस्था के पहले लक्षण जैसे कि उल्टी, थकान, और शरीर में परिवर्तन उसे यह याद दिलाते हैं कि अब उसका जीवन पूरी तरह से बदलने वाला है। वह महसूस करती है कि उसका शरीर अब केवल उसका नहीं, बल्कि उस नन्हें जीव का भी है, जो धीरे-धीरे बढ़ रहा है।

जब वह अपने गर्भ में पल रहे बच्चे के बारे में सोचती है, तो उसके मन में बेहद प्यारी और अनमोल भावनाएँ उमड़ती हैं। यह सोचकर कि उसका बच्चा उसके अंदर पल रहा है, वह एक गहरी आस्था और प्रेम का अनुभव करती है, जो कभी शब्दों में नहीं बताया जा सकता। उसे लगता है कि यह प्रेम केवल शब्दों से नहीं, बल्कि अनुभव से ही समझा जा सकता है। माँ और बच्चे के बीच यह नजदीकी, यह संबंध गर्भवस्था के पहले दिनों से शुरू होता है। जैसे ही दीपशिखा के भीतर बच्चे की हर छोटी-सी हरकत होती, वह इसे महसूस करती। वह जानती थी कि वह न केवल उसे शारीरिक रूप से पोषित कर रही है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी वह उसे अपने प्रेम से भर रही है। यह अज्ञेय और अदृश्य बंधन जीवन के पहले कदम से ही मजबूत होना शुरू हो जाता है।

दीपशिखा का जीवन उस दिन पूरी तरह से बदल गया, जब उसने अपनी बेटी चुक्कू को जन्म दिया। उसकी छोटी-सी जान ने पहली बार अपने रोने की आवाज़ निकाली, और दीपशिखा ने उसे आवाज दी बेटू.... फिर क्या अचानक से उस बच्चे ने रोना बंद कर दिया और अपनी माँ की आवाज सुनने लग गई। दीपशिखा ने उसे अपनी गोदी में उठाया। वह

क्षण किसी अद्भुत एहसास से कम नहीं था। चुक्कू का पहला आँसू, उसकी पहली मुस्कान, और उसका पहला स्पर्श - जैसे दीपशिखा की इन साधारण चीजों में समाहित हो गए थे।

दीपशिखा के लिए यह केवल शारीरिक जिम्मेदारी नहीं थी, बल्कि यह एक भावनात्मक आस्था का भी प्रारंभ था। हर रोने, हर मुस्कान और हर झपकी के साथ, दीपशिखा अपनी बेटी के साथ एक गहरे, अदृश्य संबंध में बंध चुकी थी। वह उसके हर दर्द और सुख को अपने भीतर महसूस करती। उसकी देखभाल और प्यार उसके जीवन की सबसे बड़ी प्राथमिकता बन गई थी। जैसे-जैसे चुक्कू बड़ी होती गई, दीपशिखा की जिम्मेदारी और बढ़ गई। अब केवल उसकी शारीरिक देखभाल ही नहीं, बल्कि उसकी मानसिक और भावनात्मक स्थिति की भी माँ को चिंता थी। यह समय था जब दीपशिखा ने अपनी बेटी को जीवन के महत्वपूर्ण संस्कारों से परिचित कराना शुरू किया। वह उसे अच्छाई, सच्चाई, समझदारी और ईमानदारी के महत्व को समझाती।

दीपशिखा चुक्कू को अपनी कहानियों से संस्कार देती, उसे यह सिखाती कि जीवन में संघर्ष आएंगे, लेकिन आत्मविश्वास और दृढ़ता से ही वह हर मुश्किल को पार कर सकती है। यह चरण एक माँ के लिए सबसे कठिन होता है, क्योंकि इस समय बच्चे की दुनिया का दृष्टिकोण आकार लेना शुरू होता है। दीपशिखा ने अपनी मेहनत और प्यार से चुक्कू के जीवन को एक मजबूत आधार दिया, जो भविष्य में उसके निर्णयों और कार्यों को प्रभावित करने वाला था। समय बीतता गया और चुक्कू युवावस्था में पहुँच चुकी थी । वह अपने करियर की दिशा में कदम बढ़ाने वाली थी। यह वह समय था जब दीपशिखा को अपनी बेटी की स्वतंत्रता को पूरी तरह से स्वीकार करना था, लेकिन एक माँ के रूप में वह हमेशा उसे देखभाल और मार्गदर्शन देने के लिए तैयार थी।

"माँ, अब मैं अपने रास्ते पर चलने के लिए तैयार हूँ," चुक्कू ने एक दिन कहा। दीपशिखा ने उसे देखा और मुस्कुराते हुए कहा, "मैं जानती थी कि तुम तैयार हो, बेटू। मुझे गर्व है कि तुमने अपनी राह चुनने का फैसला किया है। लेकिन याद रखना, तुम हमेशा मेरे दिल में हो। चाहे तुम कहीं भी जाओ, मेरा प्यार हमेशा तुम्हारे साथ है।"

चुक्कू ने अपने जीवन के नए अध्याय की शुरुआत की, और दीपशिखा के अडिग आशीर्वाद और मार्गदर्शन ने उसे किसी भी मुश्किल कठिनाई का सामना करने की ताकत दी। माँ के प्रेम और समर्थन ने दीपशिखा को वह आत्मविश्वास दिया, जिसकी उसे आवश्यकता थी। माँ और बच्चे का यह रिश्ता कभी भी खत्म नहीं होता। चाहे बच्चा; बच्चा हो या वयस्क, माँ का प्रेम सदैव उसके साथ रहता है। दीपशिखा और चुक्कू का संबंध समय के साथ बदलता गया, लेकिन उनका प्रेम कभी कमजोर नहीं पड़ा। चुक्कू ने समझा कि उसकी सफलता के पीछे उसकी माँ का असीमित समर्थन और आशीर्वाद था।

माँ का प्रेम न केवल समय, बल्कि जीवन के हर पहलू को पार करता है। यह प्रेम कभी समाप्त नहीं होता, और यह हर एक चरण में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। यह एक जीवन भर का बंधन है, जो हमेशा अनमोल और अडिग रहता है।

जाने क्यों?

अभिषेक वर्मा
अकादमिक सहयोगी

रोज़ आते-जाते बहुत कुछ अपना लगता है,
दिन-रात, दोपहर, शाम –
कुछ तो बेगाना लगता है, मंजिल कहीं भी हो,
नज़ारा उन लोगों का पुराना लगता है,
देर हो, सवेर हो – दूर हो या हो पास,
सफ़र शर्माया लगता है।

पहिये कितने भी हों – दो, तीन, चार या अधिक,
वाहन परिवहन पर परवाना लगता है,
गलियाँ सयानी, बाज़ार सयाना लगता है,
क्योंकि चालक बिना बेल्ट या टोपे के
दीवाना लगता है।

रोज़ आते-जाते बहुत कुछ सपना लगता है,
शहर जो यह सुहाना है - कुछ तो फसाना लगता है,
कानून हो या नियम, सड़क पर सब
अफसाना लगता है, बत्ती कहीं हो या ना हो,
अक्सर रफ़्तार फरमाया लगता है
आज का चालक सड़क पर आवारा लगता है।

भारत की विदेश नीति

शुभम सिवाच
अनुसंधान सहयोगी

भारत में कूटनीति का महत्त्व पुरातन समय से है। महान दार्शनिक चाणक्य ने कूटनीति से भारतीय इतिहास में अपनी अलग पहचान बनाई। उस दौर में विश्व भर में विदेश नीति एवं कूटनीति के विषय पर शायद ही किसी विद्वान ने ध्यान दिया होगा। चाणक्य के मार्गदर्शन से भारत में उत्पन्न हुई कूटनीति की परंपरा ने अनुगामी शासकों को एक सफल राज्य चलाने में भरपूर सहयोग किया। मध्यकाल में मुगल शासन के दौरान भारत ने एक स्वर्णिम युग देखा जिसमें भारत वैश्विक व्यवसाय एवं सफल विदेश नीति के चलते विश्व का सबसे अमीर क्षेत्र बना। भारतीय विदेश नीति उस समय से ही सौहार्द और शांतिपूर्ण रिश्तों के पक्ष में थी।

अंग्रेज़ों के भारत पर शासन के दौरान हमारी विदेश नीति में कुछ बदलाव हुए। अंग्रेज़ी हुकूमत ने भारत को वैश्विक युद्धों में लगातार घसीटा, जो हमारी पारंपरिक विदेश नीति के खिलाफ था। परंतु महात्मा गाँधी ने अंग्रेज़ों की इसी विदेश नीति को उनके लिए घातक बनाया जब उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेज़ों के भारतीय समर्थन को भारतीय स्वतंत्रता की शर्त के साथ रखा। भले ही इस शर्त का भारतीय स्वतंत्रता पर प्रभाव को लेकर इतिहासकारों का मत अलग हो, पर इस शर्त का सीधा संदेश एक ही है – भारतीय विदेश नीति बाहरी युद्ध में दखल का समर्थन नहीं करती।

अपने अस्तित्व की लड़ाई में महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश शासकों को यह संदेश दिया कि भारतीय सैनिकों का विदेशी भूमि पर लड़ना हमारी विदेश नीति के खिलाफ है। और उसका मूल्य सिर्फ भारत की स्वतंत्रता है।

भारतीय विदेश नीति का असली खाका आज़ादी के बाद बनना शुरू हुआ। शीत युद्ध के दौर में जब गुटबाज़ी में विश्व के विभिन्न देश पिस रहे थे तब भारत ने एक तीसरा मोर्चा बनाकर विश्व को एक नयी राह दिखाई एवं वैश्विक कूटनीति में एक मजबूत शक्ति बनकर उभरा। भारत ने कोरिया युद्ध में भी एक आवश्यक भागीदारी दिखाई एवं युद्ध में सीज़फ़ायर का एक ऐसा खाका तैयार किया कि आज 70 साल के बाद भी उत्तर एवं दक्षिण कोरिया में शांति बनी हुई है। अपने 75 साल के समृद्ध इतिहास में भारत ने ना जाने ऐसे कितने प्रस्ताव प्रस्तुत किए जिनसे वैश्विक शांति एवं सौहार्द को बल मिला।

भारत की आज की विदेश नीति भी इन्हीं पदचिह्नों पर चलते हुए भारत को आज के बदलते वैश्विक माहौल में एक मजबूत शक्ति बनाने की ओर अग्रसर है। भारत विश्व के उन चुनिंदा देशों में से एक है जिसने अपने संपूर्ण इतिहास में कभी किसी और देश पर अतिक्रमण नहीं किया है। इसी नीति के साथ भारत की विदेश नीति वैश्विक शांति एवं सौहार्द के लिए उच्चतम मंचों पर अतिक्रमण के खिलाफ बोलती है। इसी शांतिपूर्ण सिद्धांत के चलते भारत ने 2014 में 'पड़ोसी पहले' की विदेश नीति अपनाई जिसमें पड़ोसी देशों को प्राथमिकता दी जा रही है।

इसका खूबसूरत उदाहण 'मिशन मैत्री' था जिसमें नेपाल के भीषण भूकंप के बाद भारत ने सबसे पहले राहतकर्मियों की टुकड़ी भेजी थी। मालदीव का पानी संकट हो या श्री लंका का आर्थिक संकट, भारत अपने पड़ोसियों की मदद करने में सबसे आगे रहा।

विश्व में शांति बहाली के लिए भी भारत ने कई मजबूत कदम उठाए हैं। भारत आज संयुक्त राष्ट्र की शांति बहाली सेना का सबसे बड़ा सहयोगी है। हमारा योगदान सैनिकों की संख्या में सबसे अधिक है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि भारत दूसरे देशों में सैन्य दखल के पक्ष में है। अंतरराष्ट्रीय दबाव के बावजूद भारत ने युक्रेन के युद्ध में अपने सैनिक एवं शस्त्र भेजने से मना कर दिया था। म्यांमार में सैन्य हस्तक्षेप

से भी भारत ने मना कर दिया था। भारत के ऐसे निर्णय यही दिखाते हैं कि भारत की पारंपरिक विदेश नीति आज भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी पहले थी। वैश्विक कौतुहल के दौर में भारत फिर से विश्व के देशों को गुटनिरपेक्षता की वह राह दिखाई जो शीत युद्ध के बाद थोड़ी ओझल होने लगी थी (रूस-युक्रेन एवं गाज़ा-इजराइल के संदर्भ में)।

भारत आज एक ऊभरती अर्थव्यवस्था के साथ एक ऊभरती वैश्विक शक्ति भी है। यह उपलब्धि इसलिए भी खास बन जाती है क्योंकि यह शक्ति सेना के दम पर नहीं, बल्कि शांति एवं विनम्रता के दम पर बनी है। विश्व के नागरिक भारत का स्मरण बंदूक एवं तोपों से नहीं, बल्कि योग, आयुर्वेद, बॉलीवुड एवं भारत की 'संस्कृति' से करते हैं। इसी कारण आज भारत को संयुक्त राष्ट्र की स्थायी सदस्यता के लिए संपूर्ण समर्थन मिल रहा है। भारत लगातार वैश्विक पटल पर अपने विचारों को बुलंद होकर रख भी रहा है और विश्व इन सुझावों को सुन भी रहा है।

परंतु आज भारतीय विदेश नीति के आगे कुछ कठिनाई भी है। 'पड़ोसी पहले' की नीति अब अशांत पड़ोसी देशों से खतरे में है। अफगानिस्तान में तालिबान, बांग्लादेश में विद्रोह, नेपाल में राजनैतिक अस्थिरता, बर्मा (म्यांमार) में सैन्य शासन, श्री लंका में आर्थिक संकट, मालदीव में भारत विरोधी सरकार एवं चीन का अतिक्रमण भारतीय राजदूतों के लिए सरदर्द बना हुआ है। लगातार वैश्विक युद्धों के चलते भारत पर गुटबाज़ी का दोनों छोरों (अमेरिका गुट एवं इरान-रूस-चीन गुट) से दबाव बढ़ रहा है।

इन नए समीकरणों से भारत पर जहाँ दबाव बढ़ रहा है, वहीं यह भारत के लिए अवसर भी है जहाँ वह विश्व को अपनी पारंपरिक विदेश नीति के आज के समय में तर्क संगत होने का शानदार नमूना पेश करे। आज़ादी के बाद भारत ने गुटनरिपेक्षता से अफ्रिका, एशियाई एवं विकासशील देशों को जो नई राह दिखाई, वह आज फिर दिखाने का अवसर है। भारत ने हमेशा शांतिपूर्ण रिश्तों पर बल दिया है एवं आगे भी पड़ोसी देशों के साथ शांति वार्ता करके इस अशांत (दक्षिण एशिया) इलाके को शांति एवं समृद्धि के पथ पर ले जा सकता है। भारतीय विदेश नीति की असली शक्ति उसके शांति एवं सौहार्दपूर्ण दृष्टिकोण है। आज की विदेश नीति भी उसी पथ पर अग्रसर होते देखकर हर नागरिक गौरवान्वित है।

अहम्

प्रशान्त पुरोहित
अकादमिक सहायक

मिट्टी से निकाला है, मिट्टी में मिल जाएगा।
किस बात का अहम् लेकर चला है,
चिता पर सब जल जाएगा।
यहाँ कौन है तेरा, तू है किसका,
ये बात कब तू जताएगा।
पल भर का खेल है बंधु, सब यहीं रह जाएगा।

जो कल तक तेरा था,
अब किसी और का साथ निभाएगा।
जो तेरी एक आवाज पर भागा चला आता था,
अब तेरी चीख-पुकार पर भी शकल नहीं दिखाएगा।
जिया जब तक था, सबका राज दुलारा,
मृत्यु के बाद अस्थियां भी कोई घर न लाएगा।
तेरी तस्वीर, तेरे कपड़े, तेरी घड़ी, तेरी छड़ी,
सब बक्से में बंद होकर,
किसी कोने में रख दिया जाएगा।
तेरी बातें, तेरी यादें,
नई किलकारियों में सब खो जाएगी।
तू सोचता था, सब आँसू बहाएंगे,
अब तू सिर्फ बरसी पर याद आएगा।

ये नियति है, इसे न राम न श्याम बदल पाए।
तुझे लगता है, तू बदलकर जाएगा।
पल भर की जिंदगी है, इसे हर पल जी,
कल किसी को कोई याद न आएगा।

मिट्टी से निकाला है, मिट्टी में मिल जाएगा।
किस बात का अहम् लेकर चला है,
चिता पर सब जल जाएगा।

नेम प्लेट

श्रीमती सविता शर्मा
पत्नी, डॉ. मुकेश शर्मा

प्रमोद जी अपने कैंसर के तीसरे स्टेज को मात देकर कुछ दिनों पहले ही घर लौटे थे। उनके इस कठिन समय में उनकी जीवन संगीनी प्रतिमा जी ने उनका पूरी तरह साथ दिया।

कुछ प्रतिमा जी के प्रेम और साधना, कुछ अनुभवी डॉक्टरों के सहयोग से प्रमोद जी ने स्वयं को इस मर्ज़ से मुक्त तो कर लिया था लेकिन, इसकी थेरेपी और दवाइयों के असर से उनका शरीर बेहद दुबला और ऊर्जाहीन हो गया था।

प्रमोद जी अपना हर जन्मदिन बहुत ही धूमधाम से मनाते थे। वे एक सकारात्मक सोच वाले बहुत ही ज़िंदादिल इंसान हैं। इस साल उनका पचहत्तरवाँ जन्मदिन था। उन्होंने और प्रतिमा जी ने प्लान किया था कि इस साल की जन्मदिन की पार्टी यादगार बनाई जाए। लेकिन, विधाता के लेख को कौन जान पाया है आज तक। एक दिन बैठे-बैठे प्रमोद जी को पेट में तेज दर्द उठा। डॉक्टरी जाँच और कुछ जरूरी टेस्ट करवाने से धीरे-धीरे पता चला कि प्रमोद जी को लीवर का कैंसर तीसरे स्टेज पर है।

ये सब जानकर एक बार तो प्रमोद जी एकदम सहम से गए। उन्होंने अपनी जीवनचर्या पर विचार किया तो पाया कि कौन जाने कब और कैसे इस रोग ने उन्हें घेर लिया। वे तो हमेशा से ही अपने खान-पान और दिनचर्या पर विशेष ध्यान देते हैं। ना ही उन्हें किसी तरह की गलत आदत है। बोला तो यही जाता है कि धुम्रपान और मदिरापान जैसे व्यसन इस तरह के रोग का कारण बनते हैं। लेकिन, मैं तो ये सब करना तो दूर, इस तरह के व्यसनी लोगों से दोस्ती भी नहीं करता। फिर मेरा इस रोग से ग्रसित होने का क्या कारण है।

कारण जो भी हो, कैंसर के नाम से प्रमोद जी हिल गए लेकिन अपनी पत्नी के सामने अपने आपको ऐसे रखने लगे जैसे उन्हें कोई फर्क ही नहीं पड़ा हो। प्रमोद जी का बेटा विजय भी उन्हीं के शहर में अपने परिवार के साथ अलग फ्लैट में रहता है और प्रमोद जी अपनी पत्नी के साथ एक विला में। पिता की बिमारी की खबर सुनकर विजय अपने दोनों बच्चे वियान और विहान के साथ कभी-कभी मिलने आता था, लेकिन उसने और उसकी पत्नी ने प्रमोद जी के इलाज में कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई।

बेटे-बहू का ऐसे समय भी औपचारिक व्यवहार देखकर प्रतिमा जी को कोई ज्यादा आघात नहीं हुआ क्योंकि वो तो हमेशा से ही जानती थीं कि उनके बेटे को माँ-बाप से ज्यादा उनकी प्रोपर्टी और बैंक बैलेंस में रुचि है। बाप का इलाज ठीक से हो ना हो, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था।

प्रतिमा जी ने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के सहयोग से प्रमोद जी का इलाज अच्छे से अच्छे डॉक्टर से करवाया। यहाँ प्रमोद जी की सेवानिवृत्ति का पैसा उनका सहारा बना। प्रमोद जी ने बच्चों के मोह में आकर अपने पैसे को उन पर ना लुटाकर अपनी पत्नी के कहे अनुसार इन्वेस्ट किया। प्रतिमा जी का कहना था कि जब तक जीवन है, पता नहीं कब और कैसे हमें अपनी पूँजी की जरूरत पड़े। जब तक ज़िंदगी है, हमें किसी के आगे मोहताज होने की जरूरत नहीं है। हमें अपना जीवन मान-सम्मान और इज्जत से जीना है। अभी से बेटे को सब कुछ दे दिया तो क्या पता, यह हमारे साथ कैसा व्यवहार करे!!

प्रमोद जी के कठिन समय में प्रमोद जी के सामने अपने बेटे की छवि और साफ हो गई। प्रतिमा जी की हिम्मत देखकर प्रमोद जी ने भी अपने अंदर इच्छाशक्ति को बढ़ाया। दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे के सहयोग से दुःख के बादलों को पीछे धकेल कर आज अपने बंगले के गार्डन में धूप सेंक रहे थे कि विजय की गाड़ी के हार्न की आवाज़ आई। विजय अपने बच्चों और पत्नी विमी के साथ प्रमोद जी के

पचहत्तरवें जन्मदिन की पार्टी के लिए आया था।

प्रतिमा जी ने प्रमोद जी के लिए शाम को एक छोटी-सी पार्टी रखी है। वैसे उन्होंने अब एक विशाल समारोह की जगह एक छोटी-सी पार्टी अपने बंगलो के लॉन में ही रखी है। विजय और बहू ने आकर पापा-मम्मी के पैर छुए और उन्हें तोहफे के रूप में एक प्यारा-सा कुर्ता भेंट दिया।

वियान और विहान ने अपने मम्मी-पापा को दादू को तोहफा देते हुए देखकर कहा, "अरे दादू, एक तोहफा हमारे पास भी है आपको देने के लिए, जो पापा-मम्मी ने तब बनवाया था जब आप ट्रीटमेंट के लिए अस्पताल में एडमिट थे। यह लीजिए।" और दोनों ने एक नेम प्लेट दादू के हाथ में थमा दी जिस पर विमी, विजय, वियान, विहान लिखा था। "देखो दादू, मम्मी-पापा ने आपके इस विला के लिए कितनी सुंदर नेम प्लेट बनवाई है। चार 'वी' - विमी, विजय, वियान, विहान। एक दिन मम्मी-पापा बातें कर रहे थे, आप तो अस्पताल से वापस आएँगे नहीं! फिर दादी का क्या है, वो तो कहीं भी रह लेंगी। और आपका ये सुंदर-सा विला हमारा हो जाएगा।" वियान और विहान ने अपनी मासूमियत में अपने दादू को पिता की घटिया सोच को उजागर करके रख दिया!

प्रमोद जी ने अपने पोतों के हाथ से उस नेम प्लेट को सहर्ष स्वीकार करते हुए अपने बेटे-बहू के झुके हुए सिर को अपने हाथ से ऊँचा किया और सिर्फ इतना ही बोले, "ज़रा भी शर्म बची हो तो इसी समय दफ़ा हो जाओ मेरी नज़रों के सामने से! और हाँ, बच्चों को पार्टी के लिए यहीं पर छोड़कर जाना!"

हृदय की कोई भाष नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है।

- महात्मा गांधी

मेहनत अज़ीज़तरीन ज़िंदगी बेहतरीन

अभिषेक कुमार मिश्र
अभिलेखाधिकारी

और फिर, मुझे मेरी मेहनत अज़ीज़तरीन हो चली,
क्या कहूँ ये ज़िंदगी फिर कितनी बेहतरीन हो चली।

किसी मित्र ने मुझसे पूछा, कि बताओ फिर क्या-क्या हुआ,
मैंने हँसकर कहा, कि फिर मंज़िलों को जाने वाले सभी रास्ते अजहर हुए।
कुछ दोस्त और अच्छे, तो कुछ थोड़ा कमतर हुए।
देखो कुछ भी फिर अदीम ना रहा,
मुश्किल तो रहा, 'असीम' ना रहा।

कैसे बताऊँ, कि फिर ये दुनिया कितनी हसीन हो चली,
कि जबसे, मुझे मेरी मेहनत अज़ीज़तरीन हो चली।

एक दूसरे मित्र ने पूछ लिया,
कि बताओ भला वो क्या था, जो इससे बदल-सा गया,
क्यों भला ये दिल तुम्हारा, कुछ खिल-सा गया।

मैंने फिर हँसकर कहा, कि मैं फिर पहले जैसा ना रहा,
अब तो मलाल कुछ अलग है,
या यूँ कहूँ कि ये साल कुछ अलग है।

मुझे पढ़ने, लिखने, और बोलने से ज्यादा सुनने की आदत-सी हो गई अब,
लगता है मेरी नियति का ख़याल कुछ अलग है।

फिर एक मित्र बोल पड़ा,

और जो हम भी मेहनत से दिल लगा लें तो?
मैंने कहा,
देखना फिर इस साल जब दिसंबर के आखिरी लम्हें आएँगे,
तुमको खुशियों से भर-भर जाएँगे।

फिर मित्र बोला कि बताओ फिर..
कि अब से हमारी उम्र के सारे साल कैसे हों?
मैंने भी कह दिया..
चलो ख़ुद लिखें अपनी कहानियाँ कि कमाल कैसे हो।

मैंने सीखा इस साल,
कि कोई किस हद तक संभल सकता है।
और जो चाह ले, तो अपनी तक़दीर,
आज, और आने वाला कल, सब तो बदल सकता है।

बस मेहनत को गले लगाने की ज़रूरत है,
थोड़ा और मुस्कुराने की ज़रूरत है।
बस मेहनत को गले लगाने की ज़रूरत है,
सकारात्मकता को दिल में बसाने की ज़रूरत है।
थोड़ा खुल कर मुस्कुराने की ज़रूरत है,
अपने आस-पास सब खुशनुमा बनाने की ज़रूरत है।

किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त हैं

अक्षिता वैंश
अकादमिक सहयोगी

किताबें कुछ कहना चाहती हैं,
हमारे साथ रहना चाहती हैं।
किताबें करती हैं बातें,

आज की, कल की, प्यार की, मार की।
किताबों में जीवन के राज़ हैं,
किताबों में जीवन के नाज़ हैं।

जब हम किताब पढ़ रहे होते हैं तब हम दुनिया के अलग-अलग दिमागों के लोगों से बात कर रहे होते हैं। किताबें ऐसी बातें बताती है कि जिससे लोगों का जीवन जीने का नजरिया बदल जाता है और हमें अलग नजरिए से देखना सिखा देती हैं।

आजकल हम देखते हैं कि लोग अकेलेपन के शिकार होते जा रहे हैं, कारण यह है कि बाहर की दुनिया को देखकर अपने आपको ऐसा बनाना चाहते हैं। लेकिन किताब ऐसी चीज़ हैं जो अपने स्वयं में झाँकना सिखाती हैं। ऐसा भी नहीं है कि हम केवल किताबों में किसी का जीवन पढ़कर ही सीख सकते हैं। किसी की जीवनी पढ़ने से हमें हमारे जीवन की कई परिस्थितियों में निर्णय लेने में मदद मिलती है। कई बार अनेक असमंजसों से घिरकर बाहर कहीं से भी समाधान नहीं मिलता वह हमें किताबों से मिल जाता है।

किताबें चाहे कल्पनाओं पर आधारित हों या जीवन पर आधारित हों, दोनों का अपना-अपना महत्त्व है। नवल कथा भले ही हम बोलें कि काल्पनिक है, पर वह समाज की कोई-न-कोई घटना या तो फिर हमारे जैसे सामान्य लोगों के जीवन से ही प्रेरणा लेकर लिखी गई होती हैं। किसी भी किताब में लेखांकन उस समय के समाज, सामाजिक व्यवस्था का प्रतिबिंब होता है और काल्पनिक वर्णन होता है। हम अपने कमरे में एक ही बैठक में जमाने भर का सफर उस किताब के जरिए कर लेते हैं।

जब एक लेखक कोई किताब लिखता है, तब वह हर एक पात्र को जीता है, अपने आप में हर एक व्यक्ति को पाता है। इसी प्रकार जब हम कोई किताब पढ़ते हैं, तब हर उस पात्र की मनोदशा का अनुभव कर सकते हैं। यही चीज़ हमें सिखाती है कि हम सामाजिक जीवन में या व्यक्तिगत रूप से किसी भी व्यक्ति या व्यक्तियों से मिलते हैं तो उनके मनोभाव, संवेदना आदि समझने का प्रयास करते हैं।

हमने देखा है कि महात्मा गाँधी की अपनी जीवनी में उन्होंने जताया है कि कैसे लेखक टॉल्सटॉय की किताब ने उनका जीवन बदल दिया था। हम किसी भी देश के लेखक को पढ़ते हैं तब हमें उस देश के समाज, वहाँ के रिवाज़, रीतियों, परंपराओं का पता चलता है। सोचिए कि अगर किताबें नहीं होती तो हमारे पास कुछ हल, उपाय ना होते, हमारे कोई इतिहास ना होते, हमारा संविधान भी ना होता, हमारे पूर्वजों के अनुभव भी हमारे पास ना होते।

किताबें पढ़ने वालों के लिए तो आशीर्वाद के समान हैं, पर जब कोई लेखक अपने जीवन के आधार पर या काल्पनिक आधार पर किताब लिखता है, तब वह इसीलिए लिख पाता है क्योंकि उसने अपने तथा दूसरों के जीवन को बड़ी गहराई से समझा, जाना होता है। जब सालों बाद अपनी जीवनी लिखता है तब वह वापस अपने अतीत में जाकर उसे जीता है, अपने बीते हुए अच्छे-बुरे कल को फिर से महसूस करता है, और लिखकर अपने आपको संतुष्ट पाता है। ऐसे लेखक प्रयोगात्मक, अनुसंधानात्मक, उपचारात्मक लेखन के जरिए समाज की सेवा अप्रत्यक्ष रूप से करते हैं। कुछ लेखक केवल बालकों को लक्ष्य बनाकर लिखते हैं,

रूपकों के जरिए कहानियाँ लिखकर बच्चों में चरित्र निर्माण का प्रयास करते हैं। ऐसी किताबें मानव समाज की एक ऐसी दोस्त के रूप में होती है जो मनुष्यों को अपना भविष्य दिखाने का काम करती हैं। अब ऐसी प्रतिभावान दोस्त भला किसको नहीं चाहिए!!

कुछ किताबें हमें धार्मिक ज्ञान से अवगत कराती हैं। हम इन्हें धर्म ग्रंथ कहते हैं। हिंदू धर्म के धार्मिक ग्रंथ भगवद् गीता के बारे में माना जाता है कि विश्व की सभी परिस्थितियों का समाधान, दुविधाओं के उपाय इस ग्रंथ से मिल जाते हैं। हर धर्म का अपना एक धर्म ग्रंथ होता है जो उसके अनुयायियों का मार्गदर्शन करता है। इतना सारा बहुविध ज्ञान हम किसी एक इंसान से तो नहीं प्राप्त कर सकते हैं, पर हाँ, हम अनेक किताबों को पढ़कर कई उपलब्धियाँ हासिल कर सकते हैं। इस तरह, किताबें ही मनुष्यों की सबसे अच्छी दोस्त बन जाती हैं। क्योंकि किसी इंसानी दोस्त की भी अपनी कुछ मर्यादाएँ होती हैं। इंसानी दोस्त जीवन में हर समय, हर पल हमारे साथ नहीं रह सकता, पर किताब के बारे में ऐसा नहीं कह सकते। वह हर समय, हर पल हमारे साथ रहती है। एक इंसान अपने पूरे जीवन में प्रत्यक्ष रूप से जाकर दुनिया के कोने-कोने को नहीं जान सकता, इतना एक किताब बहुत कम व्यय पर हमें बता सकती है। एक किताब हमें, विजय, पराजय, प्रेम, युद्ध, अतिवृष्टि, अनावृष्टि हर स्थिति को अच्छे से समझाकर ज्ञान दे सकती है। सोचिए, यदि किताब ना होती तो शिक्षा भी कैसे संभव होती? क्योंकि शिक्षा एकमात्र ऐसा शस्त्र-हथियार है जिससे हम पूरे विश्व को जीत सकते हैं। और यह शिक्षा हमें किताबों के जरिए ही मिलती है। अगर, किताब ना होती तो शिक्षा का तथा आधुनिकता का विकास कैसे संभव हो पाता?

आज हम सब जानते हैं कि हमें प्रगति की इतनी ऊँचाइयों तक किताबों ने ही पहुँचाया है, फिर भी हम यह अनुभव कर पा रहे हैं कि इस लायक बनाने के बाद भी आज हम किताबों के विकल्प में जी रहे हैं, आजकल हम और हमारी नई पीढ़ियाँ किताबों को भूलते जा रहे हैं। इसीलिए तो शुरू में ही बताया कि ये किताबें हमें कुछ कहना चाहती हैं, हमारे साथ रहना चाहती हैं।

अर्जी अभी बाकी है

प्रगति काछी
शैक्षणिक सहयोगी

अर्जी अभी बाकी है
कि, मेरी रूह को किराए का लिबास मिला है,
और मोहलत भी बस चंद दिनों की बाकी है।
घमंड नहीं है मुझमें बिलकुल भी मेरे कुछ होने का,
बस अपने ईश्वर से मिलने की अर्जी अभी बाकी है।

कि, मेरी रूह को अब ये किराया भरना होगा,
वापिस जाने के पहले किसी भी तरह
कर्ज चुकाना होगा।
इस धरती का कुछ लेन देन अभी बाकी है,
कि, अभी मेरे प्रभु से मिलने की
अर्जी अभी बाकी है।

कि, होश संभाला था जब यहाँ,
इसी लिबास में मुझे पनाह दी थी।
दिन बीतते चले गए, अरसा गुजर गया,
रूह में छुपे अभी राज खुलने बाकी है,
कि, मेरे ईश्वर से मिलने की अर्जी अभी बाकी है।

कि, रूह से रूह तक के सफ़र में,
दीवान-ए-ख़ास और दीवान-ए-आम भी
देख लिए हैं।
मुकम्मल नहीं हुई, वो बात जो बाकी है।
कि, मेरे ईष्ट से मिलने की अर्जी अभी बाकी है।

महाकुंभ 2025

शिल्पा नागरे
कार्यपालक

हिंदू धार्मिक परंपराओं में कुंभ मेला महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कुंभ मेला हमारे देश के चार पावन शहरों में आयोजित किया जाता है। ये चार शहर हैं – प्रयागराज, उज्जैन, हरिद्वार और नासिक। 2025 में प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन किया जा रहा है।

कुंभ और महाकुंभ में अंतर है। कुंभ मेले तीन प्रकार के होते हैं, पहले वो जो हर छह वर्ष में आयोजित होते हैं अर्द्धकुंभ कहलाते हैं, दूसरे जो हर बारह वर्ष में आयोजित होते हैं पूर्ण कुंभ कहलाते हैं और तीसरा यानी महाकुंभ हर 144 वर्ष में आयोजित होता है। जो इस वर्ष 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक आयोजित हो रहा है। कुंभ मेला आखिर लगता क्यों है? हिंदू धार्मिक पुस्तकों और पुराणों के अनुसार यह माना जाता है कि कुंभ मेले में स्नान करने से सारे पाप खत्म हो जाते हैं और व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है। कुंभ अर्थात घड़ा। अर्थात अमरता के अमृत का पवित्र घड़ा।

कुंभ मेले की शुरुआत के पीछे पौराणिक कहानियाँ हैं। ऐसा माना जाता है कि जब देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया तब समुद्र मंथन से अमृत की प्राप्ति हुई। देवताओं ने राक्षसों को यह कहा कि अमृत पीने से वे और ताकतवर हो जाएंगे और राक्षसों को इस प्रकार बात मनाकर समुद्र मंथन किया। समुद्र मंथन में 14 रत्न, विष और अंत में अमृत कलश निकला। अब कलश के निकलते ही राक्षस और देवता उसे पाने हेतु झगड़ने लगे। एक कथा के अनुसार इंद्र पुत्र जयंत ने कलश उठाया और भाग गया। राक्षसों ने उनका पीछा किया। लगभग 12 दिवस तक राक्षस और देवताओं के बीच लड़ाई चली। जयंत जब कलश लेकर भाग रहे थे तब अमृत की चार बूंदें पृथ्वी के चार स्थानों पर गिर गई। वे स्थान प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन हैं। ये चारों स्थान आदिदेव महादेव के अलग अलग स्वरूपों के लिए प्रसिद्ध हैं।

एक कथा यह भी है कि अमृत कलश को असुरों से बचाने के लिए सुरक्षा की जिम्मेदारी बृहस्पति, सूर्य, चंद्र और शनि को दी गई थी। चारों देवता असुरों से अमृत कलश को बचाकर भागे और असुरों ने 12 दिन और 12 रातों तक उनका पीछा किया। पीछा करने के दौरान देवताओं ने अमृत कलश को हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक और उज्जैन में रखा। कलश रखने की वजह से ये पवित्र स्थल हो गए और हर 12 साल में इन जगहों पर मेले का आयोजन किया जाता है।

खगोलीय घटनाओं के अनुसार –

- जब बृहस्पति ग्रह कुंभ राशि में प्रवेश करता है और सूर्य मकर राशि में होता है, तब कुंभ मेला आयोजित किया जाता है।
- बृहस्पति को अपनी कक्षा में 12 साल का समय लगता है, इसलिए कुंभ मेला हर 12 साल में एक बार आयोजित किया जाता है।
- 12 कुंभ मेलों के बाद (12x12=144 साल) "महा कुंभ" या "विशेष महाकुंभ" आता है।

जब सूर्य मेष राशि और बृहस्पति कुंभ राशि में आते हैं तो कुंभ मेला हरिद्वार में आयोजित किया जाता है। जब बृहस्पति वृषभ राशि में और सूर्य मकर राशि में हो तो प्रयाग में कुंभ मेला का आयोजन किया जाता है। उज्जैन में कुंभ मेला का आयोजन तब होता है जब सूर्य और बृहस्पति दोनों वृश्चिक राशि में होते हैं। और नासिक में कुंभ का आयोजन बृहस्पति और सूर्य के सिंह राशि में स्थित होने पर किया जाता है। जहाँ हरिद्वार में गंगा किनारे कुंभ मेला का आयोजन किया जाता है वहीं प्रयाग में गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदी के त्रिवेणी संगम तट पर कुंभ का आयोजन किया जाता है। नासिक में कुंभ मेला गोदावरी नदी के किनारे आयोजित किया जाता है वहीं उज्जैन में कुंभ का आयोजन करने का स्थान क्षिप्रा नदी का तट है।

IIMA

विद्याविनियोगाद्विकास:

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

वस्त्रापुर, अहमदाबाद - 380 015

दूरभाष: 91-79-7152 4691 • फैक्स : 91-079-26300352, 26308345

ईमेल : agm-hindi@iima.ac.in • वेबसाइट : www.iima.ac.in